भृगु जन्म पत्रिका

Name - Sample
Date - 10/08/1941
Time - 02:15:00
POB - New delhi (Delhi) India
Longitude - 077:12:00 E
Latitude - 028:36:00 N

Mindsutra Software Technologies
A-16, Ground Floor Uttam Nagar New Delhi - 110059
Phone: 011-49043166, 91 9818193410

© lalkitabnadi.com

श्री गणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ।।

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्रिसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्री–पुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

ज्योतिष सारिणी

मुख्य विवरण

लिंग	पुरूष
जन्म दिनांक	10:08:1941
जन्म समय	02:15:00
जन्म दिन	रविवार
जन्म स्थान	new delhi
राज्य	Delhi
देश	India
अक्षांश	028:36:00N
रेखांश	077:12:00E
स्थानीय समय संस्कार	-000:21:11
स्थानीय समय	001:53:48 hrs
समय क्षेत्र	05:30 E
समय संशोधन	-00:00
सांपातिक काल	023:05:35 hrs
इष्ट काल	51: 03: 50 Ghati

पंचांग विवरण

विक्रम संवत	१९९८
शक संवत	१८६३
संवत्सर	वृष
ऋतु	वर्षा
मास	भाद्र
पक्ष	कृष्ण
वार	
तिथि	तृतीया
नक्षत्र (पद)	पूर्वाभाद (2)
योग	अतिगण्ड
करन	विष्टी

अवकहड़ा चक्र

पाया	रजत
वर्ण	शुद्र
वश्य	जलचर
योनि	शेर (पु0)
गण	मनुष्य
नाड़ी	आदि
रज्जु	नाभि
तत्व	आकाश
तत्वाधिपति	बृहस्पति
विहग	मयूर
नाड़ी पद	मध्य
वेध	उत्तरफाल्गु
आद्याक्षर	सा
दशा बैलेंस	बृहस्पति–९.० व .1.0 म.11 द.
वर्तमान दशा	चन्द्र–शनि–केतु
भयात	26: 58: 05 Ghati
भभोग	63: 13: 54 Ghati
सूर्य राशि (वैदिक)	कर्क
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	सिहं
अयनांश	N.C.Lahiri
अयनांश मान	023:02:29
देकानेट	2
फेस	IV
सूर्योदय	05:50:28AM
सूर्यास्त	07:02:42PM
जन्मदिन का ग्रह	सूर्य
जन्मसमय का ग्रह	शनि

♊ लग्न: मिथुन	♒ राशि: कुम्भ	नक्षत्र – पद: पूर्वाभाद – 2
☿ लग्नाधिपति: बुध	♄ राशिपति: शनि	♃ नक्षत्रपति: बृहस्पति

नक्षत्र विवरण

नक्षत्र	पूर्वाभाद		चरण	2
अधिपति	बृहस्पति ♃		भाव में	द्वादश अशुभ
देवता	अजैकपाद		दिशा	उत्तर
तत्व	आकाश		गोत्र	पुलस्थ
प्रभाव	मृत्युप्रद		पशु	शेर (पुरूष)
पौधे	आम		पक्षी	बगुला
कार्य पद्धति	धैर्ययुक्त		गुण	सत्व

लग्न और राशि विवरण

लग्न विवरण	
लग्न	मिथुन ♊
अधिपति	बुध ☿
तत्व	वायु
स्वभाव	उभय
भाव में	द्वितीय सम
लिंग	पुरुष
के साथ भावेश	सूर्य

राशि विवरण	
राशि	कुम्भ ♒
अधिपति	शनि ♄
तत्व	वायु
स्वभाव	स्थिर
भाव में	द्वादश अशुभ
लिंग	पुरुष
के साथ भावेश	बृहस्पति

राशि देवता	वरूण देव
मंत्र	Om Jala Bimbhaya Vidmahe Nila Purushaya Dhimahi Tanno Varunah Prachodayat
	ॐ जल बिम्भाय विद्महे नील पुरुषाय धीमहि तन्नो वरुणः प्रचोदयात्

इन राशि देवता के मंत्रों का जाप प्रत्येक राशि के इष्टदेवों का आशीर्वाद प्राप्त करने, सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाने एवं बाधाओं को दूर करने तथा अच्छे भाग्य को आकर्षित करने के लिए किया जा सकता है।

तत्व	वायु
सामान्यतः आप बौद्धिक, संचारी और सामाजिक हैं। आप खुले विचारों वाले, जिज्ञासु हैं तथा बातचीत एवं बहस में शामिल होना पसंद करते हैं। आप अनुकूलनशील हैं और नए अनुभवों तथा नए लोगों से मिलने का आनंद लेते हैं। आप अक्सर समस्याओं को सुलझाने में श्रेष्ठ होते हैं और दूसरों के प्रति आपका दृष्टिकोण काफी कूटनीतिक हो सकता है।	

स्वभाव	स्थिर
आप सामान्यतः दृढ़निश्चयी, अटल और परिवर्तन के प्रति प्रतिरोधी हैं। आप स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करते हैं और अक्सर अपने जीवन में अचानक होने वाले बदलावों के प्रति प्रतिरोधी होते हैं। आप वफादार, विश्वसनीय हैं और जब आप अपने मन में किसी बात को ठान लेते हैं तो आप काफी जिद्दी हो सकते हैं। आप नवोन्मेषी और स्वतंत्र हैं, आप प्रौद्योगिकी, विज्ञान या सामाजिक सक्रियता से संबंधित करियर में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं।	

घात चक्र

चैत्र अशुभ मास	वृहस्पतिवार अशुभ वार	3 अशुभ प्रहर
धनु अशुभ राशि	कन्या अशुभ लग्न	3, 8, 13 अशुभ तिथि
अरिद्रा अशुभ नक्षत्र	ब्याधात अशुभ योग	किम्सतुघ्न अशुभ करन

शुभ बिन्दु

1 मूलांक	6 भाग्यांक	3, 9 मित्रांक
1, 8 शत्रु अंक	18, 21, 24, 27, 30, 33, 36, 39 शुभ वर्ष	बुधवार, शुक्रवार, शनिवार शुभ दिन
बुध, शुक्र, शनि शुभ ग्रह	बृहस्पति अशुभ ग्रह	वृष, सिहं, तुला, धनु मित्र राशि
कन्या, धनु, कुम्भ, मेष मित्र लग्न	पन्ना शुभ रत्न	पन्नी, संगपन्ना, मरगज शुभ उपरत्न
नीलम भाग्य रत्न	गणेश अनुकूल देवता	कांसा शुभ धातु
हरित शुभ रंग	उत्तर दिशा	सूर्योदय के 2 घंटे बाद शुभ समय
शक्कर, हाथीदांत, कपूर, फल शुभ पदार्थ	मूंग (साबुत) शुभ अन्न	घी शुभ द्रब्य

ग्रह स्थिति (पराशरी)

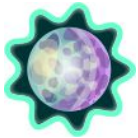

सूर्य	कर्क 23:47:42	अश्लेषा (3) मित्र राशि
चन्द्रमा	कुम्भ 25:44:26	पूर्वाभाद (2) सम राशि
मंगल	मीन 25:32:30	रेवती (3) मित्र राशि
बुध (अ.)	कर्क 14:00:17	पुष्य (4) शत्रु राशि
बृहस्पति	वृष 22:48:58	रोहिणी (4) शत्रु राशि
शुक्र	सिहं 23:31:29	पुर्वफाल्गु (4) स्व नक्षत्र
शनि	वृष 04:37:01	कृतिका (3) मित्र राशि
राहु	कन्या 01:26:07	उत्तरफाल्गु (2) मित्र राशि
केतु	मीन 01:26:07	पूर्वाभाद (4) सम राशि
हर्षल	वृष 07:00:34	कृतिका (4) सम राशि
नेपच्यून	कन्या 02:55:44	उत्तरफाल्गु (2) सम राशि
प्लूटो	कर्क 11:15:04	पुष्य (3) सम राशि
लग्न	मिथुन 07:01:34	अरिद्रा (1) ....
1 0वां कस्प	मीन 22:11:00	पूर्वाभाद (1) ....

ग्रह स्थिति (पराशरी)

	ग्रह	व/अ		राशि	अंश	नक्षत्र	पद	कारक	विशेष
AC	लग्न		♊	मिथुन	07:01:34	अरिद्रा (6)	1		
☉	सूर्य		♋	कर्क	23:47:42	अश्लेषा (9)	3	भ्रात्रि	मित्र राशि
☽	चन्द्रमा		♒	कुम्भ	25:44:26	पूर्वाभाद (25)	2	आत्म	सम राशि
♂	मंगल		♓	मीन	25:32:30	रेवती (27)	3	अमात्य	मित्र राशि
☿	बुध	अ.	♋	कर्क	14:00:17	पुष्य (8)	4	ज्ञाति	शत्रु राशि
♃	बृहस्पति		♉	वृष	22:48:58	रोहिणी (4)	4	अपत्या	शत्रु राशि
♀	शुक्र		♌	सिहं	23:31:29	पुर्वफाल्ग (11)	4	मात्रि	स्व नक्षत्र
♄	शनि		♉	वृष	04:37:01	कृतिका (3)	3	दारा	मित्र राशि
☊	राहु		♍	कन्या	01:26:07	उत्तरफाल्ग (12)	2		मित्र राशि
☋	केतु		♓	मीन	01:26:07	पूर्वाभाद (25)	4		सम राशि
♅	हर्षल		♉	वृष	07:00:34	कृतिका (3)	4		सम राशि
♆	नेपच्यून		♍	कन्या	02:55:44	उत्तरफाल्ग (12)	2		सम राशि
♇	प्लूटो		♋	कर्क	11:15:04	पुष्य (8)	3		सम राशि

लग्न कुण्डली

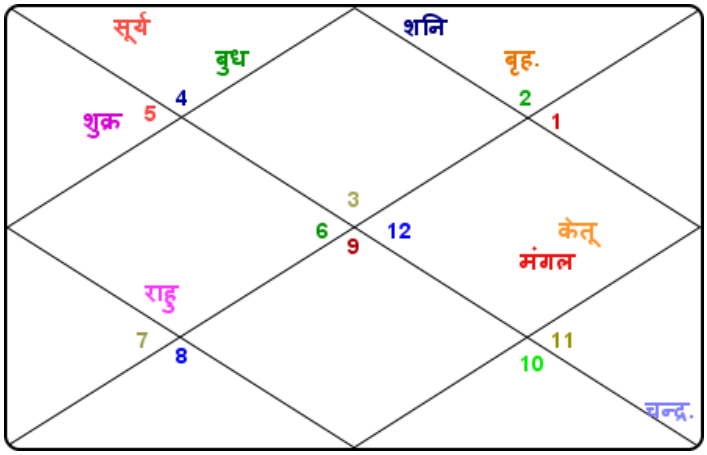

नवांश कुण्डली

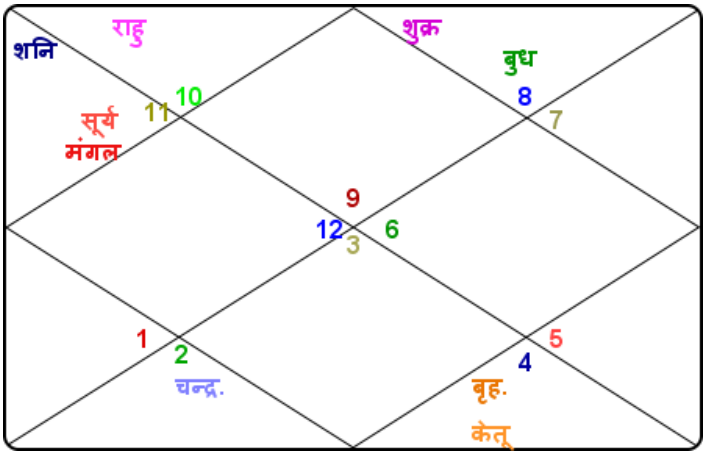

D-16 षोडश वर्ग कुण्डली

जन्म/लग्न कुण्डली (डी 1)

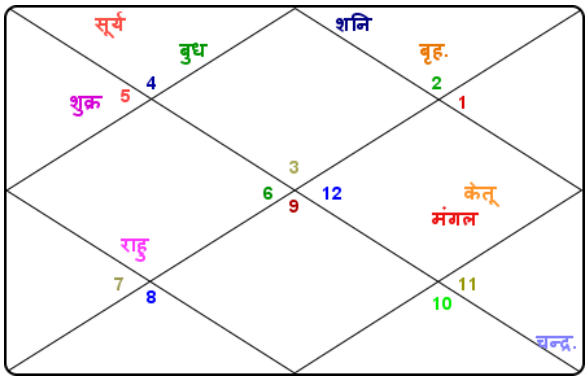

जन्मकुण्डली या लग्न कुण्डली एक व्यक्ति के जीवन की एक विस्तृत तस्वीर है। यह 12 घरों में विभाजित है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, प्रत्येक घर एक अलग राशि और ग्रह द्वारा नियंत्रित होता है। विभिन्न घरों में ग्रहों और राशियों के स्थान और परस्पर क्रिया का मूल्यांकन करके, कुण्डली किसी के व्यक्तित्व, रिश्तों, नौकरी, धन और सामान्य जीवन पथ में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

होरा कुण्डली (डी 2)

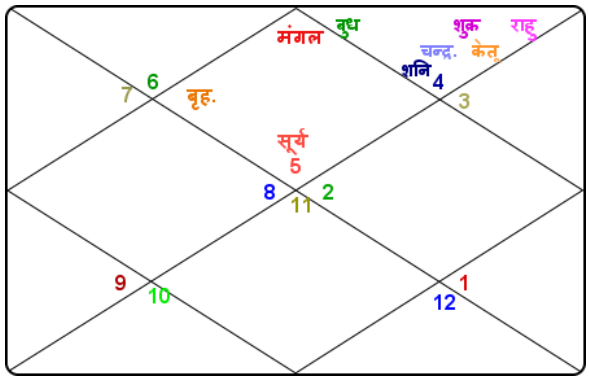

होरा कुण्डली मुख्य जन्म कुण्डली से निर्मित एक विभागीय कुण्डली है जिसका उपयोग समृद्धि और वित्तीय संभावनाओं को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। यह जन्म कुंडली में प्रत्येक राशि को आधे में विभाजित करता है, जिसमें सूर्य पहले अर्द्ध भाग पर शासन करता है और चंद्रमा दूसरे पर शासन करता है। ज्योतिषी ग्रहों की स्थिति और होरा कुण्डली के भीतर उनके संबंध या संयोजन का मूल्यांकन करके जीवन भर धन और वित्तीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति की क्षमता का अनुमान लगा सकते हैं।

द्रेष्काण कुण्डली (डी 3)

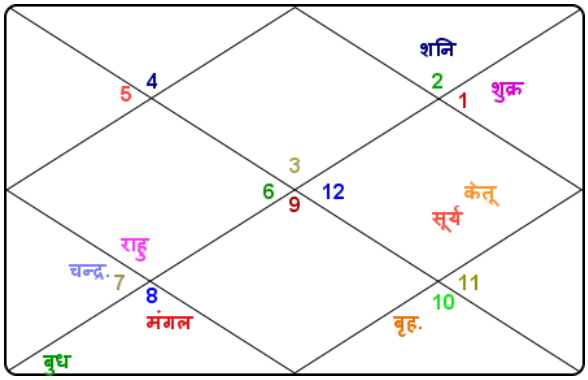

द्रेक्कन कुण्डली, प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 3 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 10 डिग्री माप का होता है। इस कुण्डली का उपयोग किसी के जीवन पर उसके भाई--बहनों, चचेरे भाई--बहनों और अन्य करीबी रिश्तेदारों के प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति की संचार क्षमता, छोटी यात्रा और साहस पर अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

चतुर्थांश कुण्डली (डी 4)

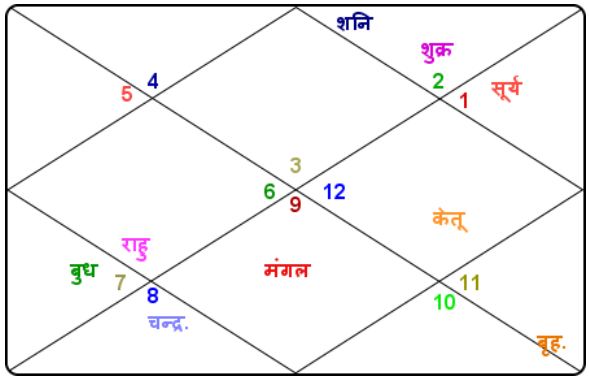

चतुर्थांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 4 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 7.5 डिग्री तक फैला हुआ है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के घर, जमीन और अoटोमोबाइल के संबंध में उसकी खुशी, संपत्ति और भाग्य का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की सुरक्षा, भावनात्मक कल्याण, और उनकी मां या मातृभाषा के साथ संबंध में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों के बारे में बेहतर ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करता है।

सप्तमांश कुण्डली (डी 7)

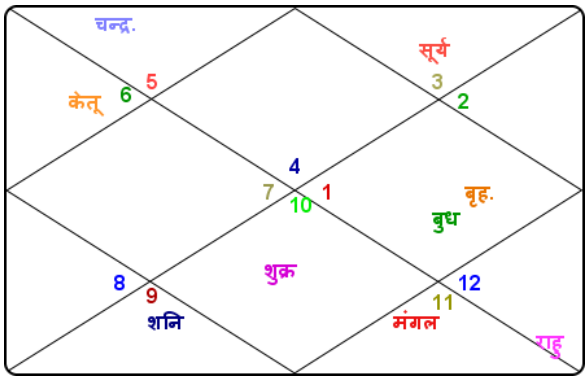

सप्तांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो मुख्य जन्म कुण्डली के प्रत्येक चिन्ह को 7 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप लगभग 4.29 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग सामान्यतः किसी व्यक्ति के जीवन में संतान, प्रजनन क्षमता और प्रसव से संबंधित मुद्दों का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य, कल्याण और बच्चों से उत्पन्न होने वाले सामान्य आनंद के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है, साथ ही साथ किसी व्यक्ति के बच्चों की संख्या के बारे में अंतर्दृष्टि भी प्रदान करता है।

नवांश कुण्डली (डी 9)

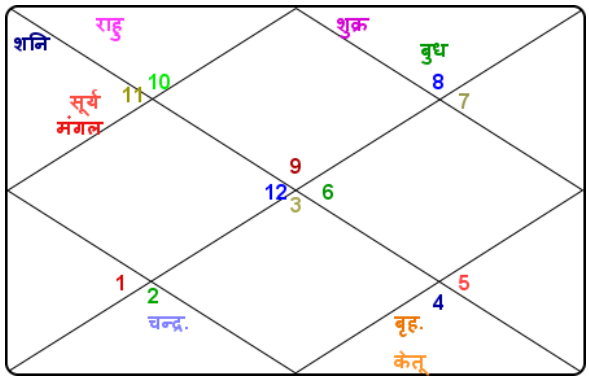

नवांश कुण्डली वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण संभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 9 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.20 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर ग्रहों की ताकत और कमजोरियों, वैवाहिक जीवन की गुणवत्ता और किसी के जीवनसाथी की प्रकृति का निर्धारण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास और आकांक्षाओं की पूर्ति में गहरी अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों के लिए व्यक्ति के जीवन के कई क्षेत्रों को समझने में यह एक महत्वपूर्ण उपकरण बन जाता है।

दशमांश कुण्डली (डी 10)

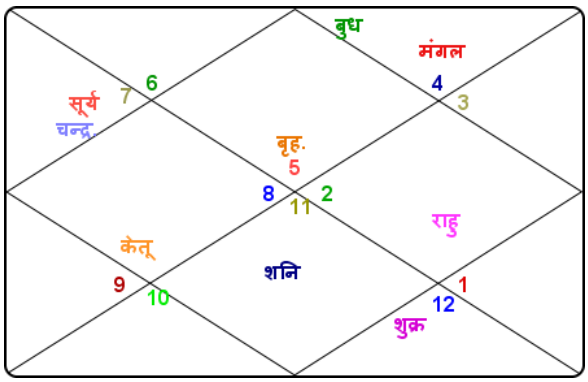

दशमांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 10 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 3 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के करियर, पेशे और समग्र व्यावसायिक उपलब्धि का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को पेशेवर प्रगति और सफलता के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ--साथ सर्वोत्तम कार्य मार्ग, संभावित उन्नति और कार्यस्थल की बाधाओं के बारे में जानकारी देता है।

द्वादशांश कुण्डली (डी 12)

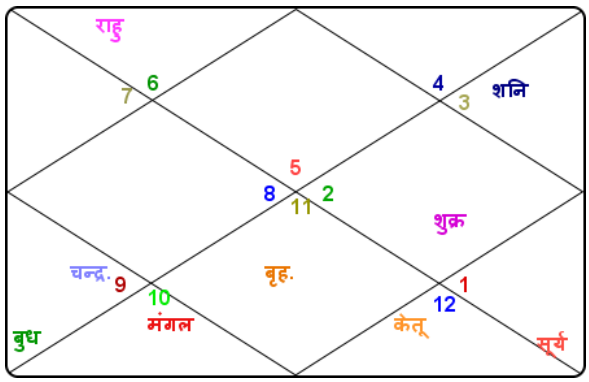

द्वादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 12 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 2.5 डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति के माता--पिता, पूर्वजों और पारिवारिक वंश के मुद्दों की जांच करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के माता--पिता, विरासत और पारिवारिक कर्म के साथ एक व्यक्ति के संबंध को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को एक व्यक्ति के जीवन के इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

षोडशांश कुण्डली (डी 16)

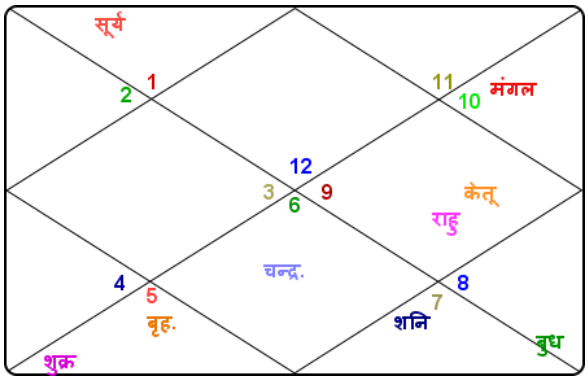

षोडशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 16 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.875 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के अoटोमोबाइल, आराम और विलासिता की विशेषताओं की जांच करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की वाहन, अचल संपत्ति, और अन्य वस्तुओं को हासिल करने और बनाए रखने की क्षमता को प्रकट करता है जो उनके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के अस्तित्व के इन विशिष्ट पहलुओं को समझने में सहायता मिलती है।

विशांश कुण्डली (डी 20)

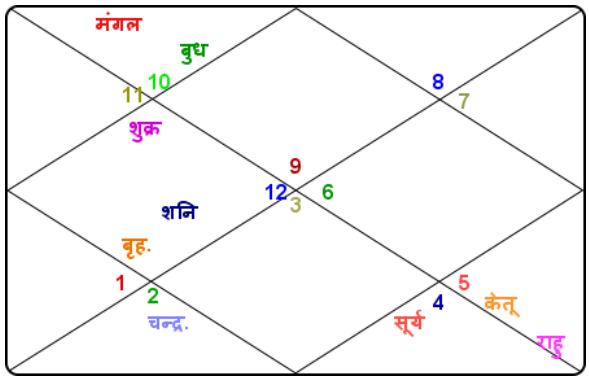

विशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 20 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 1.5 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास, धार्मिक प्राथमिकताओं और अधिक ज्ञान की खोज का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के अंतर्रात्मा, आध्यात्मिक क्षमता और उनके जीवन में धर्म और आध्यात्मिकता के महत्व के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन तत्वों का पता लगाने में सहायता मिलती है।

चतुर्विंशांश कुण्डली (डी 24)

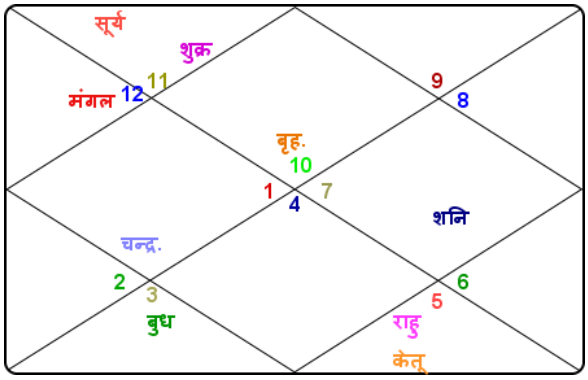

चतुर्विंशांश कुण्डली एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 24 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 1.25 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग आमतौर पर किसी व्यक्ति की शिक्षा, प्रतिभा और सीखने की क्षमता का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह कुछ विषयों, विशेषज्ञता के क्षेत्रों और शैक्षिक उपलब्धि के लिए एक व्यक्ति की योग्यता को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को अकादमिक उन्नति प्राप्त करने और बौद्धिक क्षमता तक पहुंचने के लिए मागदर्शन प्रदान करने की अनुमति देता है।

सप्तविंशांश कुण्डली (डी 27)

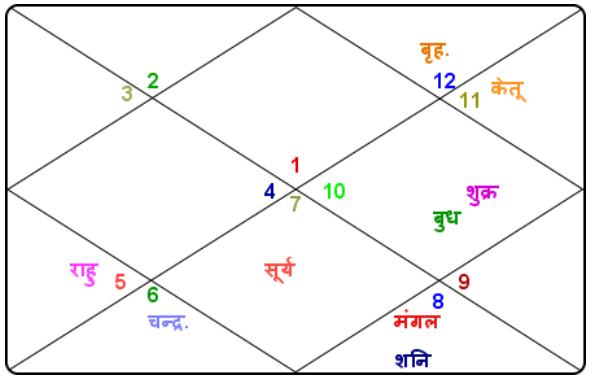

सप्तविंशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 27 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.11 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के नक्षत्रों या चंद्र राशियों की ताकत और उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को व्यक्ति के स्वभाव, आचरण और अंतर्निहित नक्षत्रों से प्रभावित जीवन की घटनाओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करके व्यक्ति के भाग्य और आध्यात्मिक झुकाव के बारे में बेहतर ज्ञान देता है।

त्रिंशांश कुण्डली (डी 30)

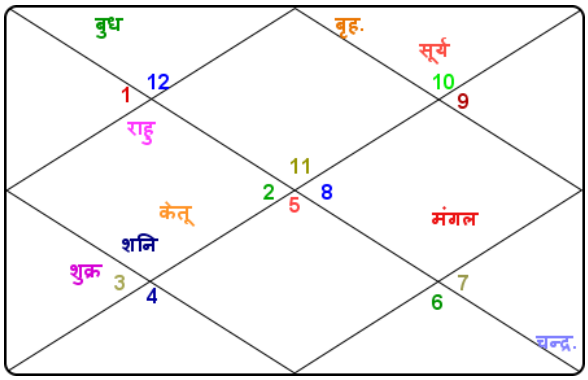

त्रिशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 30 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को एक डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग ज्यादातर उन कई कठिनाइयों और आपदाओं का आकलन करने के लिए किया जाता है जो एक व्यक्ति अपने जीवन के दौरान अनुभव कर सकता है। यह एक व्यक्ति की छिपी ताकत, कमजोरियों और उनकी कठिनाइयों के स्रोत को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को बाधाओं पर काबू पाने और जीवन के कई पहलुओं में कठिनाइयों का सामना करने हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

खवेदांश कुण्डली (डी 40)

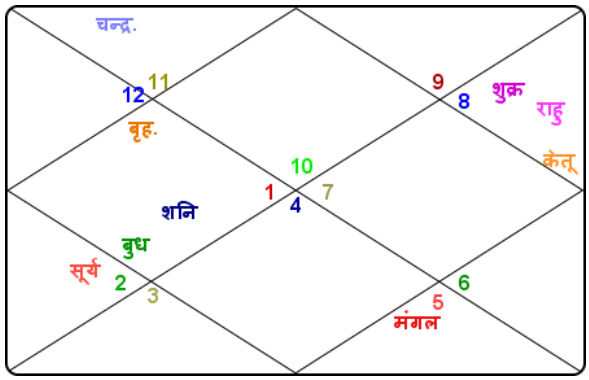

खवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 40 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.75 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति की समग्र भलाई और शुभता की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के साथ--साथ उनके समग्र सुख और समृद्धि के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने और एक सामंजस्यपूर्ण जीवन शैली प्राप्त करने के बारे में सलाह देने की अनुमति मिलती है।

अक्षवेदांश कुण्डली (डी 45)

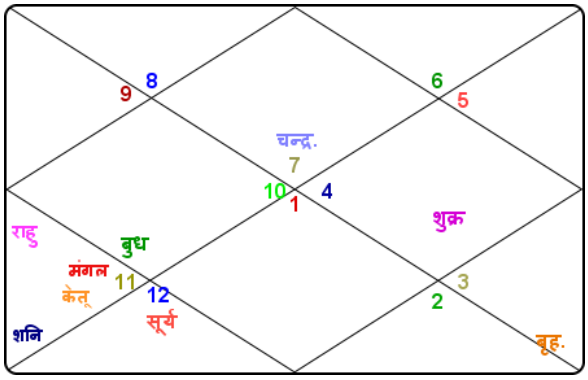

अक्षवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 45 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 0.67 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक और दिव्य गुणों का आकलन करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह एक व्यक्ति की प्रा.तिक आध्यात्मिक क्षमता, दैवीय आशीर्वाद और आध्यात्मिक विकास स्तर को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को आध्यात्मिक विकास में उन्नति और जागरूकता के उच्च स्तर की प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षष्ठांश कुण्डली (डी 60)

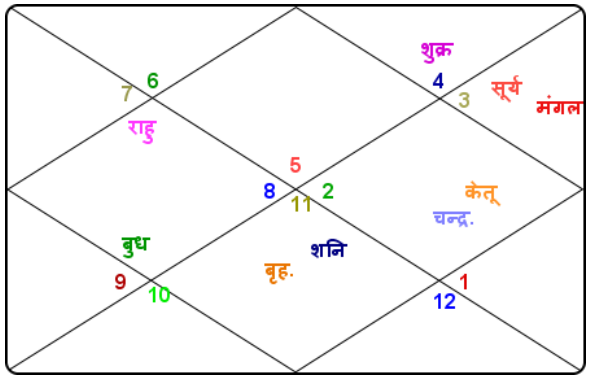

षष्ठांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 60 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.5 डिग्री मापता है। यह कुण्डली अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है और इसका उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने वाले सबसे गहरे कर्म प्रभावों को प्रकट करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के पूर्व जीवन के कर्मों, अव्यक्त झुकावों और उनकी गतिविधियों के सूक्ष्म प्रभावों को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को कर्म असंतुलन को ठीक करने और अत्यधिक संतोषप्रद जीवन जीने का मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

सर्वाष्टकवर्ग (337)

	राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
	भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI
♄	शनि	5	3	3	5	3	3	3	1	3	3	3	4	39
♃	बृहस्पति	6	4	5	5	4	5	6	3	6	3	3	6	56
♂	मंगल	5	3	3	2	2	3	2	4	5	3	2	5	39
☉	सूर्य	5	4	3	3	3	4	3	5	4	5	3	6	48
♀	शुक	3	5	4	3	4	6	3	3	5	5	6	5	52
☿	बुध	5	4	6	3	2	5	3	7	7	3	1	8	54
☽	चन्द्रमा	7	5	1	4	4	3	3	6	5	3	5	3	49
	योग	36	28	25	25	22	29	23	29	35	25	23	37	337

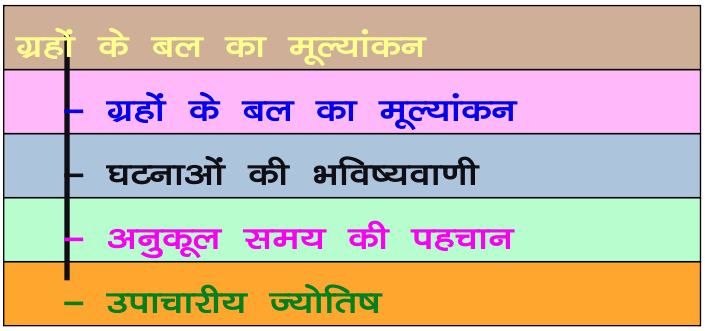

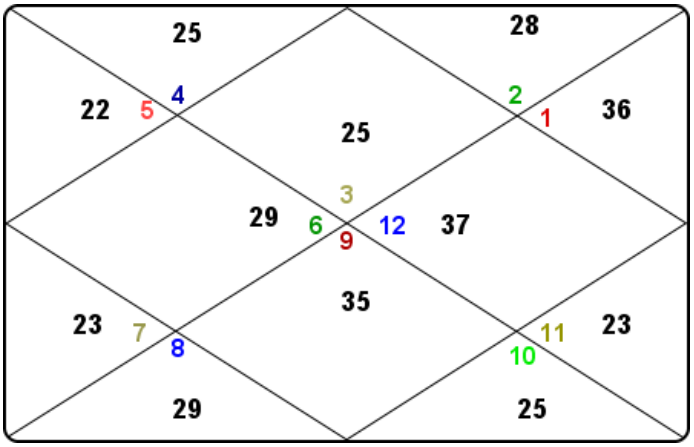

सर्वाष्टकवर्ग योग

काहल योग : आपकी जन्म कुण्डली के सार्वष्टक वर्ग के तीसरे भाग (नौवें से बारहवें भाव राशि तक) में बहुत अधिक शुभ बिन्दु हैं। इस कारण आपकी कुण्ड़ली में काहल योग है। आप अपने जीवन के पहले चरण (लगभग 24वर्ष तक) में कम, दूसरे चरण (24से 48 वर्ष तक) अधिक और तीसरे चरण (लगभग 48 से 72वर्ष) में सबसे अधिक सुख प्राप्त करेंगे।

सूर्य भिन्नाष्टक वर्ग

	राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
	भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
♄	शनि	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
♃	बृहस्पति	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	4
♂	मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
☉	सूय	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
♀	शुक्र	0	0	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	3
☿	बुध	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	7
☽	चन्द्रमा	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	4
AC	लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
	योग	5	4	3	3	3	4	3	5	4	5	3	6	48

सूर्य का कारकत्व

- आत्मा एवं स्व
- अधिकार और नेतृत्व
- स्वास्थ्य और जीवन शक्ति
- पिता और पितातुल्य व्यक्ति
- कैरियर और सफलता

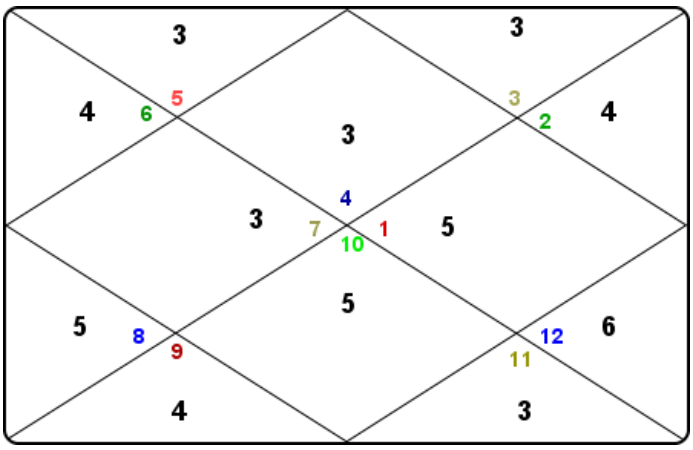

चन्द्रमा भिन्नाष्टक वर्ग

	राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
	भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
♄	शनि	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
♃	बृहस्पति	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
♂	मंगल	1	1	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	7
☉	सूय	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	6
♀	शुक्र	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	0	7
☿	बुध	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	8
☽	चन्द्रमा	1	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
AC	लग्न	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
	योग	7	5	1	4	4	3	3	6	5	3	5	3	49

चन्द्रमा का कारकत्व

- मन और भावनाएँ
- माँ और मातातुल्य स्त्री
- घर और पारिवारिक जीवन
- कल्पना और रचनात्मकता
- विकास और पोषण

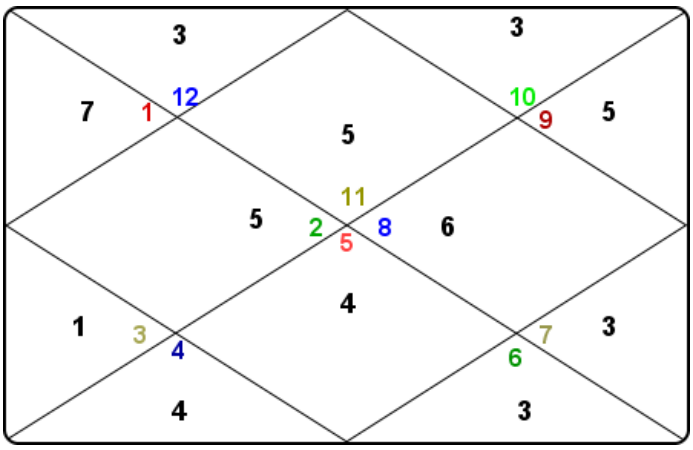

मंगल भिन्नाष्टक वर्ग

	राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
	भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
♄	शनि	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	7
♃	बृहस्पति	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	4
♂	मंगल	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
☉	सूय	1	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	5
♀	शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	4
☿	बुध	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	4
☽	चन्द्रमा	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
AC	लग्न	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
	योग	5	3	3	2	2	3	2	4	5	3	2	5	39

मंगल का कारकत्व

- ऊर्जा और क्रिया
- जुनून और संचालन
- आक्रामकता और संघर्ष
- नेतृत्व और उद्यमशीलता
- अभियांत्रिकी और तकनीकी कौशल

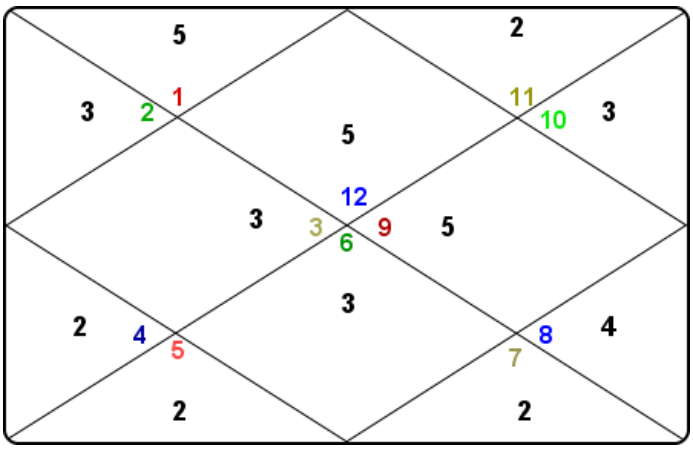

बुध भिन्नाष्टक वर्ग

	राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
	भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
♄	शनि	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
♃	बृहस्पति	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
♂	मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
☉	सूय	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	5
♀	शुक्र	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	8
☿	बुध	1	1	1	1	0	1	0	1	1	0	0	1	8
☽	चन्द्रमा	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	6
AC	लग्न	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	7
	योग	5	4	6	3	2	5	3	7	7	3	1	8	54

बुध का कारकत्व

- बुद्धि और संचार
- वाणिज्य और व्यवसाय
- अधिगम और शिक्षा
- यात्रा और संचालन
- रचनात्मकता और कला

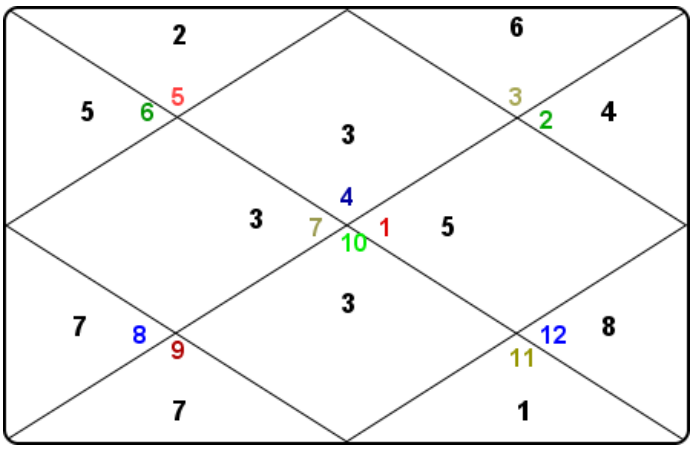

बृहस्पति भिन्नाष्टक वर्ग

	राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
	भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
♄	शनि	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	4
♃	बृहस्पति	0	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	8
♂	मंगल	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
☉	सूय	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	9
♀	शुक्र	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	6
☿	बुध	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	8
☽	चन्द्रमा	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	5
AC	लग्न	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	9
	योग	6	4	5	5	4	5	6	3	6	3	3	6	56

बृहस्पति का कारकत्व

- बुद्धि और ज्ञान
- विकास और विस्तार
- नेतृत्व और अधिकार
- संतान और परिवार
- आध्यात्मिकता और धर्म

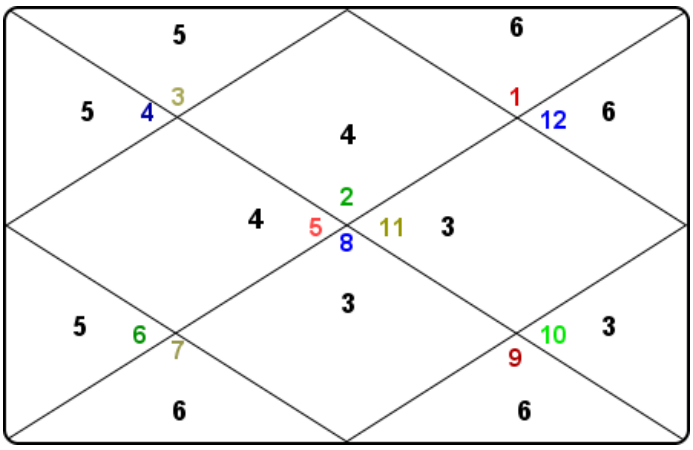

शुक्र भिन्नाष्टक वर्ग

	राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
	भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
♄	शनि	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	7
♃	बृहस्पति	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	5
♂	मंगल	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
☉	सूय	0	1	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	3
♀	शुक्र	1	1	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	9
☿	बुध	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	5
☽	चन्द्रमा	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	9
AC	लग्न	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
	योग	3	5	4	3	4	6	3	3	5	5	6	5	52

शुक्र का कारकत्व

- प्रेम और रोमांच
- विवाह और साझेदारी
- कला और सौंदर्यशास्त्र
- विलासिता और सुख–सुविधा
- वित्त और धन

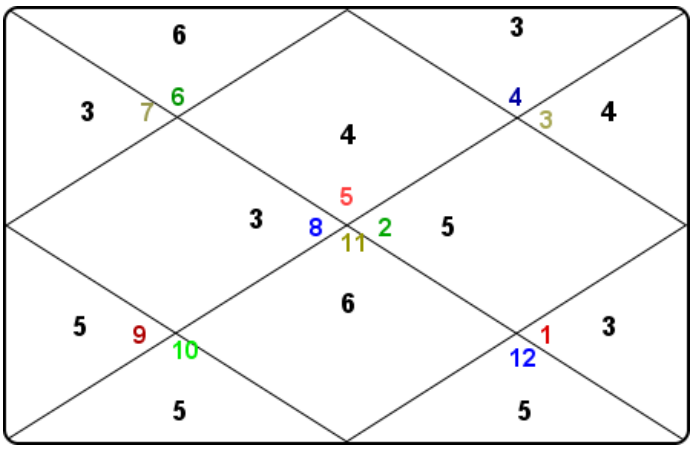

शनि भिन्नाष्टक वर्ग

	राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
	भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
♄	शनि	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
♃	बृहस्पति	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
♂	मंगल	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	6
☉	सूय	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	7
♀	शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	3
☿	बुध	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	6
☽	चन्द्रमा	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
AC	लग्न	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
	योग	5	3	3	5	3	3	3	1	3	3	3	4	39

शनि का कारकत्व

- कठिन परिश्रम और अनुशासन
- बाधाएं और चुनौतियां
- समय और कर्म
- अधिकार और नेतृत्व
- आध्यात्मिकता और वैराग्य

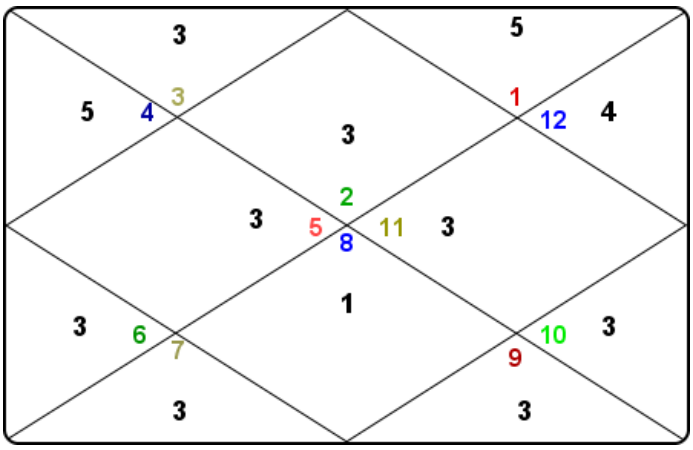

राहु भिन्नाष्टक वर्ग

	राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
	भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
♄	शनि	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
♃	बृहस्पति	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
♂	मंगल	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	5
☉	सूय	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	6
♀	शुक्र	1	0	0	0	1	1	1	1	1	0	0	1	7
☿	बुध	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	7
☽	चन्द्रमा	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	5
AC	लग्न	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
	योग	5	5	2	3	6	3	5	4	5	3	3	5	49

राहु का कारकत्व

- आकांक्षा और सनक
- महत्वाकांक्षा और सफलता
- भ्रम और धोखा
- विदेश भूमि और यात्रा
- आध्यात्मिकता और प्रबोधन

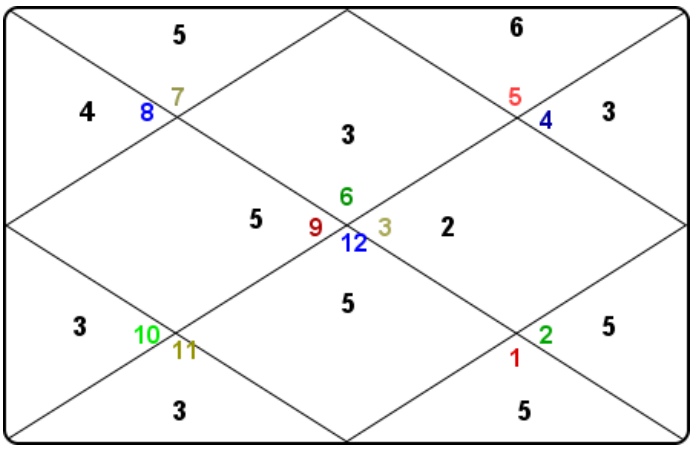

सर्वाष्टक वर्ग के महत्वपूर्ण बिन्दु

लग्न कुण्डली

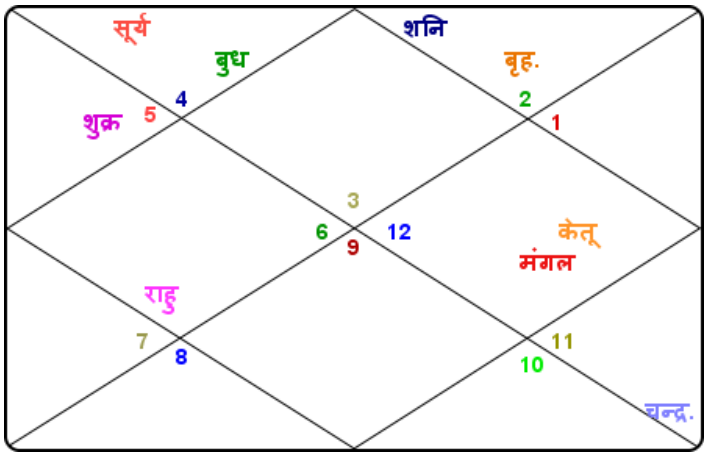

सर्वाष्टक वर्ग कुण्डली

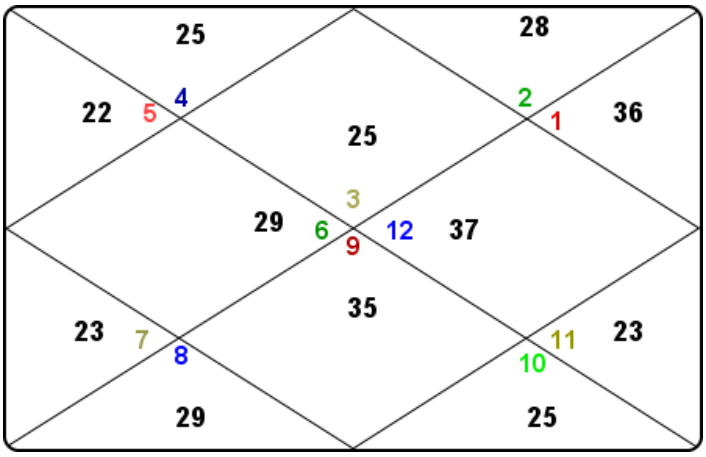

तत्व चक्र

सर्वाष्टक वर्ग बिन्दु	पूर्णांकं	प्राप्ति	शुभ दिशा
अग्नि त्रिकोन	**84.25**	**93**	पूर्व
पृथ्वी त्रिकोन	**84.25**	**82**	दक्षिण
वायु त्रिकोन	**84.25**	**71**	पश्चिम
जल त्रिकोन	**84.25**	**91**	उत्तर

(विशेष – सबसे ज्यादा बिन्दु सबसे शुभ दिशा को इंगित करता है (पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर)। अगर दोनो भागों के बिन्दुओं की संख्या बराबर या आसपास हैं तो शुभ दिशा (उपू०, दपू०, उप० और दप०) होगी।)

भुवन चक्र

सर्वाष्टक वर्ग बिन्दु	पूर्णांकं	प्राप्ति	निष्कर्ष
केन्द्र भाव–राशि	**112.33**	**126**	मेहनत और लगन
पनफरा भाव–राशि	**112.33**	**109**	आर्थिक स्थिति
अपोक्लिम् भाव–राशि	**112.33**	**102**	वित्त हानि

दिशा चक्र

भाग	सर्वाष्टक बिन्दु	पूर्णांकं	प्राप्ति	निष्कर्ष
बन्धुक	भाग्य त्रिकोन	**84.25**	**71**	बन्धु – बान्धवो से सहायता
सेवक	कर्म त्रिकोन	**84.25**	**91**	नौकरी से अर्जन
पोषक	लाभ त्रिकोन	**84.25**	**93**	लाभ और धन
घातक	व्यय त्रिकोन	**84.25**	**82**	दुर्भाग्य और हानि

लग्न कुण्डली

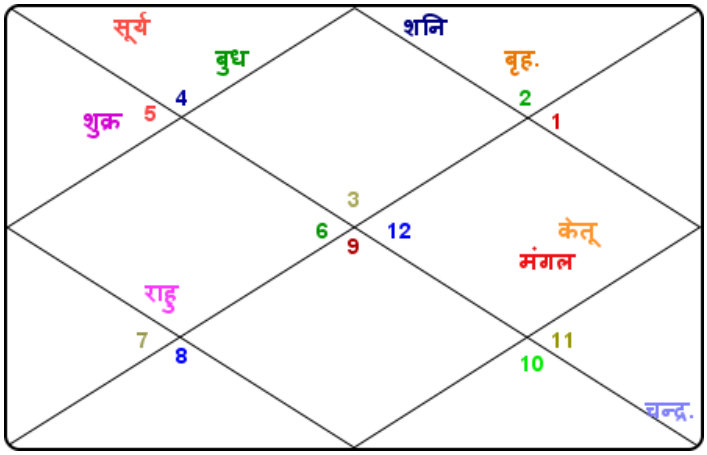

सर्वाष्टक वर्ग कुण्डली

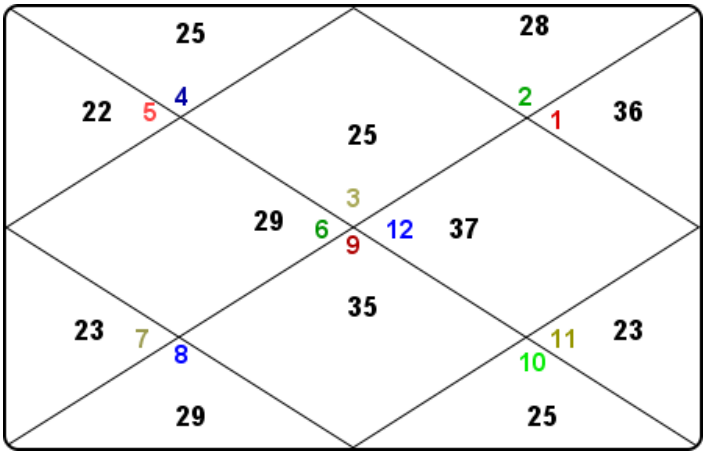

जीवन के महत्वपूर्ण कालखण्डो का अवलोकन

भाग	समयावधि		राशि	स. व. बिन्दु	योग	टिप्पणी
1st	0 - 24 Years	♊	मिथुन	25	101	खराब
		♋	कर्क	25		
		♌	सिहं	22		
		♍	कन्या	29		
2nd	25 - 48 Years	♎	तुला	23	112	अच्छा
		♏	वृश्चिक	29		
		♐	धनु	35		
		♑	मकर	25		
3rd	> 48 Years	♒	कुम्भ	23	124	असाधारण
		♓	मीन	37		
		♈	मेष	36		
		♉	वृष	28		

1 - 105	106 - 118	> 118
खराब	अच्छा	असाधारण

कष्ट तुल्य भाव

भाव		राशि	स. व. बिन्दु	योग	टिप्पणी
6	♏	वृश्चिक	29	82	< 84 Good
8	♑	मकर	25		
12	♉	वृष	28		> 84 Not Good

सुदर्शन चक्र

वैदिक ज्योतिष में सुदर्शन चक्र एक महत्वपूर्ण उपकरण है जो किसी व्यक्ति के जीवन के तीन प्राथमिक पहलुओं, सूर्य (आत्मा), चंद्रमा (मन), और लग्न (शरीर) का प्रतिनिधित्व करने वाला एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह जन्म कुंडली के एकी.त विश्लेषण की अनुमति देता है, सटीक भविष्यवाणियों और व्यापक समझ में सहायता प्रदान करता है। यह तीन अलग–अलग दृष्टिकोण से गोचर का विश्लेषण करके घटनाओं के समय निर्धारण में भी मदद करता है। अंत में, यह समय अवधि की समग्र गुणवत्ता और किसी व्यक्ति के जीवन पर उनके प्रभावों को प्रकट करता है।

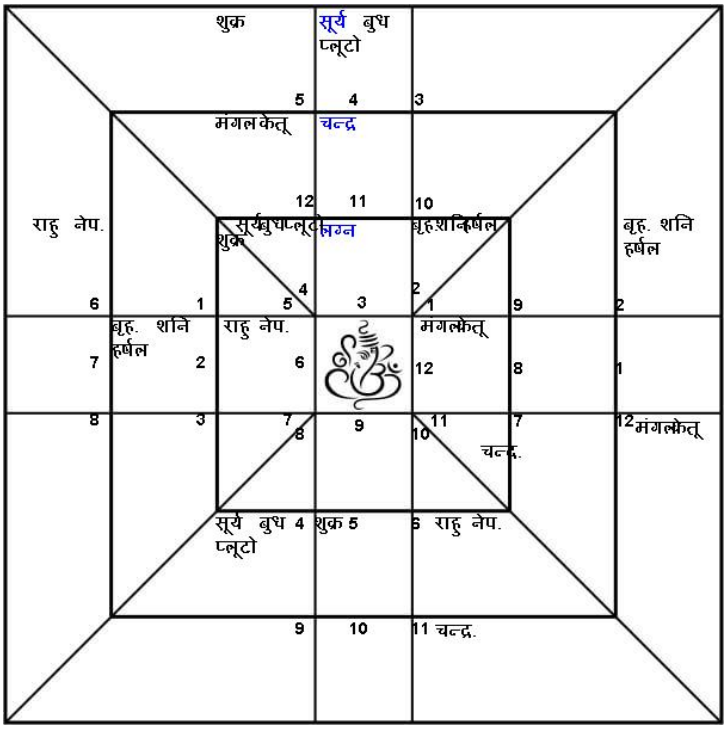

सुदर्शन चक्र शुभ और अशुभ ग्रहों के प्रभाव को दर्शाता है यह (i) लग्न (ii) चन्द्रमा और (iii)सूर्य की स्थिति से इन प्रभावों को देखता है। यह जातक की उम्र को भी दर्शाता है कि कब ये प्रभाव जातक पर पड़ेंगे।

यदि केवल शुभ ग्रहों (वृहस्पति, शुक्र वुध, चन्द्रमा) का प्रभाव है तो पूरा साल खुशीयो से भरा होगा और मांगलिक कार्य होगें। यदि केवल अशुभ ग्रहों (मंगल, शनि, राहु, केतू, सुर्य) का प्रभाव है तो यह साल अमंगलकारी होगा।

षडबल और भावबल

षड्बल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
उच्च बल	25.4	37.58	40.82	39.67	45.94	11.16	4.87
सप्त वर्ग बल	86.25	78.75	135	45	86.25	91.88	131.25
युग्म अयुग्म बल	15	15	15	0	0	15	15
केन्द्रादी बल	30	15	60	30	15	15	15
द्रेक्कन बल	0	15	0	15	0	15	0
स्थान बल	**156.65**	**161.33**	**250.82**	**129.67**	**147.19**	**148.03**	**166.12**
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	94.94	121.3	261.27	78.59	89.21	111.3	173.04
दिग बल	**9.46**	**1.19**	**48.88**	**47.67**	**55.26**	**59.55**	**10.8**
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	27.04	2.37	162.94	136.21	157.9	119.11	36.01
नतोन्नत बल	50.92	9	9	50.92	60	50.92	9
पक्ष बल	10.65	49.35	10.65	10.65	49.35	49.35	10.65
त्रिभाग बल	0	0	60	0	60	0	0
वर्ष बल	0	0	0	0	15	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
दिन बल	45	0	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	0	0	60
अयन बल	49.31	35.07	38.71	52.63	58.04	36.17	4.9
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
काल बल	**155.88**	**93.42**	**118.36**	**114.19**	**242.39**	**136.44**	**114.54**
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	139.18	93.42	176.66	101.96	216.42	136.44	170.96
चेष्टा बल	**49.31**	**49.35**	**15**	**0**	**30**	**45**	**30**
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	98.62	164.51	37.5	0	60	150	75
नैसर्गिक बल	**60**	**51.43**	**17.14**	**25.71**	**34.29**	**42.86**	**8.57**
द्रिक बल	**-27.75**	**4.52**	**9.77**	**-30.32**	**-10.21**	**-10.93**	**-2.21**
कुल षड्बल	**403.55**	**361.24**	**459.98**	**286.92**	**498.91**	**420.95**	**327.83**
षड्बल (रूप में)	**6.73**	**6.02**	**7.67**	**4.78**	**8.32**	**7.02**	**5.46**
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछित अंश	103.47	100.35	153.33	68.32	127.93	127.56	109.28
तुलनात्मक स्थिति	**4**	**5**	**2**	**7**	**1**	**3**	**6**
इष्ट फल	**33.58**	**43.07**	**24.74**	**0**	**37.12**	**22.41**	**12.09**
कष्ट फल	**26.42**	**16.93**	**35.26**	**60**	**22.88**	**37.59**	**47.91**
दिप्ति बल	**100**	**49.35**	**39.42**	**20.98**	**20.33**	**37.95**	**26.39**

भावबल

भाव सँख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव राशि	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
भावाधिपति बल	286.92	361.24	361.24	403.55	286.92	459.98	498.91	327.83	327.83	327.83	498.91	420.95
भाव दिग्बल	60	40	10	30	20	50	0	40	20	0	50	40
भाव दृष्टिबल	-3.82	-14.87	-16.1	-3.5	10.83	-21.04	-16.76	-11.59	8.25	9.53	5.25	3.64
भावबल योग	343.1	386.37	355.14	430.05	317.75	488.94	482.16	356.24	356.08	337.36	554.16	464.59
भावबल (रूप में)	5.72	6.44	5.92	7.17	5.3	8.15	8.04	5.94	5.93	5.62	9.24	7.74
तुलनात्मक स्थिति	10	6	9	5	12	2	3	7	8	11	1	4

विंशोत्तरी दशा (1)

बृहस्पति (9.0 व.1.0 म.11 द.)

दशा बैलेंश

N.C.Lahiri (023:02:29)

Ayanamsha

बृहस्पति (16 वर्ष)

10/08/1941 To 19/09/1950

बारहवें	वृष	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
	रोहिणी (4)	7 , 10
विशेष	नक्षत्र	भावपति
बृहस्पति	-------	-------
शनि	-------	-------
बुध	26-08-1941	00.00
केतु	02-08-1942	00.04
शुक्र	02-04-1945	00.98
सूर्य	19-01-1946	03.64
चन्द्रमा	21-05-1947	04.44
मंगल	26-04-1948	05.78
राहु	19-09-1950	06.71

शनि (19 वर्ष)

19/09/1950 To 19/09/1969

बारहवें	वृष	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	कृतिका (3)	8 , 9
विशेष	नक्षत्र	भावपति
शनि	22-09-1953	09.11
बुध	01-06-1956	12.12
केतु	11-07-1957	14.81
शुक्र	10-09-1960	15.92
सूर्य	23-08-1961	19.09
चन्द्रमा	24-03-1963	20.04
मंगल	02-05-1964	21.62
राहु	09-03-1967	22.73
बृहस्पति	19-09-1969	25.58

बुध (17 वर्ष)

19/09/1969 To 19/09/1986

दूसरे	कर्क	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
अस्त	पुष्य (4)	1 , 4
विशेष	नक्षत्र	भावपति
बुध	15-02-1972	28.11
केतु	12-02-1973	30.52
शुक्र	13-12-1975	31.51
सूर्य	19-10-1976	34.34
चन्द्रमा	21-03-1978	35.19
मंगल	18-03-1979	36.61
राहु	04-10-1981	37.60
बृहस्पति	10-01-1984	40.15
शनि	19-09-1986	42.42

केतु (7 वर्ष)

19/09/1986 To 19/09/1993

दसवें	मीन	सम
भाव	राशि	संबंन्ध
वक्री	पूर्वाभाद (4)	
विशेष	नक्षत्र	भावपति
केतु	15-02-1987	45.11
शुक्र	16-04-1988	45.52
सूर्य	22-08-1988	46.69
चन्द्रमा	24-03-1989	47.04
मंगल	20-08-1989	47.62
राहु	07-09-1990	48.03
बृहस्पति	14-08-1991	49.08
शनि	22-09-1992	50.01
बुध	19-09-1993	51.12

शुक्र (20 वर्ष)

19/09/1993 To 19/09/2013

तीसरे	सिहं	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
स्वनक्षत्र	पुर्वफाल्ग (4)	12 , 5
विशेष	नक्षत्र	भावपति
शुक्र	19-01-1997	52.11
सूर्य	19-01-1998	55.44
चन्द्रमा	19-09-1999	56.44
मंगल	19-11-2000	58.11
राहु	19-11-2003	59.28
बृहस्पति	20-07-2006	62.28
शनि	19-09-2009	64.94
बुध	20-07-2012	68.11
केतु	19-09-2013	70.94

सूर्य (6 वर्ष)

19/09/2013 To 19/09/2019

दूसरे	कर्क	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	अश्लेषा (3)	3
विशेष	नक्षत्र	भावपति
सूर्य	07-01-2014	72.11
चन्द्रमा	08-07-2014	72.41
मंगल	13-11-2014	72.91
राहु	07-10-2015	73.26
बृहस्पति	26-07-2016	74.16
शनि	08-07-2017	74.96
बुध	14-05-2018	75.91
केतु	19-09-2018	76.76
शुक्र	19-09-2019	77.11

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

विंशोत्तरी दशा (2)

चन्द्रमा (10 वर्ष)		
19/09/2019 To 19/09/2029		
नौवें	कुम्भ	सम
भाव	राशि	संबंन्ध
	पूर्वाभाद (2)	2
विशेष	नक्षत्र	भावपति
चन्द्रमा	20-07-2020	78.11
मंगल	18-02-2021	78.94
राहु	20-08-2022	79.53
बृहस्पति	19-12-2023	81.03
शनि	20-07-2025	82.36
बुध	19-12-2026	83.94
केतु	20-07-2027	85.36
शुक्र	21-03-2029	85.94
सूर्य	19-09-2029	87.61

मंगल (7 वर्ष)		
19/09/2029 To 19/09/2036		
दसवें	मीन	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	रेवती (3)	11 , 6
विशेष	नक्षत्र	भावपति
मंगल	15-02-2030	88.11
राहु	05-03-2031	88.52
बृहस्पति	09-02-2032	89.57
शनि	21-03-2033	90.50
बुध	18-03-2034	91.61
केतु	14-08-2034	92.60
शुक्र	14-10-2035	93.01
सूर्य	18-02-2036	94.18
चन्द्रमा	19-09-2036	94.53

राहु (18 वर्ष)		
19/09/2036 To 19/09/2054		
चौथे	कन्या	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
वक्री	उत्तरफाल्ग (2)	
विशेष	नक्षत्र	भावपति
राहु	02-06-2039	95.11
बृहस्पति	26-10-2041	97.81
शनि	01-09-2044	100.21
बुध	21-03-2047	103.06
केतु	07-04-2048	105.61
शुक्र	08-04-2051	106.66
सूर्य	02-03-2052	109.66
चन्द्रमा	01-09-2053	110.56
मंगल	19-09-2054	112.06

वर्तमान दशा/अन्तर/प्रत्यन्तर/ सूक्ष्म/ प्राण दशा

दशा	ग्रह	आरम्भ	समाप्त
महादशा	चन्द्रमा	19:09:2019 (16:52:31)	19:09:2029 (16:52:31)
अन्तर्दशा	शनि	19:12:2023 (22:52:31)	20:07:2025 (20:52:31)
प्रत्यन्तर्दशा	केतु	10:06:2024 (18:32:56)	14:07:2024 (13:50:56)
सूक्ष्मदशा	सूर्य	18:06:2024 (09:05:29)	20:06:2024 (01:39:23)
प्राणदशा	शनि	19:06:2024 (04:21:36)	19:06:2024 (10:46:58)

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन में दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वारा करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलूओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।

बृहस्पति दशा

(10:08:1941 – 19:09:1950)

बृहस्पति अन्तर		
बृहस्पति	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--

शनि अन्तर		
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--
बृहस्पति	-------	--

बुध अन्तर		
(10:08:1941 To 26:08:1941)		
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--
बृहस्पति	-------	--
शनि	26-08-1941	00.00

केतु अन्तर		
(26:08:1941 To 02:08:1942)		
केतु	15-09-1941	00.04
शुक्र	11-11-1941	00.10
सूर्य	28-11-1941	00.25
चन्द्रमा	26-12-1941	00.30
मंगल	15-01-1942	00.38
राहु	07-03-1942	00.43
बृहस्पति	21-04-1942	00.57
शनि	14-06-1942	00.70
बुध	02-08-1942	00.85

शुक्र अन्तर		
(02:08:1942 To 02:04:1945)		
शुक्र	11-01-1943	00.98
सूर्य	28-02-1943	01.42
चन्द्रमा	21-05-1943	01.56
मंगल	16-07-1943	01.78
राहु	09-12-1943	01.93
बृहस्पति	17-04-1944	02.33
शनि	19-09-1944	02.69
बुध	04-02-1945	03.11
केतु	02-04-1945	03.49

सूर्य अन्तर		
(02:04:1945 To 19:01:1946)		
सूर्य	16-04-1945	03.64
चन्द्रमा	11-05-1945	03.68
मंगल	28-05-1945	03.75
राहु	11-07-1945	03.80
बृहस्पति	19-08-1945	03.92
शनि	04-10-1945	04.02
बुध	14-11-1945	04.15
केतु	01-12-1945	04.26
शुक्र	19-01-1946	04.31

चन्द्रमा अन्तर		
(19:01:1946 To 21:05:1947)		
चन्द्रमा	28-02-1946	04.44
मंगल	29-03-1946	04.56
राहु	10-06-1946	04.63
बृहस्पति	14-08-1946	04.83
शनि	30-10-1946	05.01
बुध	07-01-1947	05.22
केतु	04-02-1947	05.41
शुक्र	26-04-1947	05.49
सूर्य	21-05-1947	05.71

मंगल अन्तर		
(21:05:1947 To 26:04:1948)		
मंगल	09-06-1947	05.78
राहु	31-07-1947	05.83
बृहस्पति	14-09-1947	05.97
शनि	07-11-1947	06.10
बुध	25-12-1947	06.24
केतु	14-01-1948	06.38
शुक्र	11-03-1948	06.43
सूर्य	28-03-1948	06.59
चन्द्रमा	26-04-1948	06.63

राहु अन्तर		
(26:04:1948 To 19:09:1950)		
राहु	04-09-1948	06.71
बृहस्पति	30-12-1948	07.07
शनि	18-05-1949	07.39
बुध	19-09-1949	07.77
केतु	09-11-1949	08.11
शुक्र	04-04-1950	08.25
सूर्य	18-05-1950	08.65
चन्द्रमा	30-07-1950	08.77
मंगल	19-09-1950	08.97

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शनि दशा

(19:09:1950 – 19:09:1969)

शनि अन्तर		
(19:09:1950 To 22:09:1953)		
शनि	12-03-1951	09.11
बुध	15-08-1951	09.59
केतु	18-10-1951	10.01
शुक्र	18-04-1952	10.19
सूर्य	12-06-1952	10.69
चन्द्रमा	12-09-1952	10.84
मंगल	15-11-1952	11.09
राहु	29-04-1953	11.27
बृहस्पति	22-09-1953	11.72

बुध अन्तर		
(22:09:1953 To 01:06:1956)		
बुध	08-02-1954	12.12
केतु	07-04-1954	12.50
शुक्र	17-09-1954	12.66
सूर्य	06-11-1954	13.11
चन्द्रमा	26-01-1955	13.24
मंगल	25-03-1955	13.47
राहु	19-08-1955	13.62
बृहस्पति	28-12-1955	14.03
शनि	01-06-1956	14.39

केतु अन्तर		
(01:06:1956 To 11:07:1957)		
केतु	25-06-1956	14.81
शुक्र	31-08-1956	14.88
सूर्य	21-09-1956	15.06
चन्द्रमा	24-10-1956	15.12
मंगल	17-11-1956	15.21
राहु	17-01-1957	15.27
बृहस्पति	12-03-1957	15.44
शनि	15-05-1957	15.59
बुध	11-07-1957	15.76

शुक्र अन्तर		
(11:07:1957 To 10:09:1960)		
शुक्र	20-01-1958	15.92
सूर्य	19-03-1958	16.45
चन्द्रमा	23-06-1958	16.61
मंगल	29-08-1958	16.87
राहु	19-02-1959	17.05
बृहस्पति	23-07-1959	17.53
शनि	22-01-1960	17.95
बुध	04-07-1960	18.45
केतु	10-09-1960	18.90

सूर्य अन्तर		
(10:09:1960 To 23:08:1961)		
सूर्य	27-09-1960	19.09
चन्द्रमा	26-10-1960	19.13
मंगल	15-11-1960	19.21
राहु	07-01-1961	19.27
बृहस्पति	22-02-1961	19.41
शनि	18-04-1961	19.54
बुध	06-06-1961	19.69
केतु	26-06-1961	19.82
शुक्र	23-08-1961	19.88

चन्द्रमा अन्तर		
(23:08:1961 To 24:03:1963)		
चन्द्रमा	10-10-1961	20.04
मंगल	13-11-1961	20.17
राहु	07-02-1962	20.26
बृहस्पति	25-04-1962	20.50
शनि	26-07-1962	20.71
बुध	16-10-1962	20.96
केतु	19-11-1962	21.18
शुक्र	23-02-1963	21.28
सूर्य	24-03-1963	21.54

मंगल अन्तर		
(24:03:1963 To 02:05:1964)		
मंगल	16-04-1963	21.62
राहु	16-06-1963	21.68
बृहस्पति	09-08-1963	21.85
शनि	12-10-1963	22.00
बुध	08-12-1963	22.17
केतु	01-01-1964	22.33
शुक्र	09-03-1964	22.40
सूर्य	29-03-1964	22.58
चन्द्रमा	02-05-1964	22.64

राहु अन्तर		
(02:05:1964 To 09:03:1967)		
राहु	05-10-1964	22.73
बृहस्पति	21-02-1965	23.16
शनि	05-08-1965	23.54
बुध	30-12-1965	23.99
केतु	01-03-1966	24.39
शुक्र	21-08-1966	24.56
सूर्य	12-10-1966	25.03
चन्द्रमा	07-01-1967	25.17
मंगल	09-03-1967	25.41

बृहस्पति अन्तर		
(09:03:1967 To 19:09:1969)		
बृहस्पति	10-07-1967	25.58
शनि	03-12-1967	25.92
बुध	13-04-1968	26.32
केतु	06-06-1968	26.68
शुक्र	07-11-1968	26.82
सूर्य	23-12-1968	27.25
चन्द्रमा	11-03-1969	27.37
मंगल	04-05-1969	27.58
राहु	19-09-1969	27.73

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बुध दशा

(19:09:1969 – 19:09:1986)

बुध अन्तर		
(19:09:1969 To 15:02:1972)		
बुध	22-01-1970	28.11
केतु	14-03-1970	28.45
शुक्र	08-08-1970	28.59
सूर्य	20-09-1970	28.99
चन्द्रमा	03-12-1970	29.11
मंगल	23-01-1971	29.32
राहु	04-06-1971	29.46
बृहस्पति	29-09-1971	29.82
शनि	15-02-1972	30.14

केतु अन्तर		
(15:02:1972 To 12:02:1973)		
केतु	08-03-1972	30.52
शुक्र	07-05-1972	30.58
सूर्य	25-05-1972	30.74
चन्द्रमा	24-06-1972	30.79
मंगल	16-07-1972	30.87
राहु	08-09-1972	30.93
बृहस्पति	26-10-1972	31.08
शनि	23-12-1972	31.21
बुध	12-02-1973	31.37

शुक्र अन्तर		
(12:02:1973 To 13:12:1975)		
शुक्र	04-08-1973	31.51
सूर्य	24-09-1973	31.98
चन्द्रमा	19-12-1973	32.13
मंगल	18-02-1974	32.36
राहु	23-07-1974	32.53
बृहस्पति	08-12-1974	32.95
शनि	21-05-1975	33.33
बुध	14-10-1975	33.78
केतु	13-12-1975	34.18

सूर्य अन्तर		
(13:12:1975 To 19:10:1976)		
सूर्य	29-12-1975	34.34
चन्द्रमा	24-01-1976	34.39
मंगल	11-02-1976	34.46
राहु	29-03-1976	34.51
बृहस्पति	09-05-1976	34.64
शनि	27-06-1976	34.75
बुध	10-08-1976	34.88
केतु	29-08-1976	35.00
शुक्र	19-10-1976	35.05

चन्द्रमा अन्तर		
(19:10:1976 To 21:03:1978)		
चन्द्रमा	02-12-1976	35.19
मंगल	01-01-1977	35.31
राहु	19-03-1977	35.40
बृहस्पति	27-05-1977	35.61
शनि	17-08-1977	35.80
बुध	30-10-1977	36.02
केतु	29-11-1977	36.22
शुक्र	23-02-1978	36.30
सूर्य	21-03-1978	36.54

मंगल अन्तर		
(21:03:1978 To 18:03:1979)		
मंगल	11-04-1978	36.61
राहु	04-06-1978	36.67
बृहस्पति	22-07-1978	36.82
शनि	18-09-1978	36.95
बुध	08-11-1978	37.11
केतु	29-11-1978	37.25
शुक्र	28-01-1979	37.31
सूर्य	15-02-1979	37.47
चन्द्रमा	18-03-1979	37.52

राहु अन्तर		
(18:03:1979 To 04:10:1981)		
राहु	04-08-1979	37.60
बृहस्पति	06-12-1979	37.99
शनि	02-05-1980	38.33
बुध	11-09-1980	38.73
केतु	05-11-1980	39.09
शुक्र	09-04-1981	39.24
सूर्य	26-05-1981	39.66
चन्द्रमा	11-08-1981	39.79
मंगल	04-10-1981	40.00

बृहस्पति अन्तर		
(04:10:1981 To 10:01:1984)		
बृहस्पति	23-01-1982	40.15
शनि	03-06-1982	40.46
बुध	28-09-1982	40.81
केतु	15-11-1982	41.14
शुक्र	02-04-1983	41.27
सूर्य	13-05-1983	41.65
चन्द्रमा	21-07-1983	41.76
मंगल	08-09-1983	41.95
राहु	10-01-1984	42.08

शनि अन्तर		
(10:01:1984 To 19:09:1986)		
शनि	14-06-1984	42.42
बुध	31-10-1984	42.85
केतु	28-12-1984	43.23
शुक्र	10-06-1985	43.38
सूर्य	29-07-1985	43.83
चन्द्रमा	19-10-1985	43.97
मंगल	15-12-1985	44.19
राहु	11-05-1986	44.35
बृहस्पति	19-09-1986	44.75

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

केतु दशा

(19:09:1986 – 19:09:1993)

केतु अन्तर		
(19:09:1986 To 15:02:1987)		
केतु	28-09-1986	45.11
शुक्र	23-10-1986	45.14
सूर्य	30-10-1986	45.20
चन्द्रमा	12-11-1986	45.22
मंगल	20-11-1986	45.26
राहु	13-12-1986	45.28
बृहस्पति	02-01-1987	45.34
शनि	25-01-1987	45.40
बुध	15-02-1987	45.46

शुक्र अन्तर		
(15:02:1987 To 16:04:1988)		
शुक्र	27-04-1987	45.52
सूर्य	19-05-1987	45.71
चन्द्रमा	23-06-1987	45.77
मंगल	18-07-1987	45.87
राहु	20-09-1987	45.94
बृहस्पति	15-11-1987	46.11
शनि	22-01-1988	46.27
बुध	22-03-1988	46.45
केतु	16-04-1988	46.62

सूर्य अन्तर		
(16:04:1988 To 22:08:1988)		
सूर्य	23-04-1988	46.69
चन्द्रमा	03-05-1988	46.70
मंगल	11-05-1988	46.73
राहु	30-05-1988	46.75
बृहस्पति	16-06-1988	46.81
शनि	07-07-1988	46.85
बुध	25-07-1988	46.91
केतु	01-08-1988	46.96
शुक्र	22-08-1988	46.98

चन्द्रमा अन्तर		
(22:08:1988 To 24:03:1989)		
चन्द्रमा	09-09-1988	47.04
मंगल	22-09-1988	47.08
राहु	24-10-1988	47.12
बृहस्पति	21-11-1988	47.21
शनि	25-12-1988	47.28
बुध	24-01-1989	47.38
केतु	06-02-1989	47.46
शुक्र	13-03-1989	47.49
सूर्य	24-03-1989	47.59

मंगल अन्तर		
(24:03:1989 To 20:08:1989)		
मंगल	01-04-1989	47.62
राहु	24-04-1989	47.64
बृहस्पति	14-05-1989	47.70
शनि	06-06-1989	47.76
बुध	27-06-1989	47.82
केतु	06-07-1989	47.88
शुक्र	31-07-1989	47.91
सूर्य	07-08-1989	47.97
चन्द्रमा	20-08-1989	47.99

राहु अन्तर		
(20:08:1989 To 07:09:1990)		
राहु	16-10-1989	48.03
बृहस्पति	06-12-1989	48.19
शनि	05-02-1990	48.33
बुध	31-03-1990	48.49
केतु	23-04-1990	48.64
शुक्र	26-06-1990	48.70
सूर्य	15-07-1990	48.88
चन्द्रमा	16-08-1990	48.93
मंगल	07-09-1990	49.02

बृहस्पति अन्तर		
(07:09:1990 To 14:08:1991)		
बृहस्पति	22-10-1990	49.08
शनि	15-12-1990	49.20
बुध	02-02-1991	49.35
केतु	22-02-1991	49.48
शुक्र	19-04-1991	49.54
सूर्य	06-05-1991	49.69
चन्द्रमा	04-06-1991	49.74
मंगल	24-06-1991	49.82
राहु	14-08-1991	49.87

शनि अन्तर		
(14:08:1991 To 22:09:1992)		
शनि	17-10-1991	50.01
बुध	13-12-1991	50.19
केतु	06-01-1992	50.34
शुक्र	13-03-1992	50.41
सूर्य	03-04-1992	50.59
चन्द्रमा	06-05-1992	50.65
मंगल	30-05-1992	50.74
राहु	30-07-1992	50.81
बृहस्पति	22-09-1992	50.97

बुध अन्तर		
(22:09:1992 To 19:09:1993)		
बुध	12-11-1992	51.12
केतु	04-12-1992	51.26
शुक्र	02-02-1993	51.32
सूर्य	20-02-1993	51.48
चन्द्रमा	22-03-1993	51.53
मंगल	12-04-1993	51.62
राहु	06-06-1993	51.67
बृहस्पति	24-07-1993	51.82
शनि	19-09-1993	51.95

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शुक्र दशा

(19:09:1993 – 19:09:2013)

शुक्र अन्तर		
(19:09:1993 To 19:01:1997)		
शुक्र	10-04-1994	52.11
सूर्य	10-06-1994	52.67
चन्द्रमा	19-09-1994	52.83
मंगल	29-11-1994	53.11
राहु	31-05-1995	53.31
बृहस्पति	09-11-1995	53.81
शनि	20-05-1996	54.25
बुध	09-11-1996	54.78
केतु	19-01-1997	55.25

सूर्य अन्तर		
(19:01:1997 To 19:01:1998)		
सूर्य	06-02-1997	55.44
चन्द्रमा	09-03-1997	55.49
मंगल	30-03-1997	55.58
राहु	24-05-1997	55.64
बृहस्पति	11-07-1997	55.79
शनि	07-09-1997	55.92
बुध	29-10-1997	56.08
केतु	19-11-1997	56.22
शुक्र	19-01-1998	56.28

चन्द्रमा अन्तर		
(19:01:1998 To 19:09:1999)		
चन्द्रमा	11-03-1998	56.44
मंगल	15-04-1998	56.58
राहु	15-07-1998	56.68
बृहस्पति	04-10-1998	56.93
शनि	09-01-1999	57.15
बुध	05-04-1999	57.42
केतु	10-05-1999	57.65
शुक्र	20-08-1999	57.75
सूर्य	19-09-1999	58.03

मंगल अन्तर		
(19:09:1999 To 19:11:2000)		
मंगल	14-10-1999	58.11
राहु	17-12-1999	58.18
बृहस्पति	12-02-2000	58.35
शनि	19-04-2000	58.51
बुध	19-06-2000	58.69
केतु	14-07-2000	58.86
शुक्र	23-09-2000	58.93
सूर्य	14-10-2000	59.12
चन्द्रमा	19-11-2000	59.18

राहु अन्तर		
(19:11:2000 To 19:11:2003)		
राहु	02-05-2001	59.28
बृहस्पति	25-09-2001	59.73
शनि	18-03-2002	60.13
बुध	20-08-2002	60.60
केतु	23-10-2002	61.03
शुक्र	23-04-2003	61.20
सूर्य	17-06-2003	61.70
चन्द्रमा	16-09-2003	61.85
मंगल	19-11-2003	62.10

बृहस्पति अन्तर		
(19:11:2003 To 20:07:2006)		
बृहस्पति	28-03-2004	62.28
शनि	30-08-2004	62.63
बुध	15-01-2005	63.06
केतु	13-03-2005	63.43
शुक्र	22-08-2005	63.59
सूर्य	09-10-2005	64.03
चन्द्रमा	30-12-2005	64.17
मंगल	24-02-2006	64.39
राहु	20-07-2006	64.54

शनि अन्तर		
(20:07:2006 To 19:09:2009)		
शनि	19-01-2007	64.94
बुध	02-07-2007	65.45
केतु	08-09-2007	65.89
शुक्र	18-03-2008	66.08
सूर्य	15-05-2008	66.61
चन्द्रमा	20-08-2008	66.77
मंगल	27-10-2008	67.03
राहु	18-04-2009	67.21
बृहस्पति	19-09-2009	67.69

बुध अन्तर		
(19:09:2009 To 20:07:2012)		
बुध	13-02-2010	68.11
केतु	14-04-2010	68.51
शुक्र	03-10-2010	68.68
सूर्य	24-11-2010	69.15
चन्द्रमा	18-02-2011	69.29
मंगल	20-04-2011	69.53
राहु	22-09-2011	69.69
बृहस्पति	07-02-2012	70.12
शनि	20-07-2012	70.50

केतु अन्तर		
(20:07:2012 To 19:09:2013)		
केतु	14-08-2012	70.94
शुक्र	24-10-2012	71.01
सूर्य	14-11-2012	71.21
चन्द्रमा	20-12-2012	71.27
मंगल	14-01-2013	71.36
राहु	19-03-2013	71.43
बृहस्पति	14-05-2013	71.61
शनि	21-07-2013	71.76
बुध	19-09-2013	71.95

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

सूर्य दशा

(19:09:2013 – 19:09:2019)

सूर्य अन्तर		
(19:09:2013 To 07:01:2014)		
सूर्य	25-09-2013	72.11
चन्द्रमा	04-10-2013	72.13
मंगल	10-10-2013	72.15
राहु	27-10-2013	72.17
बृहस्पति	10-11-2013	72.21
शनि	28-11-2013	72.25
बुध	13-12-2013	72.30
केतु	19-12-2013	72.34
शुक्र	07-01-2014	72.36

चन्द्रमा अन्तर		
(07:01:2014 To 08:07:2014)		
चन्द्रमा	22-01-2014	72.41
मंगल	02-02-2014	72.45
राहु	01-03-2014	72.48
बृहस्पति	25-03-2014	72.56
शनि	23-04-2014	72.62
बुध	19-05-2014	72.70
केतु	30-05-2014	72.77
शुक्र	29-06-2014	72.80
सूर्य	08-07-2014	72.89

मंगल अन्तर		
(08:07:2014 To 13:11:2014)		
मंगल	16-07-2014	72.91
राहु	04-08-2014	72.93
बृहस्पति	21-08-2014	72.98
शनि	10-09-2014	73.03
बुध	28-09-2014	73.09
केतु	06-10-2014	73.14
शुक्र	27-10-2014	73.16
सूर्य	02-11-2014	73.21
चन्द्रमा	13-11-2014	73.23

राहु अन्तर		
(13:11:2014 To 07:10:2015)		
राहु	01-01-2015	73.26
बृहस्पति	14-02-2015	73.40
शनि	07-04-2015	73.52
बुध	24-05-2015	73.66
केतु	12-06-2015	73.79
शुक्र	05-08-2015	73.84
सूर्य	22-08-2015	73.99
चन्द्रमा	18-09-2015	74.03
मंगल	07-10-2015	74.11

बृहस्पति अन्तर		
(07:10:2015 To 26:07:2016)		
बृहस्पति	15-11-2015	74.16
शनि	01-01-2016	74.27
बुध	11-02-2016	74.39
केतु	28-02-2016	74.51
शुक्र	17-04-2016	74.55
सूर्य	02-05-2016	74.69
चन्द्रमा	26-05-2016	74.73
मंगल	12-06-2016	74.79
राहु	26-07-2016	74.84

शनि अन्तर		
(26:07:2016 To 08:07:2017)		
शनि	19-09-2016	74.96
बुध	07-11-2016	75.11
केतु	28-11-2016	75.25
शुक्र	24-01-2017	75.30
सूर्य	11-02-2017	75.46
चन्द्रमा	12-03-2017	75.51
मंगल	01-04-2017	75.59
राहु	23-05-2017	75.64
बृहस्पति	08-07-2017	75.78

बुध अन्तर		
(08:07:2017 To 14:05:2018)		
बुध	21-08-2017	75.91
केतु	08-09-2017	76.03
शुक्र	30-10-2017	76.08
सूर्य	14-11-2017	76.22
चन्द्रमा	10-12-2017	76.27
मंगल	28-12-2017	76.34
राहु	13-02-2018	76.39
बृहस्पति	26-03-2018	76.51
शनि	14-05-2018	76.63

केतु अन्तर		
(14:05:2018 To 19:09:2018)		
केतु	22-05-2018	76.76
शुक्र	12-06-2018	76.78
सूर्य	19-06-2018	76.84
चन्द्रमा	29-06-2018	76.86
मंगल	07-07-2018	76.89
राहु	26-07-2018	76.91
बृहस्पति	12-08-2018	76.96
शनि	01-09-2018	77.01
बुध	19-09-2018	77.06

शुक्र अन्तर		
(19:09:2018 To 19:09:2019)		
शुक्र	19-11-2018	77.11
सूर्य	07-12-2018	77.28
चन्द्रमा	07-01-2019	77.33
मंगल	28-01-2019	77.41
राहु	24-03-2019	77.47
बृहस्पति	11-05-2019	77.62
शनि	08-07-2019	77.75
बुध	29-08-2019	77.91
केतु	19-09-2019	78.05

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

चन्द्रमा दशा

(19:09:2019 – 19:09:2029)

चन्द्रमा अन्तर		
(19:09:2019 To 20:07:2020)		
चन्द्रमा	15-10-2019	78.11
मंगल	01-11-2019	78.18
राहु	17-12-2019	78.23
बृहस्पति	27-01-2020	78.35
शनि	15-03-2020	78.47
बुध	27-04-2020	78.60
केतु	15-05-2020	78.72
शुक्र	05-07-2020	78.76
सूर्य	20-07-2020	78.90

मंगल अन्तर		
(20:07:2020 To 18:02:2021)		
मंगल	01-08-2020	78.94
राहु	02-09-2020	78.98
बृहस्पति	01-10-2020	79.07
शनि	04-11-2020	79.14
बुध	04-12-2020	79.24
केतु	16-12-2020	79.32
शुक्र	21-01-2021	79.35
सूर्य	01-02-2021	79.45
चन्द्रमा	18-02-2021	79.48

राहु अन्तर		
(18:02:2021 To 20:08:2022)		
राहु	11-05-2021	79.53
बृहस्पति	23-07-2021	79.75
शनि	18-10-2021	79.95
बुध	04-01-2022	80.19
केतु	05-02-2022	80.40
शुक्र	07-05-2022	80.49
सूर्य	03-06-2022	80.74
चन्द्रमा	19-07-2022	80.82
मंगल	20-08-2022	80.94

बृहस्पति अन्तर		
(20:08:2022 To 19:12:2023)		
बृहस्पति	24-10-2022	81.03
शनि	09-01-2023	81.21
बुध	19-03-2023	81.42
केतु	16-04-2023	81.61
शुक्र	06-07-2023	81.68
सूर्य	31-07-2023	81.91
चन्द्रमा	09-09-2023	81.97
मंगल	07-10-2023	82.08
राहु	19-12-2023	82.16

शनि अन्तर		
(19:12:2023 To 20:07:2025)		
शनि	20-03-2024	82.36
बुध	10-06-2024	82.61
केतु	14-07-2024	82.84
शुक्र	19-10-2024	82.93
सूर्य	17-11-2024	83.19
चन्द्रमा	04-01-2025	83.27
मंगल	07-02-2025	83.40
राहु	04-05-2025	83.50
बृहस्पति	20-07-2025	83.73

बुध अन्तर		
(20:07:2025 To 19:12:2026)		
बुध	02-10-2025	83.94
केतु	01-11-2025	84.15
शुक्र	26-01-2026	84.23
सूर्य	21-02-2026	84.46
चन्द्रमा	05-04-2026	84.53
मंगल	05-05-2026	84.65
राहु	22-07-2026	84.74
बृहस्पति	29-09-2026	84.95
शनि	19-12-2026	85.14

केतु अन्तर		
(19:12:2026 To 20:07:2027)		
केतु	01-01-2027	85.36
शुक्र	05-02-2027	85.40
सूर्य	16-02-2027	85.49
चन्द्रमा	06-03-2027	85.52
मंगल	18-03-2027	85.57
राहु	19-04-2027	85.60
बृहस्पति	17-05-2027	85.69
शनि	20-06-2027	85.77
बुध	20-07-2027	85.86

शुक्र अन्तर		
(20:07:2027 To 21:03:2029)		
शुक्र	30-10-2027	85.94
सूर्य	29-11-2027	86.22
चन्द्रमा	19-01-2028	86.31
मंगल	24-02-2028	86.44
राहु	25-05-2028	86.54
बृहस्पति	14-08-2028	86.79
शनि	19-11-2028	87.01
बुध	13-02-2029	87.28
केतु	21-03-2029	87.51

सूर्य अन्तर		
(21:03:2029 To 19:09:2029)		
सूर्य	30-03-2029	87.61
चन्द्रमा	14-04-2029	87.64
मंगल	25-04-2029	87.68
राहु	22-05-2029	87.71
बृहस्पति	15-06-2029	87.78
शनि	14-07-2029	87.85
बुध	09-08-2029	87.93
केतु	20-08-2029	88.00
शुक्र	19-09-2029	88.03

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

मंगल दशा

(19:09:2029 – 19:09:2036)

मंगल अन्तर		
(19:09:2029 To 15:02:2030)		
मंगल	28-09-2029	88.11
राहु	20-10-2029	88.14
बृहस्पति	09-11-2029	88.20
शनि	03-12-2029	88.25
बुध	24-12-2029	88.32
केतु	02-01-2030	88.37
शुक्र	26-01-2030	88.40
सूर्य	03-02-2030	88.47
चन्द्रमा	15-02-2030	88.49

राहु अन्तर		
(15:02:2030 To 05:03:2031)		
राहु	14-04-2030	88.52
बृहस्पति	04-06-2030	88.68
शनि	04-08-2030	88.82
बुध	27-09-2030	88.98
केतु	19-10-2030	89.13
शुक्र	22-12-2030	89.19
सूर्य	10-01-2031	89.37
चन्द्रमा	11-02-2031	89.42
मंगल	05-03-2031	89.51

बृहस्पति अन्तर		
(05:03:2031 To 09:02:2032)		
बृहस्पति	20-04-2031	89.57
शनि	13-06-2031	89.69
बुध	31-07-2031	89.84
केतु	20-08-2031	89.97
शुक्र	16-10-2031	90.03
सूर्य	02-11-2031	90.18
चन्द्रमा	30-11-2031	90.23
मंगल	20-12-2031	90.31
राहु	09-02-2032	90.36

शनि अन्तर		
(09:02:2032 To 21:03:2033)		
शनि	14-04-2032	90.50
बुध	10-06-2032	90.68
केतु	04-07-2032	90.84
शुक्र	09-09-2032	90.90
सूर्य	30-09-2032	91.08
चन्द्रमा	02-11-2032	91.14
मंगल	26-11-2032	91.23
राहु	26-01-2033	91.30
बृहस्पति	21-03-2033	91.46

बुध अन्तर		
(21:03:2033 To 18:03:2034)		
बुध	11-05-2033	91.61
केतु	01-06-2033	91.75
शुक्र	31-07-2033	91.81
सूर्य	19-08-2033	91.97
चन्द्रमा	18-09-2033	92.02
मंगल	09-10-2033	92.11
राहु	02-12-2033	92.16
बृहस्पति	19-01-2034	92.31
शनि	18-03-2034	92.45

केतु अन्तर		
(18:03:2034 To 14:08:2034)		
केतु	26-03-2034	92.60
शुक्र	20-04-2034	92.63
सूर्य	28-04-2034	92.69
चन्द्रमा	10-05-2034	92.72
मंगल	19-05-2034	92.75
राहु	10-06-2034	92.77
बृहस्पति	30-06-2034	92.83
शनि	24-07-2034	92.89
बुध	14-08-2034	92.95

शुक्र अन्तर		
(14:08:2034 To 14:10:2035)		
शुक्र	24-10-2034	93.01
सूर्य	14-11-2034	93.21
चन्द्रमा	19-12-2034	93.26
मंगल	13-01-2035	93.36
राहु	18-03-2035	93.43
बृहस्पति	14-05-2035	93.60
शनि	20-07-2035	93.76
बुध	19-09-2035	93.94
केतु	14-10-2035	94.11

सूर्य अन्तर		
(14:10:2035 To 18:02:2036)		
सूर्य	20-10-2035	94.18
चन्द्रमा	31-10-2035	94.20
मंगल	07-11-2035	94.22
राहु	26-11-2035	94.25
बृहस्पति	13-12-2035	94.30
शनि	02-01-2036	94.34
बुध	21-01-2036	94.40
केतु	28-01-2036	94.45
शुक्र	18-02-2036	94.47

चन्द्रमा अन्तर		
(18:02:2036 To 19:09:2036)		
चन्द्रमा	07-03-2036	94.53
मंगल	20-03-2036	94.58
राहु	21-04-2036	94.61
बृहस्पति	19-05-2036	94.70
शनि	22-06-2036	94.78
बुध	22-07-2036	94.87
केतु	04-08-2036	94.95
शुक्र	08-09-2036	94.98
सूर्य	19-09-2036	95.08

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

राहु दशा

(19:09:2036 – 19:09:2054)

राहु अन्तर		
(19:09:2036 To 02:06:2039)		
राहु	14-02-2037	95.11
बृहस्पति	25-06-2037	95.52
शनि	28-11-2037	95.88
बुध	17-04-2038	96.30
केतु	14-06-2038	96.69
शुक्र	25-11-2038	96.84
सूर्य	13-01-2039	97.29
चन्द्रमा	05-04-2039	97.43
मंगल	02-06-2039	97.65

बृहस्पति अन्तर		
(02:06:2039 To 26:10:2041)		
बृहस्पति	27-09-2039	97.81
शनि	12-02-2040	98.13
बुध	16-06-2040	98.51
केतु	06-08-2040	98.85
शुक्र	30-12-2040	98.99
सूर्य	12-02-2041	99.39
चन्द्रमा	26-04-2041	99.51
मंगल	16-06-2041	99.71
राहु	26-10-2041	99.85

शनि अन्तर		
(26:10:2041 To 01:09:2044)		
शनि	08-04-2042	100.21
बुध	03-09-2042	100.66
केतु	02-11-2042	101.07
शुक्र	25-04-2043	101.23
सूर्य	16-06-2043	101.71
चन्द्रमा	11-09-2043	101.85
मंगल	10-11-2043	102.09
राहु	15-04-2044	102.25
बृहस्पति	01-09-2044	102.68

बुध अन्तर		
(01:09:2044 To 21:03:2047)		
बुध	11-01-2045	103.06
केतु	06-03-2045	103.42
शुक्र	08-08-2045	103.57
सूर्य	24-09-2045	104.00
चन्द्रमा	10-12-2045	104.12
मंगल	03-02-2046	104.34
राहु	22-06-2046	104.49
बृहस्पति	24-10-2046	104.87
शनि	21-03-2047	105.21

केतु अन्तर		
(21:03:2047 To 07:04:2048)		
केतु	12-04-2047	105.61
शुक्र	15-06-2047	105.67
सूर्य	04-07-2047	105.85
चन्द्रमा	05-08-2047	105.90
मंगल	27-08-2047	105.99
राहु	24-10-2047	106.05
बृहस्पति	14-12-2047	106.21
शनि	13-02-2048	106.35
बुध	07-04-2048	106.51

शुक्र अन्तर		
(07:04:2048 To 08:04:2051)		
शुक्र	07-10-2048	106.66
सूर्य	01-12-2048	107.16
चन्द्रमा	02-03-2049	107.31
मंगल	05-05-2049	107.56
राहु	17-10-2049	107.74
बृहस्पति	12-03-2050	108.19
शनि	01-09-2050	108.59
बुध	03-02-2051	109.06
केतु	08-04-2051	109.49

सूर्य अन्तर		
(08:04:2051 To 02:03:2052)		
सूर्य	24-04-2051	109.66
चन्द्रमा	22-05-2051	109.71
मंगल	10-06-2051	109.78
राहु	29-07-2051	109.83
बृहस्पति	11-09-2051	109.97
शनि	02-11-2051	110.09
बुध	19-12-2051	110.23
केतु	07-01-2052	110.36
शुक्र	02-03-2052	110.41

चन्द्रमा अन्तर		
(02:03:2052 To 01:09:2053)		
चन्द्रमा	16-04-2052	110.56
मंगल	18-05-2052	110.69
राहु	09-08-2052	110.77
बृहस्पति	21-10-2052	111.00
शनि	16-01-2053	111.20
बुध	03-04-2053	111.44
केतु	05-05-2053	111.65
शुक्र	05-08-2053	111.74
सूर्य	01-09-2053	111.99

मंगल अन्तर		
(01:09:2053 To 19:09:2054)		
मंगल	23-09-2053	112.06
राहु	20-11-2053	112.12
बृहस्पति	10-01-2054	112.28
शनि	12-03-2054	112.42
बुध	05-05-2054	112.59
केतु	27-05-2054	112.74
शुक्र	30-07-2054	112.80
सूर्य	18-08-2054	112.97
चन्द्रमा	19-09-2054	113.02

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

अष्टोत्तरी दशा

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:02:29) : गुरु : 3 व. 7 मा. 8 दि.

आपकी कुण्डली में अष्टोत्तरी दशा का कितिकादी सिद्धान्त प्रभावी हो रहा है।
राहु लग्न में स्थित नहीं है, और लग्नाधिपति से केन्द्र या त्रिकोन में स्थित है। अष्टोत्तरी दशा के कुण्डली में प्रभावी होने की यह स्थिति आपकी कुण्डली में अनुपस्थित है।
कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म। अष्टोत्तरी दशा के कुण्डली में प्रभावी होने की यह स्थिति आपकी कुण्डली में अनुपस्थित है।

बृहस्पति (19 वर्ष)

10/08/1941 To 19/03/1945

बारहवें	वृष	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
	रोहिणी (4)	7 , 10
विशेष	नक्षत्र	भावपति

बृहस्पति	-------	-------
राहु	-------	-------
शुक्र	-------	-------
सूर्य	-------	-------
चन्द्रमा	-------	-------
मंगल	-------	-------
बुध	15-06-1943	00.00
शनि	19-03-1945	01.85

राहु (12 वर्ष)

19/03/1945 To 19/03/1957

चौथे	कन्या	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
वक्री	उत्तरफाल्गु (2)	
विशेष	नक्षत्र	भावपति

राहु	19-07-1946	03.61
शुक्र	17-11-1948	04.94
सूर्य	19-07-1949	07.27
चन्द्रमा	19-03-1951	07.94
मंगल	07-02-1952	09.61
बुध	28-12-1953	10.50
शनि	06-02-1955	12.38
बृहस्पति	19-03-1957	13.50

शुक्र (21 वर्ष)

19/03/1957 To 19/03/1978

तीसरे	सिहं	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
स्वनक्षत्र	पुर्वफाल्गु (4)	12 , 5
विशेष	नक्षत्र	भावपति

शुक्र	18-04-1961	15.61
सूर्य	18-06-1962	19.69
चन्द्रमा	19-05-1965	20.86
मंगल	08-12-1966	23.77
बुध	29-03-1970	25.33
शनि	08-03-1972	28.63
बृहस्पति	17-11-1975	30.58
राहु	19-03-1978	34.27

सूर्य (6 वर्ष)

19/03/1978 To 18/03/1984

दूसरे	कर्क	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	अश्लेषा (3)	3
विशेष	नक्षत्र	भावपति

सूर्य	19-07-1978	36.61
चन्द्रमा	19-05-1979	36.94
मंगल	28-10-1979	37.77
बुध	08-10-1980	38.22
शनि	29-04-1981	39.16
बृहस्पति	19-05-1982	39.72
राहु	17-01-1983	40.77
शुक्र	18-03-1984	41.44

चन्द्रमा (15 वर्ष)

18/03/1984 To 19/03/1999

नौवें	कुम्भ	सम
भाव	राशि	संबंन्ध
	पूर्वाभाद (2)	2
विशेष	नक्षत्र	भावपति

चन्द्रमा	18-04-1986	42.61
मंगल	29-05-1987	44.69
बुध	08-10-1989	45.80
शनि	27-02-1991	48.16
बृहस्पति	18-10-1993	49.55
राहु	18-06-1995	52.19
शुक्र	19-05-1998	53.86
सूर्य	19-03-1999	56.77

मंगल (8 वर्ष)

19/03/1999 To 19/03/2007

दसवें	मीन	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	रेवती (3)	11 , 6
विशेष	नक्षत्र	भावपति

मंगल	21-10-1999	57.61
बुध	24-01-2001	58.20
शनि	21-10-2001	59.46
बृहस्पति	19-03-2003	60.20
राहु	07-02-2004	61.61
शुक्र	28-08-2005	62.50
सूर्य	06-02-2006	64.05
चन्द्रमा	19-03-2007	64.50

बुध (17 वर्ष)

19/03/2007 To 18/03/2024

दूसरे	कर्क	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
अस्त	पुष्य (4)	1 , 4
विशेष	नक्षत्र	भावपति

बुध	21-11-2009	65.61
शनि	18-06-2011	68.28
बृहस्पति	15-06-2014	69.86
राहु	05-05-2016	72.85
शुक्र	25-08-2019	74.74
सूर्य	04-08-2020	78.04
चन्द्रमा	14-12-2022	78.99
मंगल	18-03-2024	81.35

शनि (10 वर्ष)

18/03/2024 To 19/03/2034

बारहवें	वृष	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	कृतिका (3)	8 , 9
विशेष	नक्षत्र	भावपति

शनि	20-02-2025	82.61
बृहस्पति	24-11-2026	83.53
राहु	04-01-2028	85.29
शुक्र	14-12-2029	86.40
सूर्य	05-07-2030	88.35
चन्द्रमा	24-11-2031	88.90
मंगल	21-08-2032	90.29
बुध	19-03-2034	91.03

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बृहस्पति दशा

(10:08:1941 – 19:03:1945)

बृहस्पति अन्तर		
बृहस्पति	-------	--
राहु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
बुध	-------	--
शनि	-------	--

राहु अन्तर		
राहु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
बुध	-------	--
शनि	-------	--
बृहस्पति	-------	--

शुक्र अन्तर		
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
बुध	-------	--
शनि	-------	--
बृहस्पति	-------	--
राहु	-------	--

सूर्य अन्तर		
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
बुध	-------	--
शनि	-------	--
बृहस्पति	-------	--
राहु	-------	--
शुक्र	-------	--

चन्द्रमा अन्तर		
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
बुध	-------	--
शनि	-------	--
बृहस्पति	-------	--
राहु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--

मंगल अन्तर		
मंगल	-------	--
बुध	-------	--
शनि	-------	--
बृहस्पति	-------	--
राहु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--

बुध अन्तर (10:08:1941 To 15:06:1943)		
बुध	-------	--
शनि	-------	--
बृहस्पति	26-09-1941	00.00
राहु	25-01-1942	00.13
शुक्र	26-08-1942	00.46
सूर्य	25-10-1942	01.04
चन्द्रमा	26-03-1943	01.21
मंगल	15-06-1943	01.63

शनि अन्तर (15:06:1943 To 19:03:1945)		
शनि	13-08-1943	01.85
बृहस्पति	04-12-1943	02.01
राहु	14-02-1944	02.32
शुक्र	18-06-1944	02.52
सूर्य	24-07-1944	02.86
चन्द्रमा	21-10-1944	02.95
मंगल	08-12-1944	03.20
बुध	19-03-1945	03.33

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

राहु दशा

(19:03:1945 – 19:03:1957)

राहु अन्तर		
(19:03:1945 To 19:07:1946)		
राहु	12-05-1945	03.61
शुक्र	15-08-1945	03.75
सूर्य	11-09-1945	04.01
चन्द्रमा	17-11-1945	04.09
मंगल	23-12-1945	04.27
बुध	10-03-1946	04.37
शनि	24-04-1946	04.58
बृहस्पति	19-07-1946	04.71

शुक्र अन्तर		
(19:07:1946 To 17:11:1948)		
शुक्र	31-12-1946	04.94
सूर्य	17-02-1947	05.39
चन्द्रमा	15-06-1947	05.52
मंगल	17-08-1947	05.85
बुध	29-12-1947	06.02
शनि	17-03-1948	06.39
बृहस्पति	14-08-1948	06.60
राहु	17-11-1948	07.01

सूर्य अन्तर		
(17:11:1948 To 19:07:1949)		
सूर्य	01-12-1948	07.27
चन्द्रमा	04-01-1949	07.31
मंगल	22-01-1949	07.40
बुध	01-03-1949	07.45
शनि	23-03-1949	07.56
बृहस्पति	05-05-1949	07.62
राहु	01-06-1949	07.74
शुक्र	19-07-1949	07.81

चन्द्रमा अन्तर		
(19:07:1949 To 19:03:1951)		
चन्द्रमा	11-10-1949	07.94
मंगल	25-11-1949	08.17
बुध	01-03-1950	08.29
शनि	26-04-1950	08.56
बृहस्पति	11-08-1950	08.71
राहु	18-10-1950	09.00
शुक्र	13-02-1951	09.19
सूर्य	19-03-1951	09.51

मंगल अन्तर		
(19:03:1951 To 07:02:1952)		
मंगल	12-04-1951	09.61
बुध	02-06-1951	09.67
शनि	02-07-1951	09.81
बृहस्पति	28-08-1951	09.89
राहु	03-10-1951	10.05
शुक्र	05-12-1951	10.15
सूर्य	23-12-1951	10.32
चन्द्रमा	07-02-1952	10.37

बुध अन्तर		
(07:02:1952 To 28:12:1953)		
बुध	25-05-1952	10.50
शनि	28-07-1952	10.79
बृहस्पति	27-11-1952	10.97
राहु	12-02-1953	11.30
शुक्र	26-06-1953	11.51
सूर्य	03-08-1953	11.88
चन्द्रमा	07-11-1953	11.98
मंगल	28-12-1953	12.24

शनि अन्तर		
(28:12:1953 To 06:02:1955)		
शनि	03-02-1954	12.38
बृहस्पति	16-04-1954	12.49
राहु	31-05-1954	12.68
शुक्र	18-08-1954	12.81
सूर्य	09-09-1954	13.02
चन्द्रमा	05-11-1954	13.08
मंगल	05-12-1954	13.24
बुध	06-02-1955	13.32

बृहस्पति अन्तर		
(06:02:1955 To 19:03:1957)		
बृहस्पति	22-06-1955	13.50
राहु	16-09-1955	13.87
शुक्र	13-02-1956	14.10
सूर्य	26-03-1956	14.51
चन्द्रमा	12-07-1956	14.63
मंगल	07-09-1956	14.92
बुध	07-01-1957	15.08
शनि	19-03-1957	15.41

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शुक्र दशा

(19:03:1957 – 19:03:1978)

शुक्र अन्तर		
(19:03:1957 To 18:04:1961)		
शुक्र	03-01-1958	15.61
सूर्य	27-03-1958	16.40
चन्द्रमा	20-10-1958	16.63
मंगल	07-02-1959	17.19
बुध	30-09-1959	17.50
शनि	15-02-1960	18.14
बृहस्पति	04-11-1960	18.52
राहु	18-04-1961	19.24

सूर्य अन्तर		
(18:04:1961 To 18:06:1962)		
सूर्य	12-05-1961	19.69
चन्द्रमा	10-07-1961	19.75
मंगल	11-08-1961	19.92
बुध	17-10-1961	20.00
शनि	25-11-1961	20.19
बृहस्पति	08-02-1962	20.29
राहु	27-03-1962	20.50
शुक्र	18-06-1962	20.63

चन्द्रमा अन्तर		
(18:06:1962 To 19:05:1965)		
चन्द्रमा	13-11-1962	20.86
मंगल	31-01-1963	21.26
बुध	18-07-1963	21.48
शनि	24-10-1963	21.94
बृहस्पति	29-04-1964	22.21
राहु	25-08-1964	22.72
शुक्र	21-03-1965	23.04
सूर्य	19-05-1965	23.61

मंगल अन्तर		
(19:05:1965 To 08:12:1966)		
मंगल	30-06-1965	23.77
बुध	27-09-1965	23.89
शनि	19-11-1965	24.13
बृहस्पति	27-02-1966	24.28
राहु	01-05-1966	24.55
शुक्र	19-08-1966	24.72
सूर्य	20-09-1966	25.03
चन्द्रमा	08-12-1966	25.11

बुध अन्तर		
(08:12:1966 To 29:03:1970)		
बुध	16-06-1967	25.33
शनि	05-10-1967	25.85
बृहस्पति	05-05-1968	26.16
राहु	16-09-1968	26.74
शुक्र	09-05-1969	27.10
सूर्य	15-07-1969	27.75
चन्द्रमा	30-12-1969	27.93
मंगल	29-03-1970	28.39

शनि अन्तर		
(29:03:1970 To 08:03:1972)		
शनि	03-06-1970	28.63
बृहस्पति	06-10-1970	28.81
राहु	24-12-1970	29.16
शुक्र	11-05-1971	29.37
सूर्य	19-06-1971	29.75
चन्द्रमा	26-09-1971	29.86
मंगल	17-11-1971	30.13
बुध	08-03-1972	30.27

बृहस्पति अन्तर		
(08:03:1972 To 17:11:1975)		
बृहस्पति	01-11-1972	30.58
राहु	31-03-1973	31.23
शुक्र	18-12-1973	31.64
सूर्य	03-03-1974	32.36
चन्द्रमा	06-09-1974	32.56
मंगल	15-12-1974	33.08
बुध	15-07-1975	33.35
शनि	17-11-1975	33.93

राहु अन्तर		
(17:11:1975 To 19:03:1978)		
राहु	20-02-1976	34.27
शुक्र	04-08-1976	34.53
सूर्य	21-09-1976	34.99
चन्द्रमा	17-01-1977	35.12
मंगल	21-03-1977	35.44
बुध	02-08-1977	35.61
शनि	20-10-1977	35.98
बृहस्पति	19-03-1978	36.20

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

सूर्य दशा

(19:03:1978 – 18:03:1984)

सूर्य अन्तर		
(19:03:1978 To 19:07:1978)		
सूर्य	26-03-1978	36.61
चन्द्रमा	12-04-1978	36.63
मंगल	21-04-1978	36.67
बुध	10-05-1978	36.70
शनि	21-05-1978	36.75
बृहस्पति	11-06-1978	36.78
राहु	25-06-1978	36.84
शुक्र	19-07-1978	36.88

चन्द्रमा अन्तर		
(19:07:1978 To 19:05:1979)		
चन्द्रमा	30-08-1978	36.94
मंगल	21-09-1978	37.06
बुध	08-11-1978	37.12
शनि	06-12-1978	37.25
बृहस्पति	29-01-1979	37.33
राहु	04-03-1979	37.47
शुक्र	02-05-1979	37.56
सूर्य	19-05-1979	37.73

मंगल अन्तर		
(19:05:1979 To 28:10:1979)		
मंगल	31-05-1979	37.77
बुध	25-06-1979	37.81
शनि	10-07-1979	37.88
बृहस्पति	08-08-1979	37.92
राहु	26-08-1979	38.00
शुक्र	26-09-1979	38.04
सूर्य	06-10-1979	38.13
चन्द्रमा	28-10-1979	38.16

बुध अन्तर		
(28:10:1979 To 08:10:1980)		
बुध	21-12-1979	38.22
शनि	22-01-1980	38.37
बृहस्पति	23-03-1980	38.45
राहु	30-04-1980	38.62
शुक्र	07-07-1980	38.72
सूर्य	26-07-1980	38.91
चन्द्रमा	12-09-1980	38.96
मंगल	08-10-1980	39.09

शनि अन्तर		
(08:10:1980 To 29:04:1981)		
शनि	26-10-1980	39.16
बृहस्पति	01-12-1980	39.21
राहु	24-12-1980	39.31
शुक्र	01-02-1981	39.37
सूर्य	12-02-1981	39.48
चन्द्रमा	13-03-1981	39.51
मंगल	28-03-1981	39.59
बुध	29-04-1981	39.63

बृहस्पति अन्तर		
(29:04:1981 To 19:05:1982)		
बृहस्पति	05-07-1981	39.72
राहु	17-08-1981	39.90
शुक्र	31-10-1981	40.02
सूर्य	21-11-1981	40.23
चन्द्रमा	14-01-1982	40.28
मंगल	11-02-1982	40.43
बुध	13-04-1982	40.51
शनि	19-05-1982	40.68

राहु अन्तर		
(19:05:1982 To 17:01:1983)		
राहु	15-06-1982	40.77
शुक्र	01-08-1982	40.85
सूर्य	15-08-1982	40.98
चन्द्रमा	17-09-1982	41.01
मंगल	06-10-1982	41.11
बुध	13-11-1982	41.16
शनि	05-12-1982	41.26
बृहस्पति	17-01-1983	41.32

शुक्र अन्तर		
(17:01:1983 To 18:03:1984)		
शुक्र	10-04-1983	41.44
सूर्य	04-05-1983	41.67
चन्द्रमा	02-07-1983	41.73
मंगल	02-08-1983	41.89
बुध	08-10-1983	41.98
शनि	17-11-1983	42.16
बृहस्पति	31-01-1984	42.27
राहु	18-03-1984	42.48

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

चन्द्रमा दशा

(18:03:1984 – 19:03:1999)

चन्द्रमा अन्तर		
(18:03:1984 To 18:04:1986)		
चन्द्रमा	02-07-1984	42.61
मंगल	28-08-1984	42.90
बुध	26-12-1984	43.05
शनि	06-03-1985	43.38
बृहस्पति	18-07-1985	43.57
राहु	10-10-1985	43.94
शुक्र	07-03-1986	44.17
सूर्य	18-04-1986	44.57

मंगल अन्तर		
(18:04:1986 To 29:05:1987)		
मंगल	18-05-1986	44.69
बुध	21-07-1986	44.77
शनि	28-08-1986	44.95
बृहस्पति	07-11-1986	45.05
राहु	22-12-1986	45.25
शुक्र	11-03-1987	45.37
सूर्य	03-04-1987	45.58
चन्द्रमा	29-05-1987	45.65

बुध अन्तर		
(29:05:1987 To 08:10:1989)		
बुध	12-10-1987	45.80
शनि	30-12-1987	46.17
बृहस्पति	30-05-1988	46.39
राहु	03-09-1988	46.81
शुक्र	18-02-1989	47.07
सूर्य	07-04-1989	47.53
चन्द्रमा	05-08-1989	47.66
मंगल	08-10-1989	47.99

शनि अन्तर		
(08:10:1989 To 27:02:1991)		
शनि	24-11-1989	48.16
बृहस्पति	21-02-1990	48.29
राहु	18-04-1990	48.54
शुक्र	26-07-1990	48.69
सूर्य	23-08-1990	48.96
चन्द्रमा	01-11-1990	49.04
मंगल	09-12-1990	49.23
बुध	27-02-1991	49.33

बृहस्पति अन्तर		
(27:02:1991 To 18:10:1993)		
बृहस्पति	15-08-1991	49.55
राहु	30-11-1991	50.02
शुक्र	05-06-1992	50.31
सूर्य	29-07-1992	50.82
चन्द्रमा	10-12-1992	50.97
मंगल	19-02-1993	51.33
बुध	21-07-1993	51.53
शनि	18-10-1993	51.95

राहु अन्तर		
(18:10:1993 To 18:06:1995)		
राहु	24-12-1993	52.19
शुक्र	22-04-1994	52.38
सूर्य	26-05-1994	52.70
चन्द्रमा	18-08-1994	52.79
मंगल	02-10-1994	53.02
बुध	06-01-1995	53.15
शनि	03-03-1995	53.41
बृहस्पति	18-06-1995	53.56

शुक्र अन्तर		
(18:06:1995 To 19:05:1998)		
शुक्र	11-01-1996	53.86
सूर्य	11-03-1996	54.42
चन्द्रमा	06-08-1996	54.59
मंगल	24-10-1996	54.99
बुध	10-04-1997	55.21
शनि	17-07-1997	55.67
बृहस्पति	21-01-1998	55.94
राहु	19-05-1998	56.45

सूर्य अन्तर		
(19:05:1998 To 19:03:1999)		
सूर्य	05-06-1998	56.77
चन्द्रमा	17-07-1998	56.82
मंगल	08-08-1998	56.94
बुध	25-09-1998	57.00
शनि	24-10-1998	57.13
बृहस्पति	16-12-1998	57.21
राहु	19-01-1999	57.35
शुक्र	19-03-1999	57.44

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

मंगल दशा

(19:03:1999 – 19:03:2007)

मंगल अन्तर

(19:03:1999 To 21:10:1999)

मंगल	04-04-1999	57.61
बुध	08-05-1999	57.65
शनि	28-05-1999	57.74
बृहस्पति	05-07-1999	57.80
राहु	29-07-1999	57.90
शुक्र	09-09-1999	57.97
सूर्य	21-09-1999	58.08
चन्द्रमा	21-10-1999	58.12

बुध अन्तर

(21:10:1999 To 24:01:2001)

बुध	02-01-2000	58.20
शनि	13-02-2000	58.40
बृहस्पति	04-05-2000	58.51
राहु	25-06-2000	58.74
शुक्र	22-09-2000	58.88
सूर्य	18-10-2000	59.12
चन्द्रमा	21-12-2000	59.19
मंगल	24-01-2001	59.37

शनि अन्तर

(24:01:2001 To 21:10:2001)

शनि	18-02-2001	59.46
बृहस्पति	07-04-2001	59.53
राहु	07-05-2001	59.66
शुक्र	28-06-2001	59.74
सूर्य	13-07-2001	59.88
चन्द्रमा	20-08-2001	59.92
मंगल	09-09-2001	60.03
बुध	21-10-2001	60.08

बृहस्पति अन्तर

(21:10:2001 To 19:03:2003)

बृहस्पति	20-01-2002	60.20
राहु	18-03-2002	60.45
शुक्र	26-06-2002	60.60
सूर्य	24-07-2002	60.88
चन्द्रमा	04-10-2002	60.95
मंगल	11-11-2002	61.15
बुध	30-01-2003	61.25
शनि	19-03-2003	61.48

राहु अन्तर

(19:03:2003 To 07:02:2004)

राहु	24-04-2003	61.61
शुक्र	26-06-2003	61.71
सूर्य	14-07-2003	61.88
चन्द्रमा	28-08-2003	61.93
मंगल	21-09-2003	62.05
बुध	11-11-2003	62.12
शनि	11-12-2003	62.26
बृहस्पति	07-02-2004	62.34

शुक्र अन्तर

(07:02:2004 To 28:08:2005)

शुक्र	27-05-2004	62.50
सूर्य	28-06-2004	62.80
चन्द्रमा	15-09-2004	62.88
मंगल	27-10-2004	63.10
बुध	25-01-2005	63.22
शनि	18-03-2005	63.46
बृहस्पति	26-06-2005	63.60
राहु	28-08-2005	63.88

सूर्य अन्तर

(28:08:2005 To 06:02:2006)

सूर्य	06-09-2005	64.05
चन्द्रमा	29-09-2005	64.08
मंगल	11-10-2005	64.14
बुध	05-11-2005	64.17
शनि	20-11-2005	64.24
बृहस्पति	19-12-2005	64.28
राहु	06-01-2006	64.36
शुक्र	06-02-2006	64.41

चन्द्रमा अन्तर

(06:02:2006 To 19:03:2007)

चन्द्रमा	04-04-2006	64.50
मंगल	04-05-2006	64.65
बुध	07-07-2006	64.73
शनि	13-08-2006	64.91
बृहस्पति	24-10-2006	65.01
राहु	08-12-2006	65.21
शुक्र	24-02-2007	65.33
सूर्य	19-03-2007	65.54

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बुध दशा

(19:03:2007 – 18:03:2024)

बुध अन्तर		
(19:03:2007 To 21:11:2009)		
बुध	20-08-2007	65.61
शनि	18-11-2007	66.03
बृहस्पति	08-05-2008	66.28
राहु	25-08-2008	66.75
शुक्र	03-03-2009	67.04
सूर्य	27-04-2009	67.56
चन्द्रमा	09-09-2009	67.71
मंगल	21-11-2009	68.08

शनि अन्तर		
(21:11:2009 To 18:06:2011)		
शनि	13-01-2010	68.28
बृहस्पति	24-04-2010	68.43
राहु	27-06-2010	68.71
शुक्र	17-10-2010	68.88
सूर्य	17-11-2010	69.19
चन्द्रमा	05-02-2011	69.27
मंगल	20-03-2011	69.49
बुध	18-06-2011	69.61

बृहस्पति अन्तर		
(18:06:2011 To 15:06:2014)		
बृहस्पति	27-12-2011	69.86
राहु	27-04-2012	70.38
शुक्र	26-11-2012	70.71
सूर्य	25-01-2013	71.30
चन्द्रमा	26-06-2013	71.46
मंगल	15-09-2013	71.88
बुध	06-03-2014	72.10
शनि	15-06-2014	72.57

राहु अन्तर		
(15:06:2014 To 05:05:2016)		
राहु	30-08-2014	72.85
शुक्र	12-01-2015	73.06
सूर्य	19-02-2015	73.42
चन्द्रमा	26-05-2015	73.53
मंगल	16-07-2015	73.79
बुध	01-11-2015	73.93
शनि	04-01-2016	74.23
बृहस्पति	05-05-2016	74.40

शुक्र अन्तर		
(05:05:2016 To 25:08:2019)		
शुक्र	26-12-2016	74.74
सूर्य	03-03-2017	75.38
चन्द्रमा	18-08-2017	75.56
मंगल	15-11-2017	76.02
बुध	24-05-2018	76.27
शनि	13-09-2018	76.79
बृहस्पति	13-04-2019	77.09
राहु	25-08-2019	77.67

सूर्य अन्तर		
(25:08:2019 To 04:08:2020)		
सूर्य	13-09-2019	78.04
चन्द्रमा	31-10-2019	78.09
मंगल	25-11-2019	78.23
बुध	19-01-2020	78.30
शनि	20-02-2020	78.44
बृहस्पति	21-04-2020	78.53
राहु	29-05-2020	78.70
शुक्र	04-08-2020	78.80

चन्द्रमा अन्तर		
(04:08:2020 To 14:12:2022)		
चन्द्रमा	02-12-2020	78.99
मंगल	04-02-2021	79.31
बुध	20-06-2021	79.49
शनि	08-09-2021	79.86
बृहस्पति	06-02-2022	80.08
राहु	13-05-2022	80.49
शुक्र	27-10-2022	80.76
सूर्य	14-12-2022	81.22

मंगल अन्तर		
(14:12:2022 To 18:03:2024)		
मंगल	17-01-2023	81.35
बुध	31-03-2023	81.44
शनि	12-05-2023	81.64
बृहस्पति	01-08-2023	81.76
राहु	21-09-2023	81.98
शुक्र	20-12-2023	82.12
सूर्य	14-01-2024	82.36
चन्द्रमा	18-03-2024	82.43

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शनि दशा

(18:03:2024 – 19:03:2034)

शनि अन्तर

(18:03:2024 To 20:02:2025)

शनि	19-04-2024	82.61
बृहस्पति	17-06-2024	82.69
राहु	25-07-2024	82.86
शुक्र	29-09-2024	82.96
सूर्य	18-10-2024	83.14
चन्द्रमा	04-12-2024	83.19
मंगल	29-12-2024	83.32
बुध	20-02-2025	83.39

बृहस्पति अन्तर

(20:02:2025 To 24:11:2026)

बृहस्पति	13-06-2025	83.53
राहु	23-08-2025	83.84
शुक्र	26-12-2025	84.04
सूर्य	31-01-2026	84.38
चन्द्रमा	30-04-2026	84.48
मंगल	17-06-2026	84.72
बुध	26-09-2026	84.85
शनि	24-11-2026	85.13

राहु अन्तर

(24:11:2026 To 04:01:2028)

राहु	08-01-2027	85.29
शुक्र	28-03-2027	85.42
सूर्य	20-04-2027	85.63
चन्द्रमा	15-06-2027	85.69
मंगल	15-07-2027	85.85
बुध	17-09-2027	85.93
शनि	24-10-2027	86.10
बृहस्पति	04-01-2028	86.21

शुक्र अन्तर

(04:01:2028 To 14:12:2029)

शुक्र	21-05-2028	86.40
सूर्य	30-06-2028	86.78
चन्द्रमा	06-10-2028	86.89
मंगल	28-11-2028	87.16
बुध	20-03-2029	87.30
शनि	25-05-2029	87.61
बृहस्पति	26-09-2029	87.79
राहु	14-12-2029	88.13

सूर्य अन्तर

(14:12:2029 To 05:07:2030)

सूर्य	26-12-2029	88.35
चन्द्रमा	23-01-2030	88.38
मंगल	07-02-2030	88.46
बुध	11-03-2030	88.50
शनि	29-03-2030	88.58
बृहस्पति	04-05-2030	88.64
राहु	27-05-2030	88.73
शुक्र	05-07-2030	88.79

चन्द्रमा अन्तर

(05:07:2030 To 24:11:2031)

चन्द्रमा	14-09-2030	88.90
मंगल	21-10-2030	89.10
बुध	09-01-2031	89.20
शनि	25-02-2031	89.42
बृहस्पति	25-05-2031	89.55
राहु	20-07-2031	89.79
शुक्र	27-10-2031	89.94
सूर्य	24-11-2031	90.21

मंगल अन्तर

(24:11:2031 To 21:08:2032)

मंगल	14-12-2031	90.29
बुध	26-01-2032	90.35
शनि	20-02-2032	90.46
बृहस्पति	08-04-2032	90.53
राहु	08-05-2032	90.66
शुक्र	29-06-2032	90.74
सूर्य	14-07-2032	90.89
चन्द्रमा	21-08-2032	90.93

बुध अन्तर

(21:08:2032 To 19:03:2034)

बुध	20-11-2032	91.03
शनि	12-01-2033	91.28
बृहस्पति	23-04-2033	91.43
राहु	26-06-2033	91.70
शुक्र	16-10-2033	91.88
सूर्य	17-11-2033	92.18
चन्द्रमा	04-02-2034	92.27
मंगल	19-03-2034	92.49

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

योगिनी दशा – 1

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:02:29) : भ्रमरी (मंगल) : 2 व. 3 मा. 10 दि.

भ्रमरी (मंगल) (पूर्वाभाद्र) दशा	
10:08:1941 To 19:11:1943	
भ्रमरी (मंगल)	19:11:1939
भद्रिका (बुध)	30:04:1940
उल्का (शनि)	19:11:1940
सिद्धा (शुक्र)	20:07:1941
संकटा (राहु)	30:04:1942
मंगला (चन्द्रमा)	21:03:1943
पिंगला (सुर्य)	30:04:1943
धन्या (बृहस्पति)	20:07:1943

भद्रिका (बुध) (उत्तरभाद्र) दशा	
19:11:1943 To 19:11:1948	
भद्रिका (बुध)	19:11:1943
उल्का (शनि)	30:07:1944
सिद्धा (शुक्र)	31:05:1945
संकटा (राहु)	21:05:1946
मंगला (चन्द्रमा)	30:06:1947
पिंगला (सुर्य)	20:08:1947
धन्या (बृहस्पति)	29:11:1947
भ्रमरी (मंगल)	30:04:1948

उल्का (शनि) (रेवाति) दशा	
19:11:1948 To 19:11:1954	
उल्का (शनि)	19:11:1948
सिद्धा (शुक्र)	19:11:1949
संकटा (राहु)	19:01:1951
मंगला (चन्द्रमा)	20:05:1952
पिंगला (सुर्य)	20:07:1952
धन्या (बृहस्पति)	19:11:1952
भ्रमरी (मंगल)	21:05:1953
भद्रिका (बुध)	19:01:1954

सिद्धा (शुक्र) (अश्विनी) दशा	
19:11:1954 To 19:11:1961	
सिद्धा (शुक्र)	19:11:1954
संकटा (राहु)	30:03:1956
मंगला (चन्द्रमा)	20:10:1957
पिंगला (सुर्य)	30:12:1957
धन्या (बृहस्पति)	21:05:1958
भ्रमरी (मंगल)	19:12:1958
भद्रिका (बुध)	29:09:1959
उल्का (शनि)	19:09:1960

संकटा (राहु) (भरणी) दशा	
19:11:1961 To 19:11:1969	
संकटा (राहु)	19:11:1961
मंगला (चन्द्रमा)	30:08:1963
पिंगला (सुर्य)	19:11:1963
धन्या (बृहस्पति)	30:04:1964
भ्रमरी (मंगल)	30:12:1964
भद्रिका (बुध)	19:11:1965
उल्का (शनि)	30:12:1966
सिद्धा (शुक्र)	30:04:1968

मंगला (चन्द्रमा) (कृतिका) दशा	
19:11:1969 To 19:11:1970	
मंगला (चन्द्रमा)	19:11:1969
पिंगला (सुर्य)	29:11:1969
धन्या (बृहस्पति)	19:12:1969
भ्रमरी (मंगल)	19:01:1970
भद्रिका (बुध)	28:02:1970
उल्का (शनि)	20:04:1970
सिद्धा (शुक्र)	20:06:1970
संकटा (राहु)	30:08:1970

पिंगला (सुर्य) (रोहिणी) दशा	
19:11:1970 To 19:11:1972	
पिंगला (सुर्य)	19:11:1970
धन्या (बृहस्पति)	30:12:1970
भ्रमरी (मंगल)	28:02:1971
भद्रिका (बुध)	21:05:1971
उल्का (शनि)	30:08:1971
सिद्धा (शुक्र)	30:12:1971
संकटा (राहु)	20:05:1972
मंगला (चन्द्रमा)	30:10:1972

धन्या (बृहस्पति) (मृगशिरा) दशा	
19:11:1972 To 19:11:1975	
धन्या (बृहस्पति)	19:11:1972
भ्रमरी (मंगल)	18:02:1973
भद्रिका (बुध)	20:06:1973
उल्का (शनि)	19:11:1973
सिद्धा (शुक्र)	21:05:1974
संकटा (राहु)	19:12:1974
मंगला (चन्द्रमा)	20:08:1975
पिंगला (सुर्य)	19:09:1975

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

योगिनी दशा – 2

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:02:29) : भ्रमरी (मंगल) : 2 व. 3 मा. 10 दि.

भ्रमरी (मंगल) (अद्रिा) दशा	
19:11:1975 To 19:11:1979	
भ्रमरी (मंगल)	19:11:1975
भद्रिका (बुध)	30:04:1976
उल्का (शनि)	19:11:1976
सिद्धा (शुक्र)	20:07:1977
संकटा (राहु)	30:04:1978
मंगला (चन्द्रमा)	21:03:1979
पिंगला (सुर्य)	30:04:1979
धन्या (बृहस्पति)	20:07:1979

भद्रिका (बुध) (पुनर्वसु) दशा	
19:11:1979 To 19:11:1984	
भद्रिका (बुध)	19:11:1979
उल्का (शनि)	30:07:1980
सिद्धा (शुक्र)	31:05:1981
संकटा (राहु)	21:05:1982
मंगला (चन्द्रमा)	30:06:1983
पिंगला (सुर्य)	20:08:1983
धन्या (बृहस्पति)	29:11:1983
भ्रमरी (मंगल)	30:04:1984

उल्का (शनि) (पु) दशा	
19:11:1984 To 19:11:1990	
उल्का (शनि)	19:11:1984
सिद्धा (शुक्र)	19:11:1985
संकटा (राहु)	19:01:1987
मंगला (चन्द्रमा)	20:05:1988
पिंगला (सुर्य)	20:07:1988
धन्या (बृहस्पति)	19:11:1988
भ्रमरी (मंगल)	21:05:1989
भद्रिका (बुध)	19:01:1990

सिद्धा (शुक्र) (अश्लेा) दशा	
19:11:1990 To 19:11:1997	
सिद्धा (शुक्र)	19:11:1990
संकटा (राहु)	30:03:1992
मंगला (चन्द्रमा)	20:10:1993
पिंगला (सुर्य)	30:12:1993
धन्या (बृहस्पति)	21:05:1994
भ्रमरी (मंगल)	19:12:1994
भद्रिका (बुध)	29:09:1995
उल्का (शनि)	19:09:1996

संकटा (राहु) (मघा) दशा	
19:11:1997 To 19:11:2005	
संकटा (राहु)	19:11:1997
मंगला (चन्द्रमा)	30:08:1999
पिंगला (सुर्य)	19:11:1999
धन्या (बृहस्पति)	30:04:2000
भ्रमरी (मंगल)	30:12:2000
भद्रिका (बुध)	19:11:2001
उल्का (शनि)	30:12:2002
सिद्धा (शुक्र)	30:04:2004

मंगला (चन्द्रमा) (पुर्वफाल्गुनी) दशा	
19:11:2005 To 19:11:2006	
मंगला (चन्द्रमा)	19:11:2005
पिंगला (सुर्य)	29:11:2005
धन्या (बृहस्पति)	19:12:2005
भ्रमरी (मंगल)	19:01:2006
भद्रिका (बुध)	28:02:2006
उल्का (शनि)	20:04:2006
सिद्धा (शुक्र)	20:06:2006
संकटा (राहु)	30:08:2006

पिंगला (सुर्य) (उत्तरफाल्गुनी) दशा	
19:11:2006 To 19:11:2008	
पिंगला (सुर्य)	19:11:2006
धन्या (बृहस्पति)	30:12:2006
भ्रमरी (मंगल)	28:02:2007
भद्रिका (बुध)	21:05:2007
उल्का (शनि)	30:08:2007
सिद्धा (शुक्र)	30:12:2007
संकटा (राहु)	20:05:2008
मंगला (चन्द्रमा)	30:10:2008

धन्या (बृहस्पति) (हस्ता) दशा	
19:11:2008 To 19:11:2011	
धन्या (बृहस्पति)	19:11:2008
भ्रमरी (मंगल)	18:02:2009
भद्रिका (बुध)	20:06:2009
उल्का (शनि)	19:11:2009
सिद्धा (शुक्र)	21:05:2010
संकटा (राहु)	19:12:2010
मंगला (चन्द्रमा)	20:08:2011
पिंगला (सुर्य)	19:09:2011

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

योगिनी दशा – 3

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:02:29) : भ्रमरी (मंगल) : 2 व. 3 मा. 10 दि.

भ्रमरी (मंगल) (चित्रा) दशा	
19:11:2011 To 19:11:2015	
भ्रमरी (मंगल)	19:11:2011
भद्रिका (बुध)	30:04:2012
उल्का (शनि)	19:11:2012
सिद्धा (शुक्र)	20:07:2013
संकटा (राहु)	30:04:2014
मंगला (चन्द्रमा)	21:03:2015
पिंगला (सुर्य)	30:04:2015
धन्या (बृहस्पति)	20:07:2015

भद्रिका (बुध) (स्वाति) दशा	
19:11:2015 To 19:11:2020	
भद्रिका (बुध)	19:11:2015
उल्का (शनि)	30:07:2016
सिद्धा (शुक्र)	31:05:2017
संकटा (राहु)	21:05:2018
मंगला (चन्द्रमा)	30:06:2019
पिंगला (सुर्य)	20:08:2019
धन्या (बृहस्पति)	29:11:2019
भ्रमरी (मंगल)	30:04:2020

उल्का (शनि) (विशाखा) दशा	
19:11:2020 To 19:11:2026	
उल्का (शनि)	19:11:2020
सिद्धा (शुक्र)	19:11:2021
संकटा (राहु)	19:01:2023
मंगला (चन्द्रमा)	20:05:2024
पिंगला (सुर्य)	20:07:2024
धन्या (बृहस्पति)	19:11:2024
भ्रमरी (मंगल)	21:05:2025
भद्रिका (बुध)	19:01:2026

सिद्धा (शुक्र) (अनुराधा) दशा	
19:11:2026 To 19:11:2033	
सिद्धा (शुक्र)	19:11:2026
संकटा (राहु)	30:03:2028
मंगला (चन्द्रमा)	20:10:2029
पिंगला (सुर्य)	30:12:2029
धन्या (बृहस्पति)	21:05:2030
भ्रमरी (मंगल)	19:12:2030
भद्रिका (बुध)	29:09:2031
उल्का (शनि)	19:09:2032

संकटा (राहु) (ज्येश्ठा) दशा	
19:11:2033 To 19:11:2041	
संकटा (राहु)	19:11:2033
मंगला (चन्द्रमा)	30:08:2035
पिंगला (सुर्य)	19:11:2035
धन्या (बृहस्पति)	30:04:2036
भ्रमरी (मंगल)	30:12:2036
भद्रिका (बुध)	19:11:2037
उल्का (शनि)	30:12:2038
सिद्धा (शुक्र)	30:04:2040

मंगला (चन्द्रमा) (मूला) दशा	
19:11:2041 To 19:11:2042	
मंगला (चन्द्रमा)	19:11:2041
पिंगला (सुर्य)	29:11:2041
धन्या (बृहस्पति)	19:12:2041
भ्रमरी (मंगल)	19:01:2042
भद्रिका (बुध)	28:02:2042
उल्का (शनि)	20:04:2042
सिद्धा (शुक्र)	20:06:2042
संकटा (राहु)	30:08:2042

पिंगला (सुर्य) (पूर्वाशाढ़) दशा	
19:11:2042 To 19:11:2044	
पिंगला (सुर्य)	19:11:2042
धन्या (बृहस्पति)	30:12:2042
भ्रमरी (मंगल)	28:02:2043
भद्रिका (बुध)	21:05:2043
उल्का (शनि)	30:08:2043
सिद्धा (शुक्र)	30:12:2043
संकटा (राहु)	20:05:2044
मंगला (चन्द्रमा)	30:10:2044

धन्या (बृहस्पति) (उत्तराशाढ़) दशा	
19:11:2044 To 19:11:2047	
धन्या (बृहस्पति)	19:11:2044
भ्रमरी (मंगल)	18:02:2045
भद्रिका (बुध)	20:06:2045
उल्का (शनि)	19:11:2045
सिद्धा (शुक्र)	21:05:2046
संकटा (राहु)	19:12:2046
मंगला (चन्द्रमा)	20:08:2047
पिंगला (सुर्य)	19:09:2047

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

गोचर शनि

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर। सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

(गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चंद्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।)

प्रथम चक्र

साढ़ेसाती चक्र	गोचर राशि में	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व—म—दि)	शनि मूर्ति
कंटक शनि	वृष	14/12/1941	14/12/1941	0.0 y.0.0 m.0 d.	लौह
कंटक शनि	वृष	03/03/1942	05/08/1943	1.0 y.5.0 m.3 d.	ताम्र
कंटक शनि	वृष	17/12/1943	23/04/1944	0.0 y.4.0 m.6 d.	स्वर्ण
अष्टम शनि	कन्या	20/09/1950	25/11/1952	2.0 y.2.0 m.6 d.	ताम्र
अष्टम शनि	कन्या	24/04/1953	21/08/1953	0.0 y.3.0 m.28 d.	रजत

द्वितिय चक्र

साढ़ेसाती चक्र	गोचर राशि में	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व—म—दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	मक.	02/02/1961	17/09/1961	0.0 y.7.0 m.14 d.	स्वर्ण
प्रथम ढ़ैय्या	मक.	08/10/1961	27/01/1964	2.0 y.3.0 m.20 d.	स्वर्ण
द्वितिय ढ़ैय्या	कुम्भ	27/01/1964	09/04/1966	2.0 y.2.0 m.12 d.	रजत
द्वितिय ढ़ैय्या	कुम्भ	03/11/1966	20/12/1966	0.0 y.1.0 m.17 d.	रजत
तृतिय ढ़ैय्या	मीन	09/04/1966	03/11/1966	0.0 y.6.0 m.26 d.	रजत
तृतिय ढ़ैय्या	मीन	20/12/1966	17/06/1968	1.0 y.5.0 m.28 d.	स्वर्ण
तृतिय ढ़ैय्या	मीन	28/09/1968	07/03/1969	0.0 y.5.0 m.8 d.	रजत
कंटक शनि	वृष	28/04/1971	10/06/1973	2.0 y.1.0 m.13 d.	स्वर्ण
अष्टम शनि	कन्या	04/11/1979	15/03/1980	0.0 y.4.0 m.10 d.	स्वर्ण
अष्टम शनि	कन्या	27/07/1980	06/10/1982	2.0 y.2.0 m.10 d.	रजत

तृतिय चक्र

साढ़ेसाती चक्र	गोचर राशि में	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व—म—दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	मक.	21/03/1990	20/06/1990	0.0 y.3.0 m.0 d.	रजत
प्रथम ढ़ैय्या	मक.	15/12/1990	05/03/1993	2.0 y.2.0 m.19 d.	ताम्र
प्रथम ढ़ैय्या	मक.	15/10/1993	10/11/1993	0.0 y.0.0 m.26 d.	रजत
द्वितिय ढ़ैय्या	कुम्भ	05/03/1993	15/10/1993	0.0 y.7.0 m.11 d.	लौह
द्वितिय ढ़ैय्या	कुम्भ	10/11/1993	02/06/1995	1.0 y.6.0 m.22 d.	ताम्र
द्वितिय ढ़ैय्या	कुम्भ	10/08/1995	16/02/1996	0.0 y.6.0 m.8 d.	रजत
तृतिय ढ़ैय्या	मीन	02/06/1995	10/08/1995	0.0 y.2.0 m.9 d.	ताम्र
तृतिय ढ़ैय्या	मीन	16/02/1996	17/04/1998	2.0 y.1.0 m.30 d.	लौह
कंटक शनि	वृष	07/06/2000	23/07/2002	2.0 y.1.0 m.15 d.	स्वर्ण
कंटक शनि	वृष	08/01/2003	07/04/2003	0.0 y.2.0 m.28 d.	लौह
अष्टम शनि	कन्या	10/09/2009	15/11/2011	2.0 y.2.0 m.6 d.	स्वर्ण
अष्टम शनि	कन्या	16/05/2012	04/08/2012	0.0 y.2.0 m.19 d.	ताम्र

कुण्डली में प्रभावी सर्वाधिक लाभकारी राजयोग

♀	पंचमेश शुक्र	भाव संख्या – 3
यह ग्रह स्थिति संचार, अधिगम और छोटी यात्राओं पर लागू रचनात्मकता और बुद्धिमत्ता को इंगित करता है, जिससे प्रायः विभिन्न क्षेत्रों में सफलता मिलती है और विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने की क्षमता मिलती है।		
☽	द्वितियेश चन्द्रमा	भाव संख्या – 9
यह ग्रह स्थिति उच्च शिक्षा, विदेश यात्रा या आध्यात्मिक गतिविधियों के माध्यम से धन और वित्तीय स्थिरता में लाभ का संकेत देती है।		

कुण्डली में प्रभावी सर्वाधिक अशुभ योग

♄	नवमेश शनि	भाव संख्या – 12
यह योग उच्च शिक्षा, विदेश यात्रा या आध्यात्मिकता से संबंधित मामलों में असफलताओं या हानि का संकेत देता है, जो प्रायः खर्चों या अलगाव के कारण होता है।		
♃	सप्तमेश बृहस्पति	भाव संख्या – 12
यह योग साझेदारी, विवाह, या व्यावसायिक सहकारिता में चुनौतियों, हानि या अलगाव का संकेत देता है, जो प्रायः खर्चों, विदेश यात्रा या आध्यात्मिक गतिविधियों से संबंधित होता है।		
♃	दशमेश बृहस्पति	भाव संख्या – 12
यह ग्रह स्थिति जातक के व्यावसायिक जीवन या सामाजिक स्थिति में चुनौतियों, हानि या अलगाव का संकेत देती है, जो प्रायः खर्चों, विदेश यात्रा या आध्यात्मिक गतिविधियों से संबंधित होता है।		
♂	षष्ठेश मंगल	भाव संख्या – 10
यह ग्रह स्थिति संघर्ष, स्वास्थ्य समस्याओं या ऋण के कारण जातक के पेशेवर जीवन या सामाजिक स्थिति में संभावित असफलताओं या बाधाओं को दर्शाती है।		

अशुभ योग जिनका उपाय करना चाहिए 1

सूर्य ग्रहण योग तब बनता है जब जन्म कुंडली में सूर्य की राहु या केतु के साथ युति होती है।

सूर्य ग्रहण योग	यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।		

चंद्र ग्रहण योग तब बनता है जब चंद्रमा (चंद्र) की जन्म कुंडली में राहु या केतु के साथ युति होती है।

चन्द्र ग्रहण योग	यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।		

नज़र योग (कमजोर चंद्र दोष) तब लागू होता है जब जन्म कुंडली में चंद्रमा 6वें, 8वें या 12वें घर में हो।

नज़र योग (कमजोर चन्द्र)	यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।		

दुर्योग तब होता है जब 10वें भाव का स्वामी 6वें, 8वें या 12वें भाव में स्थित हो।

दुर्योग	दशमेश (बृहस्पति) बारहवें भाव में	1. व्यावसायिक सफलता प्राप्त करने में देरी या असफलता।, 2. करियर की प्रगति में बाधाएँ या चुनौतियाँ।, 3. सहकर्मियों या वरिष्ठों के साथ स्थिर संबंध बनाए रखने में कठिनाइयाँ।, 4. नौकरी में अस्थिरता या कार्यस्थल में बार-–बार बदलाव।, 5. वित्तीय अस्थिरता या करियर से जुड़ी असफलताएं.	बृहस्पति का उपाय करें

दैन्य योग तब होता है जब केंद्र भाव (1, 4, 7, या 10वें) का स्वामी 6, 8, या 12वें भाव में स्थित हो।

दैन्य योग	सप्तमेश (बृहस्पति) पे बारहवें भाव में	1. व्यक्तिगत या व्यावसायिक सफलता प्राप्त करने में देरी या असफलता।, 2. करियर या शिक्षा में बाधाएँ या चुनौतियाँ।, 3. स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं या शारीरिक परेशानी।, 4. व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों तरह से स्थिर रिश्ते बनाए रखने में कठिनाइयाँ।	बृहस्पति का उपाय करें

अशुभ योग जिनका उपाय करना चाहिए 2

विष (विषकुम्भ) योग तब बनता है जब किसी व्यक्ति की जन्म कुंडली में चंद्रमा शनि के साथ युत होता है।

विष (विषकुम्भ) योग	यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।		

श्रापित योग, तब बनता है जब शनि (शनि) राहु या केतु के साथ युत हो।

श्रापित योग	यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।		

अंगारक योग तब बनता है जब मंगल शनि, राहु या केतु के साथ युत हो।

अंगारक योग	मंगल केतु के साथ	1. आक्रामक और आवेगी व्यवहार, जो संघर्ष और विवादों को जन्म देता है, 2. स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं, विशेष रूप से रक्त, मांसपेशियों या दुर्घटनाओं से संबंधित, 3. वित्तीय चुनौतियां और अस्थिरता, 4. कैरियर के विकास या पेशेवर जीवन में बाधाएं, 5. रिश्तों और पारिवारिक जीवन में समस्याएं, 6. कानूनी समस्याएं या विवाद।	मंगल और केतु का उपाय करें

गुरु चांडाल योग तब बनता है जब जन्म कुंडली में बृहस्पति (गुरु) की राहु के साथ युति होती है।

गुरू चांडाल योग	यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।		

कमजोर शुक्र योग तब बनता है जब जन्म कुंडली में शुक्र शनि, राहु या केतु के साथ होता है।

कमजोर शुक्र योग	यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।		

लग्न दर्शन – मिथुन

मिथुन राशि, राशि चक्र की तीसरी राशि है और इस राशि का स्वामी बुध है। इसलिये इस लग्न में जन्म लेने से आपके जीवन पर बुध का सर्वाधिक प्रभाव रहेगा। आप औसत से कुछ लम्बे, गोरे रंग वाले और स्वस्थ शरीर वाले व्यक्ति होंगे, आपका ललाट ऊँचा तथा चेहरे पर ऐसी चमक होगी, जो आपके सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को आकर्षित करने के लिये पर्याप्त होगी।

आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, किन्तु कभी–कभी चोट, दुर्घटना, वात रोगों, जलन आदि रोगों से आपको कष्ट उठाना पड़ सकता है, इसके अलावा आपके अधिक भावुक होने पर आपको रक्तचात(ब्लड प्रेशर) तथा स्नायुतंत्र की बीमारियों से भी आपको पीड़ित होना पड़ सकता है, परन्तु उचित आहार–विहार तथा उपचार से आप जल्द ही स्वस्थ हो जायेंगे।

मिथुन लग्न में जन्म लेने से आप पढ़ने में तेज़ होंगे तथा आप कई विषयों में विशेषज्ञता प्राप्त करेंगे। आपको उच्च शिक्षा तथा अनुसंधान के लिये विदेश जाने का अवसर भी प्राप्त होगा। आपका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा तथा आपकी पत्नी गुणी तथा सुशिक्षित होंगी, साथ ही आपको सन्तान सुख भी प्राप्त होगा।

आप प्रबल कर्मठ, साहसी तथा भावुक व्यक्ति होंगे। आप मेहनती होंगे और दिन रात परिश्रम करना आपका स्वभाव बन जायेगा और जब तक लक्ष्य तक नहीं पहुँचेंगे आप विश्राम नहीं करेंगे, इस प्रकार आप योजना बनाने तथा उनका क्रियान्वयन करने में कुशल होंगे।

आपकी निर्णय शक्ति अच्छी रहेगी तथा आप कई कलाओं में विशेषज्ञता प्राप्त करेंगे। आपके जीवन में कई उतार चढ़ाव आयेंगे, किन्तु आप कठिनाइयों के बीच में से सही मार्ग निकालने में सक्षम रहेंगे। आप आर्ट, काव्य, लेखन, चित्रकला, प्रकाशन, संपादन, पत्रकारिता आदि में सफल रहेंगे।

आर्थिक क्षेत्र में आप पटु होंगे तथा अपने जीवन में अर्थ संचय करने में सफल रहेंगे। फलतः आप प्राध्यापक, प्रधानाचार्य या शिक्षा विभाग से सम्बंन्धित कार्य करेंगे, साथ ही आपको राजनीति में भी सफलता प्राप्त होगी।

आपका जन्म मिथुन लग्न में 06 अंश 40 कला से 10 अंश 00 कला के बीच में होने से आप औसत कद के बलिष्ठ, उच्च तथा विस्तृत ललाट एवं पैनी आँखों वाले व्यक्ति होंगे, किन्तु जीवन के मध्यकाल के उपरान्त आपको रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) तथा हृदय रोग का खतरा बढ़ सकता है, इसके अलावा आपको बुख़ार, गुर्दो की खराबी आदि के कारण भी पीड़ित होना पड़ सकता है।

आप आध्यात्मिक विचारधारा के व्यक्ति होंगे और दूसरों की भावनाओं तथा क्षमताओं का पूरा आदर करेंगे और अपने मान–अपमान का आप पूरा ध्यान रखेंगे और किसी को दिये गये वचन के आप पक्के होंगे। आपके स्वभाव तथा व्यवहार में दार्शनिकता का प्रभाव देखने को मिलेगा। धर्म में आपकी आस्था रहेगी और आप पूजा–पाठ तथा कर्मकाण्ड में विश्वास रखेंगे।

आप सर्वदा अपने कार्यो में तत्पर, चुस्त, कार्य कुशल तथा लक्ष्य प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील रहेंगे, किन्तु आप जल्द ही क्रोधित हो सकते हैं, परन्तु आप शान्त भी शीघ्र ही हो जायेंगे और अपने गुस्से के लिये आप पश्चाताप भी करेंगे। आप मेहनती रहेंगे और परिश्रम में विश्वास करेंगे, आपके जीवन में कभी निष्क्रियता या अकर्मण्यता नहीं आयेगी। आपका पारिवारिक जीवन प्रायः सुखमय रहेगा। सन्तान सुख भी आपको प्राप्त होगा और अपने मित्रों तथा अन्य लोगों के साथ भी आपका व्यवहार सौम्यता का रहेगा। जीवन में अर्थ संचय करने में आप सफल रहेंगे और आप प्रोफेसर, लेखक, महन्त, व्यापारी, उद्योगपति आदि के कार्य सफलता पूर्वक करेंगे।

नक्षत्र – पद का विवेचन

आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्मराशि कुम्भ राशि तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ग मेष्ष, गण मनुष्य, नाड़ी आद्य, योनि सिंह तथा वर्ण शूद्र होगा। नक्षत्र के द्वितिय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ 'सो' अक्षर से होगा। यथा – सोहन, सोराजसिंह आदि।

आप इन्द्रियों को पूर्ण रूप से अपने वश में रखेंगे तथा संयमी पुरुष की तरह जीवन व्यतीत करेंगे। आप नाना प्रकार की कलाओं तथा कार्यों में निपुण रहेंगे। अतः समाज में आपका पूर्ण मान–सम्मान रहेगा। आपके शत्रु आपसे सदैव भयभीत एवं पराजित रहेंगे एवं इनको नष्ट करने में आप हमेशा सफल रहेंगे। आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को अपनी ही बुद्धि से सम्पन्न तथा सफल बनाने में सफल रहेंगे। इससे आपको आत्म सन्तुष्टि रहेगी एवं जीवन प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

जितेन्द्रियः सर्वकलासु दक्षो जितारिपक्षः खलु यस्य नित्यम्।।
भवेन्मनीषा सुतरामपूर्वा पूर्वादिका भाद्रपदा प्रसूतौ।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक जितेन्द्रिय, समस्त कलाओं में निपुण, शत्रु पक्ष को जीतने वाला तथा बुद्धिमान होता है।

आप जीवन में कभी–कभी हृदय से अत्यन्त दुःख की अनुभूति करेंगे। स्त्री के आप हमेशा पूर्ण रूप से वश में रहेंगे तथा उसी के निर्देशानुसार अपने समस्त सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे । स्वतन्त्र निर्णय लेने में आप प्रायः असमर्थता का अहसास करेंगे। धनैश्वर्य से आप हमेशा सुशोभित रहेंगे एवं जीवन काल में सुखपूर्वक उसका उपभोग करेंगे लेकिन आप कंजूसी प्रवृति से भी युक्त रहेंगे। अतः इससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। आप एक चतुर तथा विद्वान पुरुष होंगे।

भाद्रपदासूद्विग्नः स्त्रीजितधनी पटुरदाता य।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य हृदय से दुःखी, स्त्री के वश में रहने वाला, धनवान , चतुर, पीड़ित तथा कृपण स्वभाव का होता है।

आपकी वाणी अत्यन्त ही ओजस्वी तथा साहसिक होगी जिससे अन्य लोग आपसे अत्यन्त ही प्रभावित रहेंगे तथा आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। लेकिन आप प्रवृति से डरपोक भी रहेंगे तथा समय–समय पर इससे व्याकुलता की भी अनुभूति करेंगे परन्तु अन्य सामाजिक जनों से आपके परस्पर सम्बन्ध अत्यन्त ही स्नेहशील एवं मधुर होंगे।

पूर्वप्रोष्ठपदि प्रगल्भवचनो धूर्तोभयार्तो मृदुः।।
जातक परिजातः

अर्थात् पूर्वाभाद्रपद, नक्षत्र में पैदा होने वाला पुरुष साहस एवं ओजस्वी वाणी बोलने वाला, धूर्त, भय से व्याकुलता प्राप्त करने वाला तथा मदृस्वभाव का होता है।

भाषण देने की कला में आप दक्ष रहेंगे एवं अपने ओजस्वी भाषण से सभी लोगों को प्रभावित तथा अकर्षित करने में सफल रहेंगे। जीवन में आवश्यक सुख–संसाधनों का आपके पास अभाव नहीं रहेगा। आप सपरिवार सर्वत्र मान–सम्मान एवं आदर प्राप्त करेंगे। परन्तु आपको नींद अधिक मात्रा में आएगी तथा इससे आप में आलस्य की वृद्धि होगी अतः कभी–कभी आप किसी कार्य को करने में योग्य नहीं रहते न ही प्रायः कोई कार्य करेंगे। इससे आपको अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

वक्ता सुखीप्रजायुक्तो बहुनिद्रोनिरर्थकः।
पूर्वभाद्रपदायां च जातो भवति मानवः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक श्रेष्ठ वक्ता, सुखी, सम्मान वाला, अधिक नींद वाला तथा स्वयं किसी कार्य के योग्य नहीं होता है।

कुम्भ राशि में उत्पन्न होने के कारण आपकी नाक ऊँची होगी तथा मुख एवं मस्तक विस्तृत रहेगा एवं हाथ, पैर तथा कटि भाग में स्थूलता का प्रभाव रहेगा। आपके शरीर में रुक्षता का भाव भी रहेगा। लेकिन कृत्रिम उपायों से यह दूर हो जाएगा एवं आपके सौन्दर्य पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आप विद्रोही स्वभाव के रहेंगे तथा जीवन में यदा–कदा इस भाव का आप प्रदर्शन करते रहेंगे। साथ ही क्रोधाधिक्य भी आप में रहेगा। धर्म के प्रति आपकी निष्ठा नहीं रहेगी। शिल्प या चित्रकारी में आपकी विशेष रुचि रहेगी तथा इस क्षेत्र में आपको सफलता एवं ख्याति प्राप्त हो सकेगी। साथ ही कभी–कभी आप मानसिक रूप से दुःखानुभूति करेंगे।

उद्धोणो रुक्षदेहः पृथकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः।
सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते।

दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः।।

सारावली

अर्थात् कुम्भ राशि में उत्पन्न जातक ऊँची नाक वाला, खुश्क देह धारी, मोटे–मोटे हाथ पैर वाला, शराबी, सुन्दर, द्रोही, धर्म से रहित, दूसरे के पुत्रों का जनक, विशाल मस्तक वाला, शठ, आलसी, विशाल मुख व कमर वाला, शिल्प विद्या का ज्ञाता, दुष्ट स्वभाव वाला, दुःखी तथा दरिद्री होता है।

आप विविध शास्त्रों का आपनी बुद्धि तथा परिश्रम से विस्तृत ज्ञान प्राप्त करेंगे तथा आप समाज में एक विद्वान के रूप में आदरणीय तथा ख्याति प्राप्त करेंगे। आप विभिन्न प्रकार के कार्यों को करने में भी प्रवीण रहेंगे। आप शान्त प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा उग्र एवं हिंसक भावों का आप में अभाव रहेगा। साथ ही शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करने तथा उनको भयभीत करने में भी आप सफल रहेंगे।

अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोऽति विचक्षणः।
कलशगाामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरूरिपुव्रजः।।

जातकाभरणम्

अर्थात् कुम्भ राशि में उत्पन्न जातक आलसी, दूसरे के पुत्रों से प्रेम करने वाला, कार्यों में कुशल, शास्त्रों का ज्ञाता, शान्त और शत्रुओं को जीतने वाला होता है।

आप कठोर कार्यों को करने में भी रुचिशील रहेंगे या इनको करने में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। यात्रा करने तथा भ्रमण करने में आपकी विशेष रुचि रहेगी तथा इन पर आप अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगे। दूसरे के धन के प्रति आपके हृदय में लालच का भाव रहेगा तथा इसे प्राप्त करने के लिए भी आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति में उतार–चढ़ाव आते रहेंगे। अतः इस विषमता से आपको कई बार कठिनाई का भी सामना करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त सुगन्धित द्रव्यों का अनुलेपन करने तथा पुष्पादि के प्रति भी आपकी आसक्ति रहेगी तथा इनका आप सामान्यतया प्रयोग करते रहेंगे।

प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विषातदक्षोऽश्वसहो डल्पवित्तः।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवतः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः।।

फलदीपिका

अर्थात् कम्भ राशि में उत्पन्न जातक छिपकर पाप करने वाला, अल्प द्रव्य युक्त, दूसरे के धन का इच्छुक, यात्रा करने वाला, दूसरों को चोट पहुँचाने वाला, घड़े के आकार के शरीर वाला, पुष्प एवं सुगन्धित पदार्थों का शौकीन तथा आर्थिक स्थिति में उतार–चढ़ाव वाला होता है।

आप एक श्रेष्ठ विद्वान होंगे तथा समाज में आप आदर प्राप्त करेंगे लेकिन अन्य गण मान्य विद्वानों को आप कभी भी यथाचित सम्मान तथा आदर प्रदान नहीं करेंगे। इससे सज्जन पुरुष आपसे प्रायः अप्रसन्न रहेंगे।

कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको।

जातक परिजातः

अर्थात् कुम्भ राशि का जातक विद्वान होने पर भी अन्य विद्वानों से द्वेष रखने वाला तथा सौशील्यादि गुणों से रहित अर्थात् शील स्वभाव से अच्छा नहीं होता है।

आप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सामान्यतया सफलता तथा विजय प्राप्त करेंगे तथा आपका आचरण श्रेष्ठ रहेगा जो अन्य जनों के लिए प्रशंसनीय तथा अनुकरणनीय रहेगा। धन–सम्पत्ति से आप प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे लेकिन यदा–कदा इसका आपको अभाव भी रहेगा। गुरुजनों तथा श्रेष्ठ लोगों के प्रति आपके मन में श्रद्धा तथा सेवा का भाव रहेगा तथा समय–समय पर आप इनकी सेवा तथा सहायता करते रहेंगे एवं उनसे पूर्ण स्नेह प्राप्त करेंगे। आपका परिवार विशाल रहेगा एवं जाति तथा वर्ग के कल्याणकारी कार्यों को करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको सफल बनाने में अपना प्रमुख योगदान प्रदान करेंगे। इससे जाति तथा धर्म के मध्य आपके सम्मान में वृद्धि होगी एवं वे आपको अत्यन्त ही श्रेष्ठ एवं श्रद्धेय समझेंगे। इस प्रकार विभिन्न प्रकार के सद्गुणों से युक्त होकर तथा इनका अनुपालन करके आप जीवन में पूर्ण सुखानुभूति प्राप्त करेंगे।

भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः।
स्थिरधन गुरूभक्तो मानिनी चित्तरक्तः।।
बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेष्ट कर्ता।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः।।

जातक दीपिका

अर्थात् कुम्भ राशि में उत्पन्न जातक सुन्दर, सच्चरित्र, स्थिर धनवाला, बृहद् परिवार से युक्त गुरुओं का भक्त, मानिनी स्त्रियों के चित्त को खुश करने वाला, जाति वर्ग के इष्ट की इच्छाओं को पूर्ण करने वाला तथा सकलगुणों से युक्त होता है।

आपकी गर्दन की लम्बाई सामान्य से अधिक रहेगी तथा शरीर की नसें भी शरीर से बाहर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होंगी। महिला वर्ग से आपके सम्बन्ध मित्रतापूर्ण रहेंगे एवं उनसे आपको पूर्ण आदर एवं सम्मान भी प्राप्त होगा।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः।
पृथुचरणोरूपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः।
प्रियकुसुमानुलेपन सृहृदघट्जो ऽध्वसहः।।

बृहज्जातकम्

अर्थात् कुम्भ राशि में जन्म लेने वाला मनुष्य ऊँट की गर्दन के सदृश गर्दन वाला, शिरायुक्त शरीर वाला, रुक्ष एवं रोगी शरीर, लम्बे पैर, जाँघ, मुख और कमर में तिल वाला, मूर्खता युक्त, अन्य स्त्री से सम्बन्ध रखने वाला, धन सम्पत्ति में हानि और वृद्धि का क्रम, पुष्पों तथा चन्दन से प्रेम करने वाला, दूसरों के मन की धन की इच्छा करने वाला, मित्रों का प्रेमी तथा यात्रा प्रिय होता है।

आप स्वभाव से दानशील होंगे एवं जीवन में यथाशक्ति आप जरुरतमन्दों को दान देते रहेंगे। इससे आप समाज में सबकी प्रशंसा के पात्र रहेंगे। आप में कृपणता का भाव भी रहेगा एवं अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनका उपकार स्वीकार करेंगे तथा हृदय से आभार भी प्रकट करेंगे। जीवन में आपको विभिन्न प्रकार के वाहन साधनों की भी प्राप्ति होगी एवं सुखपूर्वक आप इनका उपभोग करते रहेंगे। आपकी आँखें अत्यन्त ही सुन्दर होंगी तथा बुद्धि में भी सरलता का भाव रहेगा। आपमें किसी को धोखा देने की प्रवृति नहीं रहेगी। इस प्रकार अपने स्नेहशील व्यवहार तथा सत्कार्यों से आप समाज में लोकप्रिय रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन यापन करेंगे तथा स्वबाहु बल से धनार्जन करके सुखप्राप्त करेंगे।

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकुतोद्यमः।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः।
शलूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः।।

मानसागरी

अर्थात् कुम्भ राशि में उत्पन्न जातक दानी, आलसी, उपकारी, हाथी, घोड़ा आदि धन का स्वामी, शुभ दृष्टि वाला, स्वभाव से शील, धन एवं विद्या के लिए उद्योग करने वाला, पुण्य और स्नेह की कीर्ति प्राप्त करने वाला, अपनी शक्ति से धन का भोग करने वाला, शालूरपक्षी की तरह कुक्षि वाला तथा भयरहित होता है।

मनुष्य गण में जन्म होने के कारण आपकी प्रवृति धार्मिक रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में अनन्य श्रद्धा तथा सेवा का भाव रहेगा। आपका स्वभाव अभिमानी रहेगा तथा समय–समय पर आप इसका प्रदर्शन भी करते रहेंगे। आपके मन में दया एवं करुणा की भावना सदैव विद्यमान रहेगी। आप एक बलशाली पुरुष होंगे तथा कई कार्यों एवं कलाओं के ज्ञाता होंगे। अतः समाज में आप एक आदरणीय एवं सम्माननीय समझे जायेंगे। विविध शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा। अतः एक विद्वान के रूप में भी आपकी प्रतिष्ठा रहेगी। इसके अतिरिक्त आप विभिन्न लोगों को सुख प्रदान करने की भी क्षमता रखेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।

जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राहमण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

समाज में आप हमेशा मान–सम्मान से युक्त रहेंगे तथा सर्व प्रकार से धनैश्वर्य से सुसम्पन्न रह कर प्रसन्नतापूर्वक जीवन यापन करेंगे। नगरवासी हमेशा आपके वश में रहेंगे अर्थात् आप नगर के एक प्रभावशाली एवं गणमान्य व्यक्ति हो सकते हैं। आपका वर्ण गौरवर्ण एवं आँखें बड़ी–बड़ी होंगी। निशाने बाजी की कला में आप निपुणता अर्जित करेंगे। इस क्षेत्र में आप सफलता की प्राप्ती भी कर सकते हैं।

धनीमानी विशालाक्षो लक्ष्यभेदी धनुर्धरः।
गौरः पौरजन ग्राही जायते मानवे गणे।।

मानसागरी

अर्थात् मनुष्य गण का जातक धनी, सम्माननीय, बड़ी आँखों वाला, लक्ष्यभेदी तथा नगरवासियों को वश में करने वाला होता है।

सिंह योनि में जन्म होने के कारण आपकी प्रवृति धार्मिक रहेगी एवं धार्मिक वृतियों का आप यत्नपूर्वक पालन करते रहेंगे। आपकी रुचि भी अच्छे कार्यों को करने की ओर अधिक रहेगी तथा यत्नपूर्वक इसके लिए आजीवन आप तत्पर रहेंगे। इस प्रकार अपने इन सत्कार्यों से आप समाज में आदर, सम्मान तथा ख्याति अर्जित करेंगे। विभिन्न प्रकार के सद्गुणों से भी आप सुशोभित रहेंगे एवं इसके अनुपालन के लिए सर्वदा उद्यत रहेंगे। आप अपने कुल एवं परिवार की चहुमुखी उन्नति तथा समृद्धि करने के लिए आप अपना तन, मन, धन से सहयोग अर्पण करेंगे तथा इस कार्य में पूर्ण रूपेण सफल रहकर पारिवारिक जनों के प्रिय एवं सम्माननीय बनेंगे।

स्वधर्मे तु सदाचारसत्क्रियासद्गुणान्वितः।

कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः।।

अर्थात् सिंह योनि में उत्पन्न जातक अपने धर्म में सच्चा आचार–व्यवहार वाला, अच्छी क्रिया एवं अच्छे गुणों से सम्पन्न और परिवार का उद्धार करता है।

आपके लिए चैत्र मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी, तिथियाँ, आर्दा नक्षत्र, गंडयोग, वणिजकरण, गुरुवार तृतीय प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा सर्वदा अनिष्टकारी रहेंगे। अतः आप 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य 3, 8, 13 तिथियों, आद्रा नक्षत्र, गंडयोग तथा वणिजकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृह निर्माण, क्रय–विक्रय आदि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होगी। साथ ही गुरुवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में आपको शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो, मानसिक चिन्ताएँ तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता मिल रही हो तो, ऐसे समय में आपको अपने इष्ट कुबेर की आराधना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से शनिवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्मपादुकाएँ आदि पदार्थों का किसी योग्य सुपात्र को दान देना चाहिए। इसके साथ ही शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी चिन्ताएँ दूर होंगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं समस्त अशुभ प्रभाव समाप्त होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी। साथ ही सर्वत्र लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे।

मंत्र–ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

विंशोत्तरी दशाफल

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन में दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वारा करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलूओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।

चन्द्रमा दशा (19:09:2019 -- 19:09:2029)

वर्तमान समय में आपकी चंद्रमा की महादशा चल रही है और चंद्रमा आपकी कुण्डली में नौवें भाव में स्थित है। आपको संतानों की प्राप्ति हो सकती है। आप गुणी होंगे और चंद्रमा की दशा के दौरान अपने सभी उपक्रम में आपको सफलता मिलेगी।

वर्तमान समय में आपकी चंद्रमा की महादशा चल रही है और चंद्रमा आपकी कुण्डली में कुम्भ राशि में स्थित है। चंद्रमा की अपनी दशा के दौरान, आप दवा से आय प्राप्त करेंगे। आप पहले जीवनसाथी के रहते दूसरा विवाह कर सकते हैं। यदि चंद्रमा की दशा 28वें वर्ष की आयु में पड़ती है, तो आप एक हठी एवं दुस्साहसी व्यक्ति हो सकते हैं। आपको वाहनों से सावधान रहना चाहिए, जैसाकि आपको या तो वाहनों या फिर शत्रुओं या चोरों से चोट लगने का भय हो सकता है। आपको जुए से दूर रहना चाहिए, क्योंकि इससे आपको भारी हानि का खतरा है। आप अपनी आय का एक बड़ा भाग नशे और दूसरे सुखों के लिए खर्च कर सकते हैं।

दशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या धन–संपत्ति, रोग आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– चाँदी की अंगूठी में मोती धारण करें।
2– चाँदी का कमल दान करें।
3– महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।

चन्द्रमा अर्न्तदशा (19:09:2019 से 20:07:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। यदि यह अन्तर्दशा विवाह की अवस्था के दौरान चलती है, और आप अविवाहित हैं, तो आपके विवाह की संभावना है। यदि पहले से विवाहित हैं, तो एक पुत्री का जन्म हो सकता है। आप किसी प्रियजन के विवाह समारोह में शामिल हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में आपके भाई–बहनों का विवाह हो सकता है– यदि वे विवाह योग्य हैं। आपको नये परिधान प्राप्त होंगे। आपको बहुत ज्ञानी और संस्कारित लोगों के सम्पर्क में आने के बहुत सारे अवसर मिलेंगे। आपको जीवनसाथी और संतानों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आप अपनी माता की अभिलाषाओं को पूरा करेंगे तथा साथ ही उनका पूर्ण प्रेम, स्नेह और ध्यान आपको मिलेगा। आपको संबंधियों और मित्रों से अवसरीय मदद मिलेगी। आपको चहुंमुखी संपन्नता तथा उत्तम नींद प्राप्त होगी।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, धन–सम्पत्ति, माता, भाई–बन्धु, जीवनसाथी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– चंद्रमा के बीज मंत्र का पाठ करें।
2– सफेद गाय या चाँदी की गाय का दान करें।
3– महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (19:09:2019 से 15:10:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। यदि आपकी आर्थिक स्थिति पहले से उत्तम है, तो आपको भूमि और सम्पत्ति प्राप्त होगी। आप एक आरामदायक और खुशहाल जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आपको सरकार का समर्थन प्राप्त होगा और स्वादिष्ट भोजन मिलेगा। यदि आप साधारण परिवार में जन्में हैं, तो भी आप बिना किसी अधिक प्रयास के अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (15:10:2019 से 01:11:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने आस–पास के लोगों से उत्तम सम्मान मिलेगा। आपकी आर्थिक स्थिति संतोषजनक होगी। सामान्यतः यह एक साधारण दशा होगी। जीवन में बहुत अशांति नहीं होगी। हालाँकि आपको अपने शत्रुओं से सावधान रहना चाहिए।

राहु प्रत्यंतर्दशा (01:11:2019 से 17:12:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक मिली–जुली दशा होगी। आपको सुख और दुख का समान रूप से अनुभव होगा और प्रायः उसमें बदलाव होता रहेगा। घर पर वैवाहिक समारोह आयोजित होंगे। आप तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं। कई सारे लोग आपसे मिलने आयेंगे और आपका साथ देंगे।

बृहस्पति प्रत्यंतर्दशा (17:12:2019 से 27:01:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपको नौकरी में पदोन्नति प्राप्त होगी। यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको बहुत उत्तम लाभ प्राप्त होंगे। घर पर वैवाहिक समारोह आयोजित होंगे। सामान्यतः आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। आपके जीवनसाथी और संतान की आपको अति सुखद संगति मिलेगी। विशिष्टों से आपको सहयोग मिलेगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (27:01:2020 से 15:03:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यद्यपि आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर होगी, फिर भी अप्रत्याशित रूप से आपके व्यय बढ़ सकते हैं। आपका अपने जीवनसाथी के साथ झगड़ा हो सकता है और वह बीमार हो सकती है। संतान भी आपके लिए परेशानियां पैदा कर सकते हैं। आपको बुखार, पेचिश और सिर दर्द की शिकायत हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (15:03:2020 से 27:04:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका रूझान नयी चीजों को सीखने की तरफ होगा। इस दशा के दौरान आप अपने काल्पनिक विचारों को व्यावहारिक रूप में प्रयोग कर सकते हैं। आपको लेखन के क्षेत्र में नाम और यश प्राप्त होगा। रोजगार में बदलाव के लिए यह एक

उत्तम समय है। शैक्षिणिक क्षेत्रों में आपकी संतानों की सफलता आपको खुशी प्रदान करेगी। जीवनसाथी का भी आपको सुन्दर सहयोग मिलेगा। हालाँकि, आपके गुप्त शत्रु आपके खिलाफ साजिश कर सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (27:04:2020 से 15:05:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी माता के लिए यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है। आपको अपने परिवार से दूर रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। एक समय पर दो प्रतिष्ठान होंगे। आपको निरन्तर धन की प्राप्ति होगी, लेकिन आय से अधिक व्यय भी हो सकता है। आपको धन उधार लेने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है और आप उसे वापस करने में असमर्थ हो सकते हैं। आपको अपनी कुछ वस्तुओं को बेचना पड़ सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (15:05:2020 से 05:07:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आपका या आपकी बहन का विवाह हो सकता है। ससुराल से आपको विरासत में कोई सम्पत्ति प्राप्त हो सकती है। शुक्र की वस्तुओं से आपको लाभ होगा। अज्ञात महिलाओं के साथ आप शारीरिक सुख प्राप्त करेंगे, जिससे आपको बदनामी का सामना करना पड़ सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (05:07:2020 से 20:07:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। उनके साथ आपके संबंध भी आत्मीय नहीं हो सकते हैं। आपके पुत्र का स्वास्थ्य भी उत्तम नहीं हो सकता है। आपको बहुत गंभीर स्थिति का सामना करना पड़ सकता है।

मंगल अर्न्तदशा (20:07:2020 से 18:02:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। आपको पैतृक सम्पत्ति और धन की हानि हो सकती है। रक्त की अशुद्धता, व्यग्रता, कफ, आग, विद्युत और अन्य गर्म चीजों के कारण होने वाले विकारों से आप ग्रस्त हो सकते हैं। आप चोरों और शत्रुओं के कारण अपना धन गवाँ सकते हैं। आपमें धैर्य की कमी हो सकती है और आप हर स्तर पर चिड़चिड़े हो सकते हैं। एक समय पर आप सबसे संतुष्ट व्यक्ति होंगे, जिसे सांसारिक सुखों की आवश्यकता नहीं होगी, लेकिन अचानक आपका दिमाग पलट सकता है और आप अपने कार्य क्षेत्र में असफल हो सकते हैं। आपक स्थानान्तराण हो सकता है या दंड अथवा गबन के आरोप के कारण आप पूर्व प्राप्त पद से हाथ धो सकते हैं।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में मंगल की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन हानि, मकान, मुकदमा आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– मंगल के बीज मंत्र का दस हजार जप करें।
2– ब्रह्मचर्य बनकर हनुमान बाहुक का पाठ करें।
3– मूंगा धारण करें।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (20:07:2020 से 01:08:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप कफ या तपेदिक से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको आग से भय हो सकता है। आपको धन हानि हो सकती है। जनता से आपको अनादर मिल सकता है। शत्रु आपको भयभीत करने की कोशिश कर सकते हैं। भाइयों से आपका विवाद हो सकता है। आपका एक नजदीकी संबंधी आपके जीवन को कष्टकारी बना सकता है। महिलाओं से आपको विरोध का सामना करना पड़ सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (01:08:2020 से 02:09:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा के दौरान पैदा हुए रोगों का प्रभाव और बढ़ सकता है। आप अस्पताल में भर्ती हो सकते हैं। उपचार में आपका भारी धन व्यय हो सकता है। अधीनस्थ और विशिष्ट लोग आपके लिए समस्यायें पैदा कर सकते हैं। बेतुकी बातों पर आपका अपने जीवनसाथी से झगड़ा हो सकता है और आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।

बृहस्पति प्रत्यंतर्दशा (02:09:2020 से 01:10:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप एक राजा की तरह आनन्द प्राप्त करेंगे। आप हर प्रकार के रोगों से मुक्त रहेंगे। आपको अप्रत्याशित क्षेत्रों से धन प्राप्त होगा। बहने आपकी प्रसन्नता का कारण होंगी। यदि अब तक कोई संपत्ति विवाद अनसुलझा है, तो उसका निर्णय आपके पक्ष में हो जायेगा। आप तनावरहित जीवन व्यतीत करेंगे, समय पर भोजन और अपनी मूलभूत जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त धन प्राप्त करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (01:10:2020 से 04:11:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। धन को छोड़कर पिछली दशा में आपको प्राप्त अन्य सभी सुख गायब हो सकते हैं। आपका व्यय आय से अधिक हो सकता है। चूंकि, आपने पिछली दशा में पर्याप्त धन संग्रह कर लिया था, अतः इस दशा में आपको उसकी कमी महसूस नहीं होगी। आपको अपने विरोधियों से सावधान रहना चाहिए। बिना किसी कारण के विवाद हो सकते हैं। ऐसा 7 दिनों तक हो सकता है। उसके बाद स्थिति सामान्य हो जायेगी।

बुध प्रत्यंतर्दशा (04:11:2020 से 04:12:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके घुटने में चोट लगने या आप्रेशन होने की संभावना है। आप गठिया रोग से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको सट्टों और विशिष्ट व्यक्तियों से लाभ मिलेगा। आपका मिजाज प्रायः अन्तरालों पर बदलता रहेगा। आपमें एकाग्रता का अभाव हो सकता है। आपके किसी एक संतान का स्वास्थ्य आपकी चिन्ता का कारण बन सकता है। इस दशा के दौरान वास्तव में आपके जीवनसाथी को परेशानी होगी– जैसाकि उसे आप और आपके संतान की देखभाल करनी पड़ेगी।

केतु प्रत्यंतर्दशा (04:12:2020 से 16:12:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा नहीं होगी। परिवार में विवाह या धार्मिक कार्यों जैसे समारोहों में भारी व्यय होगा। आपका एक नजदीकी मित्र आपको धोखा सकता है और आपका धन तथा आभूषण लेकर भाग सकता है। आपके भाइयों के लिए यह एक खराब दशा हो सकती है। आपके किसी नजदीकी संबंधी से आपका अप्रत्याशित रूप से वियोग हो सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (16:12:2020 से 21:01:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सम्पत्ति और सट्टों में निवेश करने के लिए यह शुभ समय है। आपके किसी नजदीकी की मृत्यु के कारण आपको अप्रत्याशित रूप से कोई विरासतीय उपहार मिल सकता है। आपको महिलाओं से आनन्द और लाभ मिलेगा। आप किसी महिला के धन दौलत की देखभाल कर सकते हैं और साथ ही उससे लाभ प्राप्त कर सकते हैं। महिलाओं के कारण झगड़े और लड़ाईयां हो सकती हैं। मित्र आपके शत्रु बन सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (21:01:2021 से 01:02:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपने सगे भाई बहनों से लाभ प्राप्त करेंगे। आपको

नेत्र रोग, बुखार और जोड़ों में दर्द की शिकायत हो सकती है। आप ऋण ले सकते हैं और उसे वापस करने में असक्षम हो सकते हैं। आप कहीं छिप सकते हैं और कुछ मानसिक शांति पाने के लिए नशे का सहारा ले सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (01:02:2021 से 18:02:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। आपको सरकार का समर्थन मिलेगा। आपको जलीय उत्पादों और दवाओं के व्यापर में लाभ होगा। आपको अति उत्तम शैक्षिणिक परिणाम प्राप्त होंगे। यदि आपका कोई प्रेम प्रसंग चल रहा है, तो वह शादी में परिणित हो सकता है। आप किसी दूर स्थान की यात्रा कर सकते हैं और एक नया घरेलू उपयोग का सामान खरीद सकते हैं।

राहु अर्न्तदशा (18:02:2021 से 20:08:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। आप अनजाने में कई बुरे और गलत काम कर सकते हैं तथा बाद में उसके लिये पछतावा होगा। लेकिन तब तक बहुत देर हो सकती है और सबको अपना शत्रु बना सकते हैं। हालांकि, चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा जो आगे आने वाली है, के दौरान विभिन्न चीजों के लिए आपके रवैये और व्यवहार में वास्तविक बदलाव आयेगा। आपके संबंधियों को समस्यायें हो सकती हैं और आपको उन पर धन खर्च करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आपको जलीय पदार्थों से विषाक्तता होने की संभावना हो सकती है। आप बुखार, अपच या गठिया रोग से ग्रसित हो सकते हैं। आपको आंधी, तूफान और तड़ित से खतरा हो सकता है। आपको मदिरा से सर्वथा दूर रहना चाहिए– जैसाकि यह एक जलीय पदार्थ है। चूंकि आपकी आय से व्यय अधिक हो सकता है, अतः आपको धन व्यय करते समय सावधानी बरतनी चाहिए।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में राहु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, संतान, कर्ज, धन हानि आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– मंगल का व्रत रखें एवं हनुमान जी के चरणों में सिंदूर अर्पित करें।
2– दुर्गासुक्त का पाठ करें।
3– चाँदी का हाथी दान करें।

राहु प्रत्यंतर्दशा (18:02:2021 से 11:05:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा बहुत खराब हो सकती है। आप चर्म रोगों, सिर में चोट का सामना कर सकते हैं। आपको धन की हानि हो सकती है। आपके व्यापार में अपने भागीदार या अपने किसी एक अधीनस्थ से धोखा मिल सकता है।

बृहस्पति प्रत्यंतर्दशा (11:05:2021 से 23:07:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप धार्मिक क्षेत्र में थका देने वाली गतिविधियों में शामिल रहेंगे। समय पर आप भोजन नहीं कर पायेंगे। आपके पुत्र पढ़ाई में विशेष योग्यता प्राप्त करेंगे। घरेलू वातावरण खुशहाल होगा। आध्यात्मिक क्षेत्र में आपके ज्ञान मे बृद्धि होगी। संबंधियों का आपको साथ मिलेगा और आप उनसे लाभ प्राप्त करेंगे। परिवार की महिलाओं का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (23:07:2021 से 18:10:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको सभी संभव विपदाओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके जीवनसाथी को तत्काल चिकित्सकीय उपचार की आवश्यकता हो सकती है। आपकी या आपके जीवनसाथी की शल्य चिकित्सा हो सकती है। आप लकवे का शिकार हो सकते हैं।

इस दशा के दौरान आपको लॉटरी और सट्टों से दूर रहना चाहिए।

बुध प्रत्यंतर्दशा (18:10:2021 से 04:01:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने क्षेत्र में विशेष ज्ञान प्राप्त होगा। आपका एक चचेरा भाई आपके परिवार के लिए समस्यायें पैदा कर सकता है। आपकी बहन का विवाह हो सकता है। प्रायः परेशानियां हो सकती हैं, किसी बड़े व्यक्ति को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है– संभवतः दादा या दादी को, जिससे आपका अपने सहोदरों से अलगाव हो सकता है। आपको जीवनसाथी से लाभ मिल सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (04:01:2022 से 05:02:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा निराशापूर्ण हो सकती है। परिवार से अलगाव के कारण आप अकेला महसूस कर सकते हैं और आपमें असुरक्षा की भावना आ सकती है। यदि आप परिवार से अलग नहीं होते हैं, तो भी संयुक्त परिवार मे रहते हुए आप एकाकी जीवन व्यतीत कर सकते हैं। आपकी बौद्धिक क्षमता का ह्रास हो सकता है और आपको धन हानि हो सकती है। नये शत्रुओं से आपको खतरा हो सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (05:02:2022 से 07:05:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। घरेलू घटनाओं के कारण आप निराश हो सकते हैं। आपके जीवनसाथी आपके मित्रों का साथ दे सकती है। बुरी आत्माओं से आपको खतरा हो सकता है। आपका वाहन खो सकता है या दुर्घटना हो सकती है। आपको रति जन्य रोग हो सकते हैं। आपके गुप्तांगों और गुदा में खुजली हो सकती है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (07:05:2022 से 03:06:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको ससुराल से सम्पत्ति मिलेगी, लेकिन मानसिक शांति का अभाव हो सकता है। आपके जीवनसाथी और संतान के लिए यह दशा बहुत खराब हो सकती है। आप उनकी आवश्यक देखभाल नहीं कर पायेंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (03:06:2022 से 19:07:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। कोई भी बुरा परिणाम देने में राहु अप्रभावी रहेगा। आप ईश्वर की आराधना में पूरी तरह से रत रहेंगे। आपको गंभीर सर्दी और खांसी हो सकती है। सम्मान की हानि हो सकती है। नजदीकी और प्रियजनों से झगड़ा हो सकता है। आप अपने से बड़ी महिलाओं के साथ मौज–मस्ती करेंगे और उन पर धन बर्बाद करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (19:07:2022 से 20:08:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है। यदि एक या तीनों ग्रह भी उत्तम स्थिति में हैं, तो भी आपको बहुत कष्ट हो सकते हैं। एक समस्या हल होगी, तो दूसरी समस्या खड़ी हो जायेगी। आपको धन और सम्पत्ति की हानि हो सकती है। आपके गुदा में फोड़े या बवासीर हो सकता है। रक्त में खराबी के कारण रोग हो सकते हैं। यदि राहु और मंगल अशुभ भाव या राशि में स्थित हैं, तो आपको रक्त चढ़वाना पड़ सकता है।

बृहस्पति अर्न्तदशा (20:08:2022 से 19:12:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा शुभ और उत्कृष्ट होगी। यदि बृहस्पति आपकी कुण्डली में शुभ नहीं भी है, तो भी आपको विषम परिणाम नहीं प्राप्त होंगे। आपमें राहु की अन्तर्दशा– जो पहले आयेगी– के दौरान सहिष्णुता की भावना का विकास होगा और आपको प्राप्त सीख

बृहस्पति की अन्तर्दशा के दौरान पूरी तरह से आपको एक नया इंसान बनायेगी। आप धार्मिक सिद्धान्तों का पालन करेंगे और भिक्षा देंगे। आपकी सोच में परिपक्वता होगी और गलत–सही की पहचान करने की क्षमता होगी।

आपको उत्तम कपड़ों और आभूषड़ों को पहनने में अधिक रूचि होगी। आप उत्तम मित्रों की संगति का आनन्द प्राप्त करेंगे। अधिकतर लोग आपको पसन्द करेंगे। आपको सरकार से समर्थन मिलेगा। विभिन्न स्रोतों से आप आय प्राप्त करेंगे और संतानों के मामले में आप बहुत सुखी होंगे। आपकी संतानें भी आपको खुशियां प्रदान करेंगी। आपमें वाहन प्राप्त करने की चाह होगी, जो इस अन्तर्दशा के अन्त तक पूरी होगी।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन–सम्पत्ति, दुर्घटना आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– नीलम या इसका उपरत्न धारण करें।
2– काली गाय या भैंस का दान करें।
3– शनिस्तोत्र का पाठ करें।

बृहस्पति प्रत्यंतर्दशा (20:08:2022 से 24:10:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आपको सभी कामों में सफलता मिलेगी। आप प्रायः तीर्थस्थानों की यात्रा करेंगे। धन अर्जित करने में आप बहुत व्यस्त रहेंगे। अतः आप उत्तम और समयबद्ध भोजन प्राप्त नहीं कर सकेंगे। आपका विवाह हो सकता है और आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आप एक ऊँचे पद को प्राप्त करेंगे। आपके घर पर शुभ समारोह आयोजित होंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (24:10:2022 से 09:01:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप भूमि और सम्पत्ति खरीदेंगे। आपको वाहन का लाभ होगा। सभी से आपको स्नेह मिलेगा। इस दशा के दौरान आप कई लोगों को भोजन करायेंगे। महिलाओं से आपको अपमान मिल सकता है। नौकरानी और अन्य निचले स्तर के लोगों के साथ आप मौज–मस्ती प्राप्त कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (09:01:2023 से 19:03:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत उत्तम दशा होगी। आप वाहन और आभूषण खरीदेंगे। आप शास्त्रों और वेदों को सीखने में रूचि लेंगे। निवेश के लिए यह एक अति उत्तम दशा होगी। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि व्यापार कर रहे हैं, तो आपको व्यापार में लाभ मिलेगा। आपका विवाह हो सकता है। अपने जीवनसाथी और संतान के साथ आप आनन्दभ्रमण पर जायेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (19:03:2023 से 16:04:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक असहज दशा हो सकती है। परिवार के किसी बड़े व्यक्ति को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। शत्रु परिवार में कलह उत्पन्न करने की कोशिश कर सकते हैं। आपकी बहन के विवाह में परेशानियां आ सकती हैं। आपके आभूषण खो सकते हैं। सरकारी और विशिष्ट अधिकारियों से आपको परेशानियां हो सकती हैं। आपको पीलिया या जिगर की अन्य समस्यायें हो सकती हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (16:04:2023 से 06:07:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक कष्ट रहित दशा होगी। आपको वस्त्र, रत्न

और आभूषण प्राप्त होंगे। आप अपने जीवनसाथी सहित महिलाओं को खुश करने में व्यस्त रहेंगे। आपको एक पुत्री की प्राप्ति हो सकती है। आप कई प्रकार की चीजें सीखेंगे। आप समारोहों और अन्य मौज-मस्ती के कामों में पूरी तरह से रत रहेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (06:07:2023 से 31:07:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको सरकार से लाभ होगा। आप रोजगार में बदलाव कर सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको व्यापार में लाभ मिलेगा। आप धार्मिक कार्यों में संलग्न रहेंगे। यदि आप राजनीति से जुड़े हैं, तो चुनाव लड़ने के लिए यह एक उत्तम समय है। आपको पैतृक सम्पत्ति प्राप्त हो सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (31:07:2023 से 09:09:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपनी अधिकतर कामनाओं को पूरा करने में सक्षम होंगे। निवेश के लिए यह उपयुक्त समय है। आपका विवाह हो सकता है। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। विभिन्न स्रोतों से आपको धन का लाभ होगा। आपके घर पर कई शुभ समारोह आयोजित हो सकते हैं। हालाँकि, इस दशा के अन्तिम दो दिन आपके पूरे परिवार के लिए बहुत खराब हो सकते हैं। किसी दूर स्थान से कोई अशुभ समाचार मिल सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (09:09:2023 से 07:10:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके पेट में अल्सर, तीव्र जलन, अपचन, बवासीर या गुदा में दर्द की शिकायत हो सकती है। आपको हथियारों से खतरा हो सकता है। अपने जीवनसाथी और संतान से आपका अलगाव हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (07:10:2023 से 19:12:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। परिणाम लगभग पिछली दशा के समान ही होंगे। आपको अचानक धन का लाभ हो सकता है। अब तक अनसुलझे सम्पत्ति विवाद सुलझ जायेंगे। आपके सहोदरों को कष्ट हो सकता है।

शनि अर्न्तदशा (19:12:2023 से 20:07:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए बहुत उत्तम नहीं हो सकती है। आपको अकथित परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आप संबंधियों के कारण दुख और खतरों का सामना कर सकते हैं। आप, आपका जीवनसाथी, संतानें, माता-पिता एक साथ कई रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आपका चिकित्सकीय खर्चा बढ़ सकता है। आप उपचार के विभिन्न तरीके अपना सकते हैं और धन बर्बाद कर सकते हैं। हालांकि, अन्तर्दशा के अन्त में आपको कोई ऐसा व्यक्ति मिल सकता है जो कुछ उपचार के तरीके बतायेगा और आप उनका प्रयोग आखिरी उपाय के रूप में करके परिणाम प्राप्त करेंगे।

बिना उपायों के प्रयोग के अगली बुध की अन्तर्दशा में सुधार होना तय है- जो कि सबसे उत्तम दशा होगी। परिस्थितियों के कारण आपको खुशियां प्राप्त होने में कठिनाई आ सकती है। आपको अपनी माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए- जैसाकि यह अन्तर्दशा माता के लिए संकटकरी हो सकती है। आपको अपने परिवार के बड़ों या पारिवारिक देवता का शाप लग सकता है। आपका शरीर कमजोर हो सकता है और आपको अपने स्वास्थ्य में सुधार करने में बहुत परेशानी हो सकती है। डॉक्टर रोग का पता लगाने में असफल हो सकते हैं। अन्ततः आपको पता चल सकता है कि कोई अदृश्य ताकत आपके शरीर के अन्दर है। आपको सरकारी अधिकारी के क्रोध का सामना करना पड़ सकता है।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में शनि की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या शत्रु, माता, संबंधी, भाई–बन्धु, कर्ज आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– रोज शनि स्तोत्र का पाठ करें।
2– महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।
3– सोने की गाय या भैंस का दान करें।

शनि प्रत्यंतर्दशा (19:12:2023 से 20:03:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप दूसरों की सलाह मानकर अदृश्य जाल में फंस सकते हैं। शत्रु आपको केवल हताश करने के लिए गलत सलाह दे सकते हैं। आपके सगे भाई बहन आपके द्वारा दिये गये गलत उपचार के कारण परेशान हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (20:03:2024 से 10:06:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा में जीवन के अति कटु अनुभवों का अहसास इस दशा में धीरे–धीरे बदल जायेगा। आपमें एक ऐसा अहसास विकसित होगा, कि आपके आस–पास की हर चीज वास्तविक रूप से आपके अनुकूल हो रही है। हालाँकि आपको पूर्णिमा और कृष्ण पक्ष के दौरान बहुत सावधान रहना चाहिए। आपको इन दिनों में लम्बी यात्रायें नहीं करना चाहिए– जैसाकि कुछ दुर्घटनायें हो सकती हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (10:06:2024 से 14:07:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान अनिश्चितता की स्थिति बनी रहेगी। एक के बाद एक समस्यायें पैदा हो सकती हैं। परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। परिवार में वैवाहिक संबंध टूट सकते हैं। सम्पत्ति के बंटवारे में विवाद हो सकता है, आप तीर्थयात्रा पर जायेंगे और बाहरी लोगों से आपका झगड़ा हो सकता है। जीवनसाथी और संतान आपके लिए समस्यायें पैदा कर सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (14:07:2024 से 19:10:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके प्रेमपूर्ण जीवन में उतार–चढ़ाव आ सकते हैं। आप और आपके जीवनसाथी के बीच परस्पर प्रेम एक समय पर शिखर पर होगा और थोड़े ही समय में वह धरातल पर आ सकता है। आप दोनों को अतिरिक्त वैवाहिक संबंध बनाने के अवसर मिलेंगे, जिससे आप दोनों के बीच प्रायः कटुता आ सकती है। इस दशा के दौरान संतानों को कष्ट हो सकता है। रक्त संबंधी रोग हो सकते हैं। आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (19:10:2024 से 17:11:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत खराब दशा हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य गंभीर हो सकता है। आपके अपने पिता के इलाज में भारी धन व्यय करना पड़ सकता है। साथ ही आपकी माता को लकवा हो सकता है। आपको अपने रोजगार या व्यापार से दूर होने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (17:11:2024 से 04:01:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक सामान्य दशा होगी। बहुत अधिक गतिविधियां नहीं होंगी। हालाँकि, आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। आपकी आय भी कुछ हद तक बेहतर होगी। आप समय–समय पर मौज मस्ती करेंगे और तीर्थयात्रा पर जायेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (04:01:2025 से 07:02:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको अपने शरीर के सुरक्षा की अधिक देखभाल करनी चाहिए। प्रायः आपको छोटी दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है। ये दुर्घटनायें सिर्फ वाहन से ही नहीं, बल्कि स्नानागार में फिसलने, सब्जी आदि काटते समय चाकू से कटने से भी हो सकती है। आपका अपने जीवनसाथी से प्रायः विवाद हो सकता है। आप मंगल से संबंधित वस्तुओं से उत्तम लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (07:02:2025 से 04:05:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपने पिछली दशा में कामों की शुरूआत कर दी थी, लेकिन आपका उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता है और आपने जो कुछ निवेश किया था, उसका आपको नुकसान हो सकता है। अतः आपके लिए यह बेहतर होगा, कि आप अपनी पूंजी तैयार रखें, जिसकी किसी भी समय आवयकता पड़ सकती है। आपके जीवनसाथी से आपके प्रायः झगड़े हो सकते हैं। आप समय पर भोजन नहीं कर पायेंगे। यदि मंगल बली है, तो आप मंगल से संबंधित वस्तुओं से उत्तम लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

बृहस्पति प्रत्यंतर्दशा (04:05:2025 से 20:07:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपने पिछली कुछ दशाओं में जो खोया है, वह इस दशा में वापस मिल जायेगा। आपकी प्रगति धीरे–धीरे शुरू हो जायेगी। इस प्रत्यंतर्दशा के मध्य में आपको सारभूत आय होगी। आपके अपनी संतान और जीवनसाथी से आत्मीय संबंध होंगे।

बुध अर्न्तदशा (20:07:2025 से 19:12:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः धन प्राप्त करने के लिए यह सबसे उत्तम दशा है। आपको निरन्तर धन प्राप्त होगा। हालांकि, मात्रा आपके परिवार की पृष्ठभूमि और आपको प्राप्त पद के स्तर के अनुसार होगी। आपको सुन्दर परिधान, आभूषण तथा नये मवेशी प्राप्त होंगे। आप अपने सभी उपक्रमों में सफलता और विभिन्न तरीकों से लाभ की आशा कर सकते हैं। आपके नाम और यश में वृद्धि होगी तथा आपको समाज में उचित स्थान प्राप्त होगा। नये प्राप्त ज्ञान और शिक्षा से आप संपन्नता प्राप्त करेंगे। यदि आपकी कुण्डली में बुध कमजोर भी है, तो भी इस अन्तर्दशा के दौरान आपको बहुत परेशानी नहीं होगी।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में बुध की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, व्यापार, प्रतिष्ठा, धन–संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– दुर्गा की पूजा करें एवं छोटी कन्याओं की सेवा करें।
2– विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करें।
3– बकरी का दान करें।

बुध प्रत्यंतर्दशा (20:07:2025 से 02:10:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आप अपनी अधिकतर चिन्ताओं से मुक्त रहेंगे। धन का सहज आगमन होगा। आप भूमि, सम्पत्ति और आभूषण खरीदेंगे। आपको जीवनसाथी और संतान को सुख प्राप्त होगा। व्यापार में सम्पन्नता आएगी। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी। यदि अब तक कोई सम्पत्ति विवाद अनसुलझा है, तो इस दशा के दौरान उसका निर्णय आपके पक्ष में हो जायेगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (02:10:2025 से 01:11:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आर्थिक मामलों के लिए यह दशा उत्तम होगी। लेकिन आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। आप बुखार, पीलिया और चर्म रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपकी संतानें शैक्षिणिक और व्यावसायिक दोनों क्षेत्रों में अपनी दक्षता प्रदर्शित करेंगी। आपको पदोन्नति मिल सकती है। हालाँकि, शत्रु आपसे ईर्ष्या करेंगे और आपके लिए परेशानियां पैदा करने की कोशिश करेंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (01:11:2025 से 26:01:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपना अधिकतर समय धार्मिक कार्यों में लगायेंगे। आप सरकारी अधिकारियों की मदद से अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करेंगे। आपको कृषि उत्पादों से लाभ हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (26:01:2026 से 21:02:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप सरकार की मदद से धन अर्जित करेंगे। यदि सूर्य पर मंगल की दृष्टि है, तो आपको भूमि, भोजन और वस्त्र प्राप्त होंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (21:02:2026 से 05:04:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि चंद्रमा केन्द्र या त्रिकोण या अपने भाव या उच्चस्थ भाव में स्थित है, तो आप एक राजा की तरह अति उत्तम परिणामों का आनन्द प्राप्त करेंगे। यदि चंद्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि है, तो आपका विवाह हो सकता है, आपको एक पुत्र और नये वस्त्रों तथा आभूषणों की प्राप्ति हो सकती है। आप अपने घर का निर्माण कर सकते हैं। आप शास्त्रों का अध्ययन करेंगे और अपने देश के दक्षिणी स्थानों की यात्रा करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (05:04:2026 से 05:05:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपको मवेशियों और कृषि योग्य भूमि की प्राप्ति होगी। आपको अपनी खोई हुई स्थिति पुनः प्राप्त होगी। संबंधी आपसे स्नेह करेंगे और आपको धन का लाभ होगा।

राहु प्रत्यंतर्दशा (05:05:2026 से 22:07:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको धन का लाभ होगा। आप धार्मिक स्थानों की यात्रा और धार्मिक कार्यों का निर्वहन करेंगे, आपको सरकार से समर्थन प्राप्त होगा। आपको इस दशा के आरम्भ में कुछ समस्यायें हो सकती हैं, जो बाद में समाप्त हो जायेंगी और आपको लाभ प्राप्त होंगे।

बृहस्पति प्रत्यंतर्दशा (22:07:2026 से 29:09:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी। आप धन संग्रह करेंगे, भूमि खरीदेंगे और घर पर शुभ समारोहों का आयोजन करेंगे। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको व्यापार में लाभ मिलेगा। अपने वर्तमान व्यापार का विस्तार करने के लिए यह एक अति उत्तम दशा है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (29:09:2026 से 19:12:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा में प्राप्त लाभों से आप इस दशा के दौरान और फायदा उठायेंगे। आपकी सारी गतिविधियों का आगे और विस्तार होगा और आपके धन कोष में बढ़ोत्तरी होगी। इस समय आप अपनी आर्थिक स्थिति को और सुदृढ़ बना सकते हैं। आय में वृद्धि को देखकर आपमें अधिक से अधिक आनन्द प्राप्त करने की प्रवृत्ति आयेगी। लेकिन आपने जो इस और पिछली दशा के दौरान अर्जित किया है, उसे आपको बचाकर रखना चाहिए– जैसाकि आगे आपको अति अशुभ दशा का सामना करना पड़ सकता है।

केतु अर्न्तदशा (19:12:2026 से 20:07:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। आप मानसिक तनाव से गुजर सकते हैं। आपके प्रियजनों को निराशा का सामना करना पड़ सकता है। आपको धन हानि हो सकती है। प्रतिकूल परिस्थितियों और वातावरण के साथ आपमें दूसरों को धोखा देने की प्रवृत्ति हो सकती है। पानी और जलीय चीजों से आपको खतरा हो सकता है। अतः आपको पानी से संबंधित गतिविधियों जैसे तैराकी, नदी, सागर या तालाब में स्नान आदि से दूर रहना चाहिए। द्रव रसायनों से संबंधित किसी व्यापार में आपको संलग्न नहीं होना चाहिए। हालांकि, आपको इसमें लाभ हो सकता है, लेकिन विस्फोट होने या जहर फैलने का इसमें खतरा हो सकता है।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में केतु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या पिता, रोग, कार्य (नौकरी या व्यवसाय) आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– केतु के बीज मंत्र का 21 दिनों में सतरह हजार जप करें।
2– सर्वसम्पत्प्रदायक मृत्युंजय मंत्र का पाठ करें।
3– गणपति के 108 नामों का जप करें।

केतु प्रत्यंतर्दशा (19:12:2026 से 01:01:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको जीवनसाथी और संतान से खुशियां प्राप्त होगी। आप भूमि खरीदेंगे। आप अपना समय धार्मिक कार्यों में लगायेंगे। आपकी मंत्र जाप और भगवान शिव की आराधना में रूचि होगी। आप अपने निवास स्थान से दक्षिण की दिशा में यात्रा करेंगे। आपके नाना को खतरा हो सकता है। आप बुखार, नेत्र विकार, लिवर की शिकायतों, खांसी, सर्दी और आंतों में दर्द से पीड़ित हो सकते हैं। आपका विवाह हो सकता है। आपको दवाओं और ज्योतिषशास्त्र से आय प्राप्त होगी।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (01:01:2027 से 05:02:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका भाग्य उत्तम होगा। आपको खोई हुई सम्पत्ति प्राप्त होगी। आपको वाहन सुख प्राप्त होगा और आप पवित्र स्थानों की यात्रा करेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (05:02:2027 से 16:02:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपमें भगवान शिव के प्रति आस्था विकसित होगी। राजनीति में आपको सफलता मिलेगी। सरकार से आपको समर्थन प्राप्त होगा। आप तीर्थयात्रा पर जायेंगे। पिता के साथ आपका झगड़ा हो सकता है। आपको जलीय उत्पादों से आय प्राप्त होगी। आप उदर और आंत के रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपकी माता को लकवा हो सकता है। आप ईर्ष्यालु लोगों की संगति कर सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (16:02:2027 से 06:03:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत

चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप बेहतर पारिवारिक जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आप जलीय उत्पादों से आय प्राप्त करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (06:03:2027 से 18:03:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप परिवहन से आय प्राप्त करेंगे। आपकी माता और जीवनसाथी को विभिन्न रोग हो सकते हैं। आपकी रूचि रोजगार या व्यापार में परिवर्तन करने में हो सकती है। आपको मानसिक हताशा हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (18:03:2027 से 19:04:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। भवन निर्माण, सीमेंट, संगमरमर और अन्य पत्थर की चीजों के व्यापार के लिए यह अति उत्तम दशा है। यदि आप पहले से इस क्षेत्र में व्यापार कर रहे हैं, तो आपको भारी लाभ होगा।

बृहस्पति प्रत्यंतर्दशा (19:04:2027 से 17:05:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपने गुरु को अप्रसन्न कर सकते हैं, जिससे आपको उनके शाप का भाजन बनना पड़ सकता है। अध्यापन के द्वारा आप अतिरिक्त आय प्राप्त करेंगे। आपको सर्दी, खांसी, दमा, हार्निया की शिकायत हो सकती है। आपके दार्शनिक और धार्मिक ज्ञान में बढ़ोत्तरी होगी। यद्यपि आपकी संतान का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, लेकिन उनके शैक्षिणिक कामों में विशिष्टता आपको खुशी प्रदान करेगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (17:05:2027 से 20:06:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक विरोधपूर्ण दशा होगी। नौकर आपके लिए एक समस्या बन सकते हैं। आपके घर में चोरी हो सकती है। संबंधी समस्यायें पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं। मित्र शत्रु बन सकते हैं। आपको व्यवसाय से अवसरीय लाभ मिलेंगे। आप सिरदर्द, जोड़ों में दर्द, पेचिश और भारी हताशा का सामना कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (20:06:2027 से 20:07:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पूर्ण रूप से संशयग्रस्त और विभ्रमित दिमाग के कारण आप अशांत हो सकते हैं। आपको एक दास की तरह जीवन यापन करना पड़ सकता है। आप मिर्गी और पागलपन का शिकार हो सकते हैं। आप जुए में रत रह सकते हैं और धन गवाँ सकते हैं। आपको अपनी भूमि और अन्य सम्पत्ति बेचने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आपके प्रायः सभी से विवाद और बहस हो सकती है। आपको ग्रहों के क्रोध को शांत करने के लिए भगवान शिव और देवी पार्वती की आराधना करनी चाहिए।

शुक्र अर्न्तदशा (20:07:2027 से 21:03:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। आप नावों या जहाजों से यात्रायें करेंगे और सोना, पानी, रत्नों, महिलाओं और कृषि से संबंधित सामानों के व्यापार में संलग्न रहेंगे। आप महिलाओं के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने में गहरी रूचि लेंगे। संतान, मित्र और मवेशी प्राप्त करने के लिए यह अनुकूल दशा है। यदि आपकी कुण्डली में शुक्र बहुत बली नहीं है, तो भी विषम परिणाम नहीं मिलेंगे।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन–सम्पत्ति, सरकारी कार्य, मित्र, परिवारजन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– शुक्रवार को एक गड्ढा खोदकर दो सौ ग्राम दही रखकर सफेद कपड़ा से ढक कर राख डालें।
2– दुर्गासूक्त का पाठ करें।
3– चाँदी की दुर्गा–मूर्ति दान करें।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (20:07:2027 से 30:10:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको प्रचुर धन प्राप्त होगा, लेकिन वह खर्च हो जायेगा और आप कर्जदार हो सकते हैं। आपके विवाहेत्तर संबंध हो सकते हैं और उसमें आप धन बर्बाद कर सकते हैं। आपमें ईश्वर के प्रति तीव्र आस्था होगी। आपको पीलिया और नाखूनों में समस्यायें हो सकती है। आपको किसी जानवर के काटने का भय है। यदि आप दवा के व्यापारी या एक कलाकार हैं, तो आपको लाभ प्राप्त होंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (30:10:2027 से 29:11:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के पहले अर्धभाग में आपको अति उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। आपको धन, भूमि और सम्पत्ति का अप्रत्याशित लाभ प्राप्त होगा। दशा के दूसरे अर्धभाग में आप उदर विकार, गले, नाक, आँख के रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं। धोखा धड़ी के द्वारा आपको धन हानि हो सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (29:11:2027 से 19:01:2028)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपकी आय व्यय से अधिक होगी। आपको महिलाओं से मदद मिलेगी। आपका विवाह तय हो जायेगा। वैवाहिक समारोहों में कुछ समस्यायें आ सकती हैं। अतः आपको विवाह स्थगित कर देना चाहिए। यदि आप विवाहित हैं, तो आपको एक पुत्री प्राप्त हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (19:01:2028 से 24:02:2028)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप दवाओं, सोने, तांबे और आभूषणों का व्यापार करेंगे। हालाँकि, बेहतर परिणाम के लिए आपको अगली प्रत्यंतर्दशा तक प्रतीक्षा करनी होगी। आपको भूमि प्राप्त हो सकती है या आप उसको बेच कर उत्तम मात्रा में लाभ कमा सकते हैं। जिन स्त्रियों के साथ आपको अतिरिक्त लगाव होगा, उनके साथ आपको कुछ गलतफहमी हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (24:02:2028 से 25:05:2028)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपनी खोई हुई सम्पत्ति वापस पाने का अवसर मिलेगा। आपकी संतानों की पढ़ाई में सफलता आपको प्रसन्नता प्रदान करेगी। अब तक अनसुलझे सम्पत्ति विवाद इस दशा के दौरान सुलझ जायेंगे। आपके शरीर में चोट लग सकती है, आग से आपको भय हो सकता है। चोर भी आपको नुकसान पहुंचा सकते हैं।

बृहस्पति प्रत्यंतर्दशा (25:05:2028 से 14:08:2028)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपका विवाह हो सकता है या आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपको भूमि और संपत्ति की प्राप्ति होगी। आप अन्य भौतिक सम्पत्तियों में निवेश करेंगे। सरकार से आपको सम्मान मिलेगा। आप विभिन्न प्रकार के धार्मिक कार्य करेंगे। आप तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं और सन्तों का आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (14:08:2028 से 19:11:2028)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप समाज के महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सम्पर्क में रहेंगे। उनकी मदद से आप बहुत अधिक धन कमाने में सक्षम होंगे। हालाँकि, आप धन की प्राप्ति के लिए सभी दूसरे दर्जे के तरीके अपनायेंगे, जैसे घूस देना आदि। दशा के मध्य में आप अपने सभी कामों में सफल होंगे। दशा के अन्त में आपको भारी नुकसान और विभिन्न रोग हो सके हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (19:11:2028 से 13:02:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी। आप सौन्दर्य प्रसाधनों, पेड़ों, फलों, जानवरों और परिवहन से आय प्राप्त कर सकते हैं। आपके शत्रु परास्त होंगे। भूमि के विक्रय से आपको धन प्राप्त होगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (13:02:2029 से 21:03:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक सामान्य दशा होगी। आपकी दैनिक गतिविधियों में प्रायः बदलाव होंगे। सुबह में आपको लगेगा कि समय आपके अनुकूल हो रहा है, और आप कई योजनायें बनायेंगे, लेकिन शाम होने तक आपके सारे सपने और योजनायें ध्वस्त हो सकती हैं। रोग आपसे आँख मिचौली खेल सकते हैं।

सूर्य अन्तर्दशा (21:03:2029 से 19:09:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। आप सरकारी अधिकारियों से समर्थन प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं। आप अत्यधिक साहस और वीरता का प्रदर्शन करेंगे। समाज में आपको सम्मान मिलेगा। रोगों से मुक्ति मिलेगी। हालांकि, कभी-कभी आपको पित्त रस और वायु विकार हो सकते हैं। आपको दुर्घटना के कारण चोट लग सकती है। एक तरफ आपको उत्तम मात्रा में धन मिलेगा, लेकिन आप चोरी आदि के कारण उसको खो भी सकते हैं।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-सम्पत्ति, पिता, जन्मस्थान, आँख आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1- जल में चीनी एवं लाल फूल डालकर सूर्य को अर्घ्य दें।
2- भगवान शिव की पूजा करें।
3- आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करें।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (21:03:2029 से 30:03:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अधिकार और शक्ति प्राप्त लोगों से लाभ मिलेगा। हालाँकि, आपको भूमि की हानि हो सकती है और आपके खर्चे बहुत बढ़ सकते हैं। आपका सहोदरों के साथ सम्पत्ति मामलों में विवाद हो सकते हैं। आप निराशा के कारण घर छोड़ सकते हैं। आप बुखार से पीड़ित हो सकते हैं। दशा के अन्त में आपको कुछ हद तक उत्तम परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (30:03:2029 से 14:04:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका विवाह हो सकता है। आपके धन में बढ़ोत्तरी होगी, आप भूमि और भवन खरीदेंगे, ससुराल से आपको विरासत में भूमि मिल सकती है और आपकी पैतृक सम्पत्ति नष्ट हो सकती है। आप नेत्र या जलीय रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपके सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि व्यापार कर रहे हैं, तो आपको उसमें भारी लाभ होगा।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (14:04:2029 से 25:04:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। धन और संपत्ति के मामले में यह एक उत्तम दशा होगी। आपके सगे भाई-बहन आपका सहयोग करेंगे। आपको अपने जीवनसाथी और संतान से आराम एवं खुशियां प्राप्त होंगी। आपके पिता के साथ आपके संबंध आत्मीय नहीं हो सकते हैं। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आप तीर्थयात्राओं पर जायेंगे।

राहु प्रत्यंतर्दशा (25:04:2029 से 22:05:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशाओं में आपको जो लाभ प्राप्त हुए थे, वे इस दशा में लुप्त हो सकते हैं। आप अनैतिक कार्यों से धन कमा सकते हैं। आपका सरकारी अधिकारियों से विवाद हो सकता है। आपके कई शत्रु पैदा हो सकते हैं, जो आपको किसी भी समय फंसा सकते हैं। आपका विवाह हो सकता है।

बृहस्पति प्रत्यंतर्दशा (22:05:2029 से 15:06:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी, संतान की प्राप्ति होगी, सरकार और संतानों से आपको धन मिलेगा। आपको कान और फेफड़ों के रोग हो सकते हैं। आप अपने पद को खो सकते हैं। आप ईश्वर की आराधना और धार्मिक कार्य करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (15:06:2029 से 14:07:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत उत्तम दशा होगी। आप विभिन्न सौदों में भारी लाभ की आशा कर सकते हैं। आप भूमि और संपत्ति खरीद सकते हैं और विभिन्न तरीकों से आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। आप बाहर घूमने जा सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (14:07:2029 से 09:08:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा अति शुभ और अति अशुभ परिणामों का मिश्रण होगी। यदि प्रथम अर्द्धावस्था बहुत शुभ है, तो बाद की दूसरी अवस्था अशुभ हो सकती है या इसका उलटा हो सकता है। यदि अन्य अनुकूल युतियां भी विद्यमान हैं, तो आप एक राजा या उसके समान बन सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (09:08:2029 से 20:08:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा नहीं हो सकती है। विभिन्न कारणों से आपको भारी दुखों का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने पद और धन की हानि हो सकती है। आपमें आत्महत्या करने की प्रवृत्ति आ सकती है। आप विदेश यात्रा पर जा सकते हैं, जहाँ आपको दुखों का सामना करना पड़ सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (20:08:2029 से 19:09:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। दशा के प्रथम 10 दिनों के दौरान आप वाहन खरीद सकते हैं या वाहनों की मुफ्त में सवारी करेंगे। अगले 10 दिनों के दौरान आप अपने परिवार के साथ आनन्द प्राप्त करेंगे, आपके पास अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त धन होगा। आखिरी 10 दिनों के दौरान आपको दुर्भाग्य का सामना करना पड़ सकता है। आप परिश्रम से अर्जित किया हुआ धन, नाम और सम्मान गवाँ सकते हैं। आपको गले के रोग, लकवा और शरीर में दर्द की शिकायत हो सकती है।

गोचर शनि (शनि साढ़ेसाती) का फल और उपाय

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर।/ढुसार्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चंद्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।

सामान्यतः यह माना जाता है, कि शनि की साढ़ेसाती के दौरान जातक मानसिक कष्ट, शारीरिक कष्ट एवं आर्थिक संकट से गुजरता है। साढ़ेसाती से लोग चिन्तित हो जाते हैं एवं उनके मन में एक अनजाना सा डर बना रहता है। जातक में असंतोष, निराशा, आलस्य, तनाव, रोगों से हानि, चोरी या आगजनी से हानि, घर में विवाद या किसी पारिवारिक सदस्य की मृत्यु आदि जैसे फल प्राप्त होने का डर बना रहता है। लेकिन हकीकत में साढ़ेसाती के किसी चरण का पूरा समय– साढ़े सात साल– ऐसा नहीं होता है। काफी शुभ फल जैसे विवाह, संतानोत्पत्ति, नौकरी या व्यवसाय में उन्नति, विदेश यात्रा, भूमि, भवन या वाहन का क्रय, कर्ज से मुक्ति, उंचे तबके के लोगों से संपक्र और उनसे लाभ, धार्मिक स्थलों की यात्रा या धार्मिक कार्यों का आयोजन, संतानों से सुख एवं खुशी आदि भी प्राप्त होते हैं।

प्रथम चक्र

कंटक शनि

14/12/1941 – 14/12/1941

गोचर राशि – वृष

समयावधि :

0.0 y.0.0 m.0 d.

इस चरण के दौरान आपको अशुभ फल कम प्राप्त होंगे। आपके शत्रु स्वतः समाप्त हो जाएंगे। वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। अपनी सेहत का ख्याल रखें। आपके मानसिक कष्ट में वृद्धि हो सकती है। संतान की ओर से कुछ कष्ट प्राप्त हो सकात है। अपने जीवनसाथी के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

आपके लिए इस चरण की शुरूआत ठीक नहीं हो सकती है। अचानक होने वाली हानि के कारण आप क्रोधी स्वभाव के हो सकते हैं। आप अपनी वाणी पर संयम खो सकते हैं। जीवनसाथी के माध्यम से धार्मिक सत्संग का लाभ होगा। आपके विरोधी एवं शत्रु कमजोर रहेंगे। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं, तो आप पर आर्थिक आरोप लग सकता है या आपका स्थानान्तरण हो सकता है। कहीं भी धन निवेश काफी सोच–विचार करने के बाद ही करें, तथा जहां तक संभव हो सके, किसी को उधार ना दें। आपका धन डूब सकता है। अशांत रह सकते हैं एवं अत्यधिक खर्च कर सकते हैं। अपने खर्चों पर रोक लगायें, अन्यथा परेशानी में पड़ सकते हैं।

इस चरण के दौरान आपके जीवन में कोई बड़ा परिवर्तन हो सकता है, जो वर्तमान में आपको हानि दे सकता है, परन्तु भविष्य में इससे काफी लाभ हो सकता है। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। आपके व्यवसाय में हानि हो सकती है। चरण के अन्त समय में राज्य की ओर से आपके व्यवसाय में लाभ प्राप्त हो सकता है। आपकी संतान को कष्ट हो सकता है। अपनी माता की ओर से आपका विरोध हो सकता है। यदि अदालत में संपत्ति से संबंधित कोई मुकदमा चल रहा है, तो आपको पराजय का सामना करना पड़ सकता है।

आपके निवास पर चोरी की संभावना है। यदि संभव हो तो अपने कीमती एवं महत्वपूर्ण वस्तुओं का बीमा करवा लें। यदि आप किसान हैं, तो अपनी फसल पर ध्यान दें। फसल कटने से ठीक पहले खराब होने की संभावना है। आपको ननिहाल पक्ष से अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आपकी पत्नी गर्भवती हैं, तो आपके पुत्र रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके भाई एवं मित्र धोखा दे सकते हैं, जिससे आप आर्थिक समस्या में आ सकते हैं।

कंटक शनि

03/03/1942 – 05/08/1943

गोचर राशि – वृष

समयावधि :

1.0 y.5.0 m.3 d.

इस चरण के दौरान आपको अशुभ फल कम प्राप्त होंगे। आपके शत्रु स्वतः समाप्त हो जाएंगे। वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। अपनी सेहत का ख्याल रखें। आपके मानसिक कष्ट में वृद्धि हो सकती है। संतान की ओर से कुछ कष्ट प्राप्त हो सकात है। अपने जीवनसाथी के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

आपके लिए इस चरण की शुरूआत ठीक नहीं हो सकती है। अचानक होने वाली हानि के कारण आप क्रोधी स्वभाव के हो सकते हैं। आप अपनी वाणी पर संयम खो सकते हैं। जीवनसाथी के माध्यम से धार्मिक सत्संग का लाभ होगा। आपके विरोधी एवं शत्रु कमजोर रहेंगे। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं, तो आप पर आर्थिक आरोप लग सकता है या आपका स्थानान्तरण हो सकता है। कहीं भी धन निवेश काफी सोच–विचार करने के बाद ही करें, तथा जहां तक संभव हो सके, किसी को उधार ना दें। आपका धन डूब सकता है। अशांत रह सकते हैं एवं अत्यधिक खर्च कर सकते हैं। अपने खर्चों पर रोक लगायें, अन्यथा परेशानी में पड़ सकते हैं।

इस चरण के दौरान आपके जीवन में कोई बड़ा परिवर्तन हो सकता है, जो वर्तमान में आपको हानि दे सकता है, परन्तु भविष्य में इससे काफी लाभ हो सकता है। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। आपके व्यवसाय में हानि हो सकती है। चरण के अन्त समय में राज्य की ओर से आपके व्यवसाय में लाभ प्राप्त हो सकता है। आपकी संतान को कष्ट हो सकता है। अपनी माता की ओर से आपका विरोध हो सकता है। यदि अदालत में संपत्ति से संबंधित कोई मुकदमा चल रहा है, तो आपको पराजय का सामना करना पड़ सकता है।

आपके निवास पर चोरी की संभावना है। यदि संभव हो तो अपने कीमती एवं महत्वपूर्ण वस्तुओं का बीमा करवा लें। यदि आप किसान हैं, तो अपनी फसल पर ध्यान दें। फसल कटने से ठीक पहले खराब होने की संभावना है। आपको ननिहाल पक्ष से अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आपकी पत्नी गर्भवती हैं, तो आपके पुत्र रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके भाई एवं मित्र धोखा दे सकते हैं, जिससे आप आर्थिक समस्या में आ सकते हैं।

कंटक शनि

17/12/1943 – 23/04/1944

गोचर राशि – वृष

समयावधि :

0.0 y.4.0 m.6 d.

इस चरण के दौरान आपको अशुभ फल कम प्राप्त होंगे। आपके शत्रु स्वतः समाप्त हो जाएंगे। वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। अपनी सेहत का ख्याल रखें। आपके मानसिक कष्ट में वृद्धि हो सकती है। संतान की ओर से कुछ कष्ट प्राप्त हो सकात है। अपने जीवनसाथी के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

आपके लिए इस चरण की शुरूआत ठीक नहीं हो सकती है। अचानक होने वाली हानि के कारण आप क्रोधी स्वभाव के हो सकते हैं। आप अपनी वाणी पर संयम खो सकते हैं। जीवनसाथी के माध्यम से धार्मिक सत्संग का लाभ होगा। आपके विरोधी एवं शत्रु कमजोर रहेंगे। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं, तो आप पर आर्थिक आरोप लग सकता है या आपका स्थानान्तरण हो सकता है। कहीं भी धन निवेश काफी सोच–विचार करने के बाद ही करें, तथा जहां तक संभव हो सके, किसी को उधार ना दें। आपका धन डूब सकता है। अशांत रह सकते हैं एवं अत्यधिक खर्च कर सकते हैं। अपने खर्चों पर रोक लगायें, अन्यथा परेशानी में पड़ सकते हैं।

इस चरण के दौरान आपके जीवन में कोई बड़ा परिवर्तन हो सकता है, जो वर्तमान में आपको हानि दे सकता है, परन्तु भविष्य में इससे काफी लाभ हो सकता है। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। आपके व्यवसाय में हानि हो सकती है। चरण के अन्त समय में राज्य की ओर से आपके व्यवसाय में लाभ प्राप्त हो सकता है। आपकी संतान को कष्ट हो सकता है। अपनी माता की ओर से आपका विरोध हो सकता है। यदि अदालत में संपत्ति से संबंधित कोई मुकदमा चल रहा है, तो आपको पराजय का सामना करना पड़ सकता है।

आपके निवास पर चोरी की संभावना है। यदि संभव हो तो अपने कीमती एवं महत्वपूर्ण वस्तुओं का बीमा करवा लें। यदि आप किसान हैं, तो अपनी फसल पर ध्यान दें। फसल कटने से ठीक पहले खराब होने की संभावना है। आपको ननिहाल पक्ष से अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आपकी पत्नी गर्भवती हैं, तो आपके पुत्र रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके भाई एवं मित्र धोखा दे सकते हैं, जिससे आप आर्थिक समस्या में आ सकते हैं।

अष्टम शनि

20/09/1950 – 25/11/1952

गोचर राशि – कन्या

समयावधि :

2.0 y.2.0 m.6 d.

इस चरण के प्रारम्भ में ही आपको कुछ ऐसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जिससे उबरने में आपको काफी समय लग सकता है। आपको आर्थिक हानि हो सकती है। परिवार एवं समाज में अपमान हो सकता है। सरकारी कार्यों में सफलता प्राप्त हो सकती है। काफी खर्चे हो सकते हैं। अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

इस चरण के दौरान आपके दुर्घटनाग्रस्त होने की संभावना है। पूरे चरण के दौरान कम से कम चार बार रक्तदान कर दुर्घटना को टाला जा सकता है। आप किसी कानूनी समस्या में फँस सकते हैं। धन संबंधी कोई भी कार्य सोच–समझकर करें। धन डूबने की संभावना है। किसी यात्रा के दौरान चोरी के माध्यम से हानि हो सकती है। भाग्य आप पर मेहरबान नहीं हो सकता है। हर कदम पर हानि हो सकती है। चरण के अन्त समय में आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है। स्वयं की अर्जित परेशानी भविष्य में काफी कष्टदायक साबित हो सकती है। संचार के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। आप किसी लम्बी दूरी की यात्रा कर सकते हैं, जिसमें शुरू में धन खर्च हो सकता है, लेकिन बाद में लाभ हो सकता है। संतान पक्ष से कोई चिन्ता हो सकती है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचा सकते हैं या आपको किसी संकट में डाल सकते हैं। जोखिम भरे कार्यों से दूर रहें।

यदि आप सराकारी नौकरी करते हैं, तो आपका स्थानान्तरण हो सकता है। अपने कार्यों में रूकावट आने से आपका मन खिन्न हो सकता है। आप मानसिक कष्ट से गुजर सकते हैं। चरण के मध्य काल में कोई विशेष मनोकामना पूरी हो सकती है। आपके विरोधी षडयंत्र कर सकते हैं, सावधान रहें। जीवनसाथी से कोई बड़ी तकरार हो सकती है। अपने क्रोध एवं वाणी पर संयम रखें, अन्यथा मुसीबत में फँस सकते हैं। यदि आपने कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ किया है, तो आर्थिक हानि के कारण व्यवसाय बंद करना पड़ सकता है। यदि आपका पुराना व्यवसाय है, तो ना कोई विशेष लाभ प्राप्त होगा और ना ही बहुत अधिक हानि। आपको अपने कर्मचारियों पर ध्यान देना चाहिए। बोझ अधिक हो सकता है। आप अदालती कार्यों में उलझ सकते हैं। आपके कार्यों में बाधा आ सकती है। चरण के अंत समय में कार्यक्षेत्र में सफलता एवं उन्नति की संभावना है। आपके परिवार में कोई मांगलिक कार्य हो सकता है। पत्राचार के माध्यम से कोई शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। सुख–सुविधा में वृद्धि होगी।

अष्टम शनि

24/04/1953 – 21/08/1953

गोचर राशि – कन्या

समयावधि :

0.0 y.3.0 m.28 d.

इस चरण के प्रारम्भ में ही आपको कुछ ऐसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जिससे उबरने में आपको काफी समय लग सकता है। आपको आर्थिक हानि हो सकती है। परिवार एवं समाज में अपमान हो सकता है। सरकारी कार्यों में सफलता प्राप्त हो सकती है। काफी खर्चे हो सकते हैं। अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

इस चरण के दौरान आपके दुर्घटनाग्रस्त होने की संभावना है। पूरे चरण के दौरान कम से कम चार बार रक्तदान कर दुर्घटना को टाला जा सकता है। आप किसी कानूनी समस्या में फँस सकते हैं। धन संबंधी कोई भी कार्य सोच–समझकर करें। धन डूबने की संभावना है। किसी यात्रा के दौरान चोरी के माध्यम से हानि हो सकती है। भाग्य आप पर मेहरबान नहीं हो सकता है। हर कदम पर हानि हो सकती है। चरण के अन्त समय में आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है। स्वयं की अर्जित परेशानी भविष्य में काफी कष्टदायक साबित हो सकती है। संचार

के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। आप किसी लम्बी दूरी की यात्रा कर सकते हैं, जिसमें शुरू में धन खर्च हो सकता है, लेकिन बाद में लाभ हो सकता है। संतान पक्ष से कोई चिन्ता हो सकती है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचा सकते हैं या आपको किसी संकट में डाल सकते हैं। जोखिम भरे कार्यों से दूर रहें।

यदि आप सराकारी नौकरी करते हैं, तो आपका स्थानान्तरण हो सकता है। अपने कार्यों में रूकावट आने से आपका मन खिन्न हो सकता है। आप मानसिक कष्ट से गुजर सकते हैं। चरण के मध्य काल में कोई विशेष मनोकामना पूरी हो सकती है। आपके विरोधी षडयंत्र कर सकते हैं, सावधान रहें। जीवनसाथी से कोई बड़ी तकरार हो सकती है। अपने क्रोध एवं वाणी पर संयम रखें, अन्यथा मुसीबत में फँस सकते हैं। यदि आपने कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ किया है, तो आर्थिक हानि के कारण व्यवसाय बंद करना पड़ सकता है। यदि आपका पुराना व्यवसाय है, तो ना कोई विशेष लाभ प्राप्त होगा और ना ही बहुत अधिक हानि। आपको अपने कर्मचारियों पर ध्यान देना चाहिए। बोझ अधिक हो सकता है। आप अदालती कार्यों में उलझ सकते हैं। आपके कार्यों में बाधा आ सकती है। चरण के अंत समय में कार्यक्षेत्र में सफलता एवं उन्नति की संभावना है। आपके परिवार में कोई मांगलिक कार्य हो सकता है। पत्राचार के माध्यम से कोई शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। सुख–सुविधा में वृद्धि होगी।

द्वितिय चक्र

प्रथम ढ़ैय्या

02/02/1961 – 17/09/1961

गोचर राशि – मक.

समयावधि :

0.0 y.7.0 m.14 d.

इस चरण में आपको मिश्रित फल प्राप्त होगा। चरण के प्रारम्भ में कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। तमाम समस्याओं के बावजूद आप सत्यप्रिय रहेंगे और दूसरों से भी ऐसी ही उम्मीद करेंगे। पूरे चरण के दौरान अपनी वाणी पर संयम रखें, इससे आप आने वाली कई समस्याओं से बच सकते हैं। आपकी वाणी के कारण ही आपके परिवार मे क्लेश हो सकता है। अपने खान–पान की आदतों में सुधार करें एवं नियमित रूप से समय पर खाना खायें। बाजार निर्मित चीजें आपको अधिक पसंद हो सकती हैं, जिसकी वजह से आपको अपच एवं उदर विकार हो सकते हैं।

आपके शत्रुओं की संख्या अधिक हो सकती है, लेकिन कमजोर होने के कारण वे आपको हानि नहीं पहुंचा सकते हैं। किसी नये संपक्र में आने वाले व्यक्ति से सतक्र रहें। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं, तो आपके अधिकारी आपसे खुश रहेंगे, लेकिन आपसे बैर रखने वाले सहकर्मियों के कारण कभी–कभी कोई समस्या आ सकती है। आपको अपने अधिकारियों को प्रसन्न रखना चाहिए, ताकि आप उनसे लाभ उठा सकें। इस चरण के दौरान राजनीतिक लोगों से भी सावधान रहें। हालांकि, उनसे आपको लाभ प्राप्त हो सकता है, लेकिन साथ में अपमान भी मिल सकता है।

यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो इस चरण में आपको अधिक लाभ हो सकता है। आपके व्यापार एवं आय में वृद्धि होगी। अपने व्यवसाय की योजनाओं को गुप्त रखें, अन्यथा आपके किसी कर्मचारी के कारण आपकी योजनाओं पर पानी फिर सकता है और आपके विपक्षी फायदा उठा सकते हैं। अपने व्यवसाय से संबंधित आप कई यात्राएं कर सकते हैं, जिनसे आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। अपने परिवार के ही किसी सदस्य के कारण आपको अपने दाम्पत्य जीवन में भी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके संचित धन में कमी आएगी। प्रायः बड़े एवं व्यर्थ के खर्चे होते रहेंगे। इस चरण के दौरान कोई भी नया कार्य प्रारम्भ ना करें।

इस चरण के दौरान यदि आपकी आयु 60 साल से अधिक है, तो अपने स्वास्थ्य के प्रति आपको सचेत रहना चाहिए। यदि आपकी आयु 34 से 45 वर्ष के मध्य है, तो आपकी उन्नति के रास्ते खुल सकते हैं। काई भी कार्य अपने परिवार की सहमति से ही करें। खर्चों में सावधानी बरतें।

प्रथम ढ़ैय्या

08/10/1961 – 27/01/1964

गोचर राशि – मक.

समयावधि :

2.0 y.3.0 m.20 d.

इस चरण में आपको मिश्रित फल प्राप्त होगा। चरण के प्रारम्भ में कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। तमाम समस्याओं के बावजूद आप सत्यप्रिय रहेंगे और दूसरों से भी ऐसी ही उम्मीद करेंगे। पूरे चरण के दौरान अपनी वाणी पर संयम रखें, इससे आप आने वाली कई समस्याओं से बच सकते हैं। आपकी वाणी के कारण ही आपके परिवार मे क्लेश हो सकता है। अपने खान–पान की आदतों में सुधार करें एवं नियमित रूप से समय पर खाना खायें। बाजार निर्मित चीजें आपको अधिक पसंद हो सकती हैं, जिसकी वजह से आपको अपच एवं उदर विकार हो सकते हैं।

आपके शत्रुओं की संख्या अधिक हो सकती है, लेकिन कमजोर होने के कारण वे आपको हानि नहीं पहुंचा सकते हैं। किसी नये संपक्र में आने वाले व्यक्ति से सतक्र रहें। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं, तो आपके अधिकारी आपसे खुश रहेंगे, लेकिन आपसे बैर रखने वाले सहकर्मियों के कारण कभी–कभी कोई समस्या आ सकती है। आपको अपने अधिकारियों को प्रसन्न रखना चाहिए, ताकि आप उनसे लाभ उठा सकें। इस चरण के दौरान राजनीतिक लोगों से भी सावधान रहें। हालांकि, उनसे आपको लाभ प्राप्त हो सकता है, लेकिन साथ में अपमान भी मिल सकता है।

यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो इस चरण में आपको अधिक लाभ हो सकता है। आपके व्यापार एवं आय में वृद्धि होगी। अपने व्यवसाय की योजनाओं को गुप्त रखें, अन्यथा आपके किसी कर्मचारी के कारण आपकी योजनाओं पर पानी फिर सकता है और आपके विपक्षी फायदा उठा सकते हैं। अपने व्यवसाय से संबंधित आप कई यात्राएं कर सकते हैं, जिनसे आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। अपने परिवार के ही किसी सदस्य के कारण आपको अपने दाम्पत्य जीवन में भी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके संचित धन में कमी

आएगी। प्रायः बड़े एवं व्यर्थ के खर्चे होते रहेंगे। इस चरण के दौरान कोई भी नया कार्य प्रारम्भ ना करें।

इस चरण के दौरान यदि आपकी आयु 60 साल से अधिक है, तो अपने स्वास्थ्य के प्रति आपको सचेत रहना चाहिए। यदि आपकी आयु 34 से 45 वर्ष के मध्य है, तो आपकी उन्नति के रास्ते खुल सकते हैं। काई भी कार्य अपने परिवार की सहमति से ही करें। खर्चों में सावधानी बरतें।

द्वितिय ढ़ैय्या

27/01/1964 – 09/04/1966

गोचर राशि – कुम्भ

समयावधि :

2.0 y.2.0 m.12 d.

इस चरण में आपको अशुभ फल अधिक प्राप्त हो सकते हैं। चरण के प्रारम्भ में ही कोई बड़ी हानि या दुर्घटना हो सकती है। आपको संचार माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। ईश्वर के प्रति गहरी आस्था हो सकती है। आप अपना समय पूजा पाठ में अधिक लगा सकते हैं। तंत्र–मंत्र एवं रहस्यमयी विधाओं के प्रति ध्यान लगा सकते हैं। किसी फरेबी या ठग के चक्कर में फँसकर आर्थिक एवं सामाजिक हानि कर सकते हैं। आप फालतू चीजों में तो खर्च कर सकते हैं, लेकिन अन्य खर्चों पर अंकुश लगा सकते हैं।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपने ही किसी कर्मचारी के कारण आपको हानि हो सकती है। किसी प्रकार के झगड़े या चोरी या अग्निकाण्ड से आपको हानि हो सकती है। आपको अपने व्यवसाय का बीमा करा लेना चाहिए। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपको विकट एवं गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। अपने जिद्दी स्वभाव के कारण आपको काफी नुकसान हो सकता है। आपके अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और आपका स्थानान्तरण हो सकता है। आपको किसी अन्य प्रकार से भी दंडित किया जा सकता है। आप पर कोई गंभीर आरोप लग सकता है या आपकी किसी गलती के कारण आप पर कोई आर्थिक जुर्माना लग सकता है।

इस चरण के दौरान आप अपने दाम्पत्य जीवन में अरूचि दिखा सकते हैं। समय–समय पर घर में पूजा–पाठ, हवन आदि भी करवा सकते हैं। इस बीच आपको आर्थिक लाभ भी होता रहेगा। अनैतिक एवं अवैध कार्यों की तरफ आपका रूझान हो सकता है, जिससे घर में क्लेश हो सकता है। ऐसे कार्यों से दूर रहें। शुरू में आपको लाभ दिख सकता है, किन्तु बाद में अपनी गलती पर आपको पछतावा हो सकता है। आर्थिक एवं शारीरिक हानि के साथ–साथ समाज में भी अपमानित होना पड़ सकता है। आपके छोटे भाई–बहन भी स्वास्थ्य व आर्थिक समस्या से ग्रस्त हो सकते हैं। अपने उपर आये आर्थिक संकट को आप टालने का प्रयास करेंगे, लेकिन मन ही मन आप बहुत अशांत रह सकते हैं। आप हमेशा अपने उपर आये संकट के बारे में सोचते रह सकते हैं, जिसकी वजह से किसी प्रकार की कोई दुर्घटना हो सकती है।

इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ ना करें, विफल हो सकते हैं। आर्थिक रूप से हानि हो सकती है। इसलिए जहां तक संभव हो सके, इस बुरे समय को निकल जाने दें। आप ईश्वर पर काफी विश्वास करेंगे, लेकिन अचानक होने वाली हानि के कारण कभी–कभी विश्वास उठ सकता है। आप मानसिक कष्ट, वायु–विकार,

उदरविकार आदि रोग से ग्रसितह हो सकते हैं।

द्वितिय ढ़ैय्या

03/11/1966 – 20/12/1966

गोचर राशि – कुम्भ

समयावधि :

0.0 y.1.0 m.17 d.

इस चरण में आपको अशुभ फल अधिक प्राप्त हो सकते हैं। चरण के प्रारम्भ में ही कोई बड़ी हानि या दुर्घटना हो सकती है। आपको संचार माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। ईश्वर के प्रति गहरी आस्था हो सकती है। आप अपना समय पूजा पाठ में अधिक लगा सकते हैं। तंत्र–मंत्र एवं रहस्यमयी विधाओं के प्रति ध्यान लगा सकते हैं। किसी फरेबी या ठग के चक्कर में फँसकर आर्थिक एवं सामाजिक हानि कर सकते हैं। आप फालतू चीजों में तो खर्च कर सकते हैं, लेकिन अन्य खर्चों पर अंकुश लगा सकते हैं।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपने ही किसी कर्मचारी के कारण आपको हानि हो सकती है। किसी प्रकार के झगड़े या चोरी या अग्निकाण्ड से आपको हानि हो सकती है। आपको अपने व्यवसाय का बीमा करा लेना चाहिए। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपको विकट एवं गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। अपने जिद्दी स्वभाव के कारण आपको काफी नुकसान हो सकता है। आपके अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और आपका स्थानान्तरण हो सकता है। आपको किसी अन्य प्रकार से भी दंडित किया जा सकता है। आप पर कोई गंभीर आरोप लग सकता है या आपकी किसी गलती के कारण आप पर कोई आर्थिक जुर्माना लग सकता है।

इस चरण के दौरान आप अपने दाम्पत्य जीवन में अरूचि दिखा सकते हैं। समय–समय पर घर में पूजा–पाठ, हवन आदि भी करवा सकते हैं। इस बीच आपको आर्थिक लाभ भी होता रहेगा। अनैतिक एवं अवैध कार्यों की तरफ आपका रूझान हो सकता है, जिससे घर में क्लेश हो सकता है। ऐसे कार्यों से दूर रहें। शुरू में आपको लाभ दिख सकता है, किन्तु बाद में अपनी गलती पर आपको पछतावा हो सकता है। आर्थिक एवं शारीरिक हानि के साथ–साथ समाज में भी अपमानित होना पड़ सकता है। आपके छोटे भाई–बहन भी स्वास्थ्य व आर्थिक समस्या से ग्रस्त हो सकते हैं। अपने उपर आये आर्थिक संकट को आप टालने का प्रयास करेंगे, लेकिन मन ही मन आप बहुत अशांत रह सकते हैं। आप हमेशा अपने उपर आये संकट के बारे में सोचते रह सकते हैं, जिसकी वजह से किसी प्रकार की कोई दुर्घटना हो सकती है।

इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ ना करें, विफल हो सकते हैं। आर्थिक रूप से हानि हो सकती है। इसलिए जहां तक संभव हो सके, इस बुरे समय को निकल जाने दें। आप ईश्वर पर काफी विश्वास करेंगे, लेकिन अचानक होने वाली हानि के कारण कभी–कभी विश्वास उठ सकता है। आप मानसिक कष्ट, वायु–विकार, उदरविकार आदि रोग से ग्रसितह हो सकते हैं।

तृतिय ढ़ैय्या

09/04/1966 – 03/11/1966

गोचर राशि – मीन

समयावधि :

0.0 y.6.0 m.26 d.

यह चरण आपके लिए काफी घातक हो सकता है, विशेष सावधानी बरतें। सभी के प्रति आपका व्यवहार सम्मानपूर्ण हो सकता है। आप अपने शत्रुओं के साथ भी अच्छा व्यवहार करने की कोशिश करेंगे, लेकिन वे आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे। खाने–पीने में आपकी अधिक रूचि हो सकती है। हर प्रकार का स्वादिष्ट भोजन करना चाहेंगे, जिससे आपको उदर विकार हो सकता है। आप नये लोगों के संपक्र में आ सकते हैं एवं उनके रीति–रिवाज एवं भाषा सीखने की कोशिश कर सकते हैं। कई सम्मानित लोगों से भी संपक्र बनाने में आप सफल हो सकते हैं। आपको अपनी माता या मौसी से सहयोग एवं लाभ प्राप्त हो सकता है।

यदि आपकी कुण्डली में मंगल शुभ स्थिति में है, तो आप अपने प्रयासों से नया भवन या वाहन खरीद सकते हैं। इसके लिए आपको कर्ज भी लेना पड़ सकता है। भवन निर्माण शुरू करते समय आपको कई बाधायें आ सकती हैं। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं, तो आपको कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आप पर दोषारोपण भी हो सकता है। आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज रह सकते हैं। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो अपने व्यवसाय से संतुष्ट हो सकते हैं। अपने व्यवसाय पर आप काफी मेहनत कर सकते हैं, परन्तु अपने सहयोगियों से आपको धोखा मिल सकता है। आपके व्यवसाय में चोरी या धोखाधड़ी से हानि की संभावना है। आपको अपने व्यवसाय का बीमा करा लेना चाहिए।

इस चरण के दौरान आपको अपने दाम्पत्य जीवन में विशेष रूचि नहीं हो सकती है, जिसकी वजह से आपके घर में अक्सर क्लेश हो सकता है। आप धर्म के प्रति काफी उत्साहित रह सकते हैं। आप अपना काफी समय पूजा–पाठ एवं सामाजिक कार्यों में लगा सकते हैं। सामाजिक कार्यों में आप अपना धन भी खर्च कर सकते हैं। अपने से बड़ी आयु के लोगों से आपको सहयोग प्राप्त हो सकता है। आपके कार्यों एवं प्रयासों की सराहना होगी। आप अपने कार्यक्षेत्र में अपनी मेहनत एवं कार्य के प्रति सजगता से काफी लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

तृतिय ढ़ैय्या

20/12/1966 – 17/06/1968

गोचर राशि – मीन

समयावधि :

1.0 y.5.0 m.28 d.

यह चरण आपके लिए काफी घातक हो सकता है, विशेष सावधानी बरतें। सभी के प्रति आपका व्यवहार सम्मानपूर्ण हो सकता है। आप अपने शत्रुओं के साथ भी अच्छा व्यवहार करने की कोशिश करेंगे, लेकिन वे आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे। खाने–पीने में आपकी अधिक रूचि हो सकती है। हर प्रकार का स्वादिष्ट भोजन करना चाहेंगे, जिससे आपको उदर विकार हो सकता है। आप नये लोगों के संपक्र में आ सकते हैं एवं उनके रीति–रिवाज एवं भाषा सीखने की कोशिश कर सकते हैं। कई सम्मानित लोगों से भी संपक्र बनाने में आप सफल हो सकते हैं। आपको अपनी माता या मौसी से सहयोग एवं लाभ प्राप्त हो सकता है।

यदि आपकी कुण्डली में मंगल शुभ स्थिति में है, तो आप अपने प्रयासों से नया भवन या वाहन खरीद सकते हैं।

इसके लिए आपको कर्ज भी लेना पड़ सकता है। भवन निर्माण शुरू करते समय आपको कई बाधायें आ सकती हैं। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं, तो आपको कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आप पर दोषारोपण भी हो सकता है। आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज रह सकते हैं। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो अपने व्यवसाय से संतुष्ट हो सकते हैं। अपने व्यवसाय पर आप काफी मेहनत कर सकते हैं, परन्तु अपने सहयोगियों से आपको धोखा मिल सकता है। आपके व्यवसाय में चोरी या धोखाधड़ी से हानि की संभावना है। आपको अपने व्यवसाय का बीमा करा लेना चाहिए।

इस चरण के दौरान आपको अपने दाम्पत्य जीवन में विशेष रूचि नहीं हो सकती है, जिसकी वजह से आपके घर में अक्सर क्लेश हो सकता है। आप धर्म के प्रति काफी उत्साहित रह सकते हैं। आप अपना काफी समय पूजा–पाठ एवं सामाजिक कार्यों में लगा सकते हैं। सामाजिक कार्यों में आप अपना धन भी खर्च कर सकते हैं। अपने से बड़ी आयु के लोगों से आपको सहयोग प्राप्त हो सकता है। आपके कार्यों एवं प्रयासों की सराहना होगी। आप अपने कार्यक्षेत्र में अपनी मेहनत एवं कार्य के प्रति सजगता से काफी लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

तृतिय ढ़ैय्या

28/09/1968 – 07/03/1969

गोचर राशि – मीन

समयावधि :

0.0 y.5.0 m.8 d.

यह चरण आपके लिए काफी घातक हो सकता है, विशेष सावधानी बरतें। सभी के प्रति आपका व्यवहार सम्मानपूर्ण हो सकता है। आप अपने शत्रुओं के साथ भी अच्छा व्यवहार करने की कोशिश करेंगे, लेकिन वे आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे। खाने–पीने में आपकी अधिक रूचि हो सकती है। हर प्रकार का स्वादिष्ट भोजन करना चाहेंगे, जिससे आपको उदर विकार हो सकता है। आप नये लोगों के संपक्र में आ सकते हैं एवं उनके रीति–रिवाज एवं भाषा सीखने की कोशिश कर सकते हैं। कई सम्मानित लोगों से भी संपक्र बनाने में आप सफल हो सकते हैं। आपको अपनी माता या मौसी से सहयोग एवं लाभ प्राप्त हो सकता है।

यदि आपकी कुण्डली में मंगल शुभ स्थिति में है, तो आप अपने प्रयासों से नया भवन या वाहन खरीद सकते हैं। इसके लिए आपको कर्ज भी लेना पड़ सकता है। भवन निर्माण शुरू करते समय आपको कई बाधायें आ सकती हैं। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं, तो आपको कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आप पर दोषारोपण भी हो सकता है। आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज रह सकते हैं। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो अपने व्यवसाय से संतुष्ट हो सकते हैं। अपने व्यवसाय पर आप काफी मेहनत कर सकते हैं, परन्तु अपने सहयोगियों से आपको धोखा मिल सकता है। आपके व्यवसाय में चोरी या धोखाधड़ी से हानि की संभावना है। आपको अपने व्यवसाय का बीमा करा लेना चाहिए।

इस चरण के दौरान आपको अपने दाम्पत्य जीवन में विशेष रूचि नहीं हो सकती है, जिसकी वजह से आपके घर में अक्सर क्लेश हो सकता है। आप धर्म के प्रति काफी उत्साहित रह सकते हैं। आप अपना काफी समय पूजा–पाठ एवं सामाजिक कार्यों में लगा सकते हैं। सामाजिक कार्यों में आप अपना धन भी खर्च कर सकते हैं।

अपने से बड़ी आयु के लोगों से आपको सहयोग प्राप्त हो सकता है। आपके कार्यों एवं प्रयासों की सराहना होगी। आप अपने कार्यक्षेत्र में अपनी मेहनत एवं कार्य के प्रति सजगता से काफी लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

कंटक शनि

28/04/1971 – 10/06/1973

गोचर राशि – वृष

समयावधि :

2.0 y.1.0 m.13 d.

इस चरण के दौरान आपको अशुभ फल कम प्राप्त होंगे। आपके शत्रु स्वतः समाप्त हो जाएंगे। वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। अपनी सेहत का ख्याल रखें। आपके मानसिक कष्ट में वृद्धि हो सकती है। संतान की ओर से कुछ कष्ट प्राप्त हो सकात है। अपने जीवनसाथी के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

आपके लिए इस चरण की शुरूआत ठीक नहीं हो सकती है। अचानक होने वाली हानि के कारण आप क्रोधी स्वभाव के हो सकते हैं। आप अपनी वाणी पर संयम खो सकते हैं। जीवनसाथी के माध्यम से धार्मिक सत्संग का लाभ होगा। आपके विरोधी एवं शत्रु कमजोर रहेंगे। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं, तो आप पर आर्थिक आरोप लग सकता है या आपका स्थानान्तरण हो सकता है। कहीं भी धन निवेश काफी सोच–विचार करने के बाद ही करें, तथा जहां तक संभव हो सके, किसी को उधार ना दें। आपका धन डूब सकता है। अशांत रह सकते हैं एवं अत्यधिक खर्च कर सकते हैं। अपने खर्चों पर रोक लगायें, अन्यथा परेशानी में पड़ सकते हैं।

इस चरण के दौरान आपके जीवन में कोई बड़ा परिवर्तन हो सकता है, जो वर्तमान में आपको हानि दे सकता है, परन्तु भविष्य में इससे काफी लाभ हो सकता है। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। आपके व्यवसाय में हानि हो सकती है। चरण के अन्त समय में राज्य की ओर से आपके व्यवसाय में लाभ प्राप्त हो सकता है। आपकी संतान को कष्ट हो सकता है। अपनी माता की ओर से आपका विरोध हो सकता है। यदि अदालत में संपत्ति से संबंधित कोई मुकदमा चल रहा है, तो आपको पराजय का सामना करना पड़ सकता है।

आपके निवास पर चोरी की संभावना है। यदि संभव हो तो अपने कीमती एवं महत्वपूर्ण वस्तुओं का बीमा करवा लें। यदि आप किसान हैं, तो अपनी फसल पर ध्यान दें। फसल कटने से ठीक पहले खराब होने की संभावना है। आपको ननिहाल पक्ष से अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आपकी पत्नी गर्भवती हैं, तो आपके पुत्र रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके भाई एवं मित्र धोखा दे सकते हैं, जिससे आप आर्थिक समस्या में आ सकते हैं।

अष्टम शनि

04/11/1979 – 15/03/1980

गोचर राशि – कन्या

समयावधि :

0.0 y.4.0 m.10 d.

इस चरण के प्रारम्भ में ही आपको कुछ ऐसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जिससे उबरने में आपको काफी समय लग सकता है। आपको आर्थिक हानि हो सकती है। परिवार एवं समाज में अपमान हो सकता है। सरकारी कार्यों में सफलता प्राप्त हो सकती है। काफी खर्चे हो सकते हैं। अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

इस चरण के दौरान आपके दुर्घटनाग्रस्त होने की संभावना है। पूरे चरण के दौरान कम से कम चार बार रक्तदान कर दुर्घटना को टाला जा सकता है। आप किसी कानूनी समस्या में फँस सकते हैं। धन संबंधी कोई भी कार्य सोच–समझकर करें। धन डूबने की संभावना है। किसी यात्रा के दौरान चोरी के माध्यम से हानि हो सकती है। भाग्य आप पर मेहरबान नहीं हो सकता है। हर कदम पर हानि हो सकती है। चरण के अन्त समय में आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है। स्वयं की अर्जित परेशानी भविष्य में काफी कष्टदायक साबित हो सकती है। संचार के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। आप किसी लम्बी दूरी की यात्रा कर सकते हैं, जिसमें शुरू में धन खर्च हो सकता है, लेकिन बाद में लाभ हो सकता है। संतान पक्ष से कोई चिन्ता हो सकती है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचा सकते हैं या आपको किसी संकट में डाल सकते हैं। जोखिम भरे कार्यों से दूर रहें।

यदि आप सराकारी नौकरी करते हैं, तो आपका स्थानान्तरण हो सकता है। अपने कार्यों में रूकावट आने से आपका मन खिन्न हो सकता है। आप मानसिक कष्ट से गुजर सकते हैं। चरण के मध्य काल में कोई विशेष मनोकामना पूरी हो सकती है। आपके विरोधी षडयंत्र कर सकते हैं, सावधान रहें। जीवनसाथी से कोई बड़ी तकरार हो सकती है। अपने क्रोध एवं वाणी पर संयम रखें, अन्यथा मुसीबत में फँस सकते हैं। यदि आपने कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ किया है, तो आर्थिक हानि के कारण व्यवसाय बंद करना पड़ सकता है। यदि आपका पुराना व्यवसाय है, तो ना कोई विशेष लाभ प्राप्त होगा और ना ही बहुत अधिक हानि। आपको अपने कर्मचारियों पर ध्यान देना चाहिए। बोझ अधिक हो सकता है। आप अदालती कार्यों में उलझ सकते हैं। आपके कार्यों में बाधा आ सकती है। चरण के अंत समय में कार्यक्षेत्र में सफलता एवं उन्नति की संभावना है। आपके परिवार में कोई मांगलिक कार्य हो सकता है। पत्राचार के माध्यम से कोई शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। सुख–सुविधा में वृद्धि होगी।

अष्टम शनि

27/07/1980 – 06/10/1982

गोचर राशि – कन्या

समयावधि :

2.0 y.2.0 m.10 d.

इस चरण के प्रारम्भ में ही आपको कुछ ऐसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जिससे उबरने में आपको काफी समय लग सकता है। आपको आर्थिक हानि हो सकती है। परिवार एवं समाज में अपमान हो सकता है। सरकारी कार्यों में सफलता प्राप्त हो सकती है। काफी खर्चे हो सकते हैं। अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

इस चरण के दौरान आपके दुर्घटनाग्रस्त होने की संभावना है। पूरे चरण के दौरान कम से कम चार बार रक्तदान कर दुर्घटना को टाला जा सकता है। आप किसी कानूनी समस्या में फँस सकते हैं। धन संबंधी कोई भी कार्य सोच–समझकर करें। धन डूबने की संभावना है। किसी यात्रा के दौरान चोरी के माध्यम से हानि हो सकती है। भाग्य आप पर मेहरबान नहीं हो सकता है। हर कदम पर हानि हो सकती है। चरण के अन्त समय में आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है। स्वयं की अर्जित परेशानी भविष्य में काफी कष्टदायक साबित हो सकती है। संचार के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। आप किसी लम्बी दूरी की यात्रा कर सकते हैं, जिसमें शुरू में धन खर्च हो सकता है, लेकिन बाद में लाभ हो सकता है। संतान पक्ष से कोई चिन्ता हो सकती है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचा सकते हैं या आपको किसी संकट में डाल सकते हैं। जोखिम भरे कार्यों से दूर रहें।

यदि आप सराकारी नौकरी करते हैं, तो आपका स्थानान्तरण हो सकता है। अपने कार्यों में रूकावट आने से आपका मन खिन्न हो सकता है। आप मानसिक कष्ट से गुजर सकते हैं। चरण के मध्य काल में कोई विशेष मनोकामना पूरी हो सकती है। आपके विरोधी षडयंत्र कर सकते हैं, सावधान रहें। जीवनसाथी से कोई बड़ी तकरार हो सकती है। अपने क्रोध एवं वाणी पर संयम रखें, अन्यथा मुसीबत में फँस सकते हैं। यदि आपने कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ किया है, तो आर्थिक हानि के कारण व्यवसाय बंद करना पड़ सकता है। यदि आपका पुराना व्यवसाय है, तो ना कोई विशेष लाभ प्राप्त होगा और ना ही बहुत अधिक हानि। आपको अपने कर्मचारियों पर ध्यान देना चाहिए। बोझ अधिक हो सकता है। आप अदालती कार्यों में उलझ सकते हैं। आपके कार्यों में बाधा आ सकती है। चरण के अंत समय में कार्यक्षेत्र में सफलता एवं उन्नति की संभावना है। आपके परिवार में कोई मांगलिक कार्य हो सकता है। पत्राचार के माध्यम से कोई शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। सुख–सुविधा में वृद्धि होगी।

तृतिय चक्र

प्रथम ढ़ैय्या
21/03/1990 – 20/06/1990
गोचर राशि – मक.
समयावधि :
0.0 y.3.0 m.0 d.

इस चरण में आपको मिश्रित फल प्राप्त होगा। चरण के प्रारम्भ में कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। तमाम समस्याओं के बावजूद आप सत्यप्रिय रहेंगे और दूसरों से भी ऐसी ही उम्मीद करेंगे। पूरे चरण के दौरान अपनी वाणी पर संयम रखें, इससे आप आने वाली कई समस्याओं से बच सकते हैं। आपकी वाणी के कारण ही आपके परिवार मे क्लेश हो सकता है। अपने खान–पान की आदतों में सुधार करें एवं नियमित रूप से समय पर खाना खायें। बाजार निर्मित चीजें आपको अधिक पसंद हो सकती हैं, जिसकी वजह से आपको अपच एवं उदर विकार हो सकते हैं।

आपके शत्रुओं की संख्या अधिक हो सकती है, लेकिन कमजोर होने के कारण वे आपको हानि नहीं पहुंचा सकते

हैं। किसी नये संपक्र में आने वाले व्यक्ति से सतक्र रहें। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं, तो आपके अधिकारी आपसे खुश रहेंगे, लेकिन आपसे बैर रखने वाले सहकर्मियों के कारण कभी–कभी कोई समस्या आ सकती है। आपको अपने अधिकारियों को प्रसन्न रखना चाहिए, ताकि आप उनसे लाभ उठा सकें। इस चरण के दौरान राजनीतिक लोगों से भी सावधान रहें। हालांकि, उनसे आपको लाभ प्राप्त हो सकता है, लेकिन साथ में अपमान भी मिल सकता है।

यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो इस चरण में आपको अधिक लाभ हो सकता है। आपके व्यापार एवं आय में वृद्धि होगी। अपने व्यवसाय की योजनाओं को गुप्त रखें, अन्यथा आपके किसी कर्मचारी के कारण आपकी योजनाओं पर पानी फिर सकता है और आपके विपक्षी फायदा उठा सकते हैं। अपने व्यवसाय से संबंधित आप कई यात्राएं कर सकते हैं, जिनसे आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। अपने परिवार के ही किसी सदस्य के कारण आपको अपने दाम्पत्य जीवन में भी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके संचित धन में कमी आएगी। प्रायः बड़े एवं व्यर्थ के खर्चे होते रहेंगे। इस चरण के दौरान कोई भी नया कार्य प्रारम्भ ना करें।

इस चरण के दौरान यदि आपकी आयु 60 साल से अधिक है, तो अपने स्वास्थ्य के प्रति आपको सचेत रहना चाहिए। यदि आपकी आयु 34 से 45 वर्ष के मध्य है, तो आपकी उन्नति के रास्ते खुल सकते हैं। काई भी कार्य अपने परिवार की सहमति से ही करें। खर्चों में सावधानी बरतें।

प्रथम ढ़ैय्या

15/12/1990 – 05/03/1993

गोचर राशि – मक.

समयावधि :

2.0 y.2.0 m.19 d.

इस चरण में आपको मिश्रित फल प्राप्त होगा। चरण के प्रारम्भ में कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। तमाम समस्याओं के बावजूद आप सत्यप्रिय रहेंगे और दूसरों से भी ऐसी ही उम्मीद करेंगे। पूरे चरण के दौरान अपनी वाणी पर संयम रखें, इससे आप आने वाली कई समस्याओं से बच सकते हैं। आपकी वाणी के कारण ही आपके परिवार मे क्लेश हो सकता है। अपने खान–पान की आदतों में सुधार करें एवं नियमित रूप से समय पर खाना खायें। बाजार निर्मित चीजें आपको अधिक पसंद हो सकती हैं, जिसकी वजह से आपको अपच एवं उदर विकार हो सकते हैं।

आपके शत्रुओं की संख्या अधिक हो सकती है, लेकिन कमजोर होने के कारण वे आपको हानि नहीं पहुंचा सकते हैं। किसी नये संपक्र में आने वाले व्यक्ति से सतक्र रहें। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं, तो आपके अधिकारी आपसे खुश रहेंगे, लेकिन आपसे बैर रखने वाले सहकर्मियों के कारण कभी–कभी कोई समस्या आ सकती है। आपको अपने अधिकारियों को प्रसन्न रखना चाहिए, ताकि आप उनसे लाभ उठा सकें। इस चरण के दौरान राजनीतिक लोगों से भी सावधान रहें। हालांकि, उनसे आपको लाभ प्राप्त हो सकता है, लेकिन साथ में अपमान भी मिल सकता है।

यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो इस चरण में आपको अधिक लाभ हो सकता है। आपके व्यापार एवं आय में वृद्धि होगी। अपने व्यवसाय की योजनाओं को गुप्त रखें, अन्यथा आपके किसी कर्मचारी के कारण आपकी योजनाओं पर पानी फिर सकता है और आपके विपक्षी फायदा उठा सकते हैं। अपने व्यवसाय से संबंधित आप कई यात्राएं कर सकते हैं, जिनसे आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। अपने परिवार के ही किसी सदस्य के कारण आपको अपने दाम्पत्य जीवन में भी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके संचित धन में कमी आएगी। प्रायः बड़े एवं व्यर्थ के खर्चे होते रहेंगे। इस चरण के दौरान कोई भी नया कार्य प्रारम्भ ना करें।

इस चरण के दौरान यदि आपकी आयु 60 साल से अधिक है, तो अपने स्वास्थ्य के प्रति आपको सचेत रहना चाहिए। यदि आपकी आयु 34 से 45 वर्ष के मध्य है, तो आपकी उन्नति के रास्ते खुल सकते हैं। काई भी कार्य अपने परिवार की सहमति से ही करें। खर्चों में सावधानी बरतें।

प्रथम ढ़ैय्या

15/10/1993 – 10/11/1993

गोचर राशि – मक.

समयावधि :

0.0 y.0.0 m.26 d.

इस चरण में आपको मिश्रित फल प्राप्त होगा। चरण के प्रारम्भ में कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। तमाम समस्याओं के बावजूद आप सत्यप्रिय रहेंगे और दूसरों से भी ऐसी ही उम्मीद करेंगे। पूरे चरण के दौरान अपनी वाणी पर संयम रखें, इससे आप आने वाली कई समस्याओं से बच सकते हैं। आपकी वाणी के कारण ही आपके परिवार मे क्लेश हो सकता है। अपने खान–पान की आदतों में सुधार करें एवं नियमित रूप से समय पर खाना खायें। बाजार निर्मित चीजें आपको अधिक पसंद हो सकती हैं, जिसकी वजह से आपको अपच एवं उदर विकार हो सकते हैं।

आपके शत्रुओं की संख्या अधिक हो सकती है, लेकिन कमजोर होने के कारण वे आपको हानि नहीं पहुंचा सकते हैं। किसी नये संपक्र में आने वाले व्यक्ति से सतक्र रहें। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं, तो आपके अधिकारी आपसे खुश रहेंगे, लेकिन आपसे बैर रखने वाले सहकर्मियों के कारण कभी–कभी कोई समस्या आ सकती है। आपको अपने अधिकारियों को प्रसन्न रखना चाहिए, ताकि आप उनसे लाभ उठा सकें। इस चरण के दौरान राजनीतिक लोगों से भी सावधान रहें। हालांकि, उनसे आपको लाभ प्राप्त हो सकता है, लेकिन साथ में अपमान भी मिल सकता है।

यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो इस चरण में आपको अधिक लाभ हो सकता है। आपके व्यापार एवं आय में वृद्धि होगी। अपने व्यवसाय की योजनाओं को गुप्त रखें, अन्यथा आपके किसी कर्मचारी के कारण आपकी योजनाओं पर पानी फिर सकता है और आपके विपक्षी फायदा उठा सकते हैं। अपने व्यवसाय से संबंधित आप कई यात्राएं कर सकते हैं, जिनसे आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। अपने परिवार के ही किसी सदस्य के कारण आपको अपने दाम्पत्य जीवन में भी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके संचित धन में कमी आएगी। प्रायः बड़े एवं व्यर्थ के खर्चे होते रहेंगे। इस चरण के दौरान कोई भी नया कार्य प्रारम्भ ना करें।

इस चरण के दौरान यदि आपकी आयु 60 साल से अधिक है, तो अपने स्वास्थ्य के प्रति आपको सचेत रहना चाहिए। यदि आपकी आयु 34 से 45 वर्ष के मध्य है, तो आपकी उन्नति के रास्ते खुल सकते हैं। काई भी कार्य अपने परिवार की सहमति से ही करें। खर्चों में सावधानी बरतें।

द्वितिय ढ़ैय्या
05/03/1993 – 15/10/1993
गोचर राशि – कुम्भ
समयावधि :
0.0 y.7.0 m.11 d.

इस चरण में आपको अशुभ फल अधिक प्राप्त हो सकते हैं। चरण के प्रारम्भ में ही कोई बड़ी हानि या दुर्घटना हो सकती है। आपको संचार माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। ईश्वर के प्रति गहरी आस्था हो सकती है। आप अपना समय पूजा पाठ में अधिक लगा सकते हैं। तंत्र–मंत्र एवं रहस्यमयी विधाओं के प्रति ध्यान लगा सकते हैं। किसी फरेबी या ठग के चक्कर में फँसकर आर्थिक एवं सामाजिक हानि कर सकते हैं। आप फालतू चीजों में तो खर्च कर सकते हैं, लेकिन अन्य खर्चों पर अंकुश लगा सकते हैं।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपने ही किसी कर्मचारी के कारण आपको हानि हो सकती है। किसी प्रकार के झगड़े या चोरी या अग्निकाण्ड से आपको हानि हो सकती है। आपको अपने व्यवसाय का बीमा करा लेना चाहिए। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपको विकट एवं गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। अपने जिद्दी स्वभाव के कारण आपको काफी नुकसान हो सकता है। आपके अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और आपका स्थानान्तरण हो सकता है। आपको किसी अन्य प्रकार से भी दंडित किया जा सकता है। आप पर कोई गंभीर आरोप लग सकता है या आपकी किसी गलती के कारण आप पर कोई आर्थिक जुर्माना लग सकता है।

इस चरण के दौरान आप अपने दाम्पत्य जीवन में अरूचि दिखा सकते हैं। समय–समय पर घर में पूजा–पाठ, हवन आदि भी करवा सकते हैं। इस बीच आपको आर्थिक लाभ भी होता रहेगा। अनैतिक एवं अवैध कार्यों की तरफ आपका रूझान हो सकता है, जिससे घर में क्लेश हो सकता है। ऐसे कार्यों से दूर रहें। शुरू में आपको लाभ दिख सकता है, किन्तु बाद में अपनी गलती पर आपको पछतावा हो सकता है। आर्थिक एवं शारीरिक हानि के साथ–साथ समाज में भी अपमानित होना पड़ सकता है। आपके छोटे भाई–बहन भी स्वास्थ्य व आर्थिक समस्या से ग्रस्त हो सकते हैं। अपने उपर आये आर्थिक संकट को आप टालने का प्रयास करेंगे, लेकिन मन ही मन आप बहुत अशांत रह सकते हैं। आप हमेशा अपने उपर आये संकट के बारे में सोचते रह सकते हैं, जिसकी वजह से किसी प्रकार की कोई दुर्घटना हो सकती है।

इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ ना करें, विफल हो सकते हैं। आर्थिक रूप से हानि हो सकती है। इसलिए जहां तक संभव हो सके, इस बुरे समय को निकल जाने दें। आप ईश्वर पर काफी विश्वास करेंगे, लेकिन अचानक होने वाली हानि के कारण कभी–कभी विश्वास उठ सकता है। आप मानसिक कष्ट, वायु–विकार, उदरविकार आदि रोग से ग्रसितह हो सकते हैं।

द्वितिय ढ़ैय्या

10/11/1993 – 02/06/1995

गोचर राशि – कुम्भ

समयावधि :

1.0 y.6.0 m.22 d.

इस चरण में आपको अशुभ फल अधिक प्राप्त हो सकते हैं। चरण के प्रारम्भ में ही कोई बड़ी हानि या दुर्घटना हो सकती है। आपको संचार माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। ईश्वर के प्रति गहरी आस्था हो सकती है। आप अपना समय पूजा पाठ में अधिक लगा सकते हैं। तंत्र–मंत्र एवं रहस्यमयी विधाओं के प्रति ध्यान लगा सकते हैं। किसी फरेबी या ठग के चक्कर में फँसकर आर्थिक एवं सामाजिक हानि कर सकते हैं। आप फालतू चीजों में तो खर्च कर सकते हैं, लेकिन अन्य खर्चों पर अंकुश लगा सकते हैं।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपने ही किसी कर्मचारी के कारण आपको हानि हो सकती है। किसी प्रकार के झगड़े या चोरी या अग्निकाण्ड से आपको हानि हो सकती है। आपको अपने व्यवसाय का बीमा करा लेना चाहिए। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपको विकट एवं गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। अपने जिद्दी स्वभाव के कारण आपको काफी नुकसान हो सकता है। आपके अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और आपका स्थानान्तरण हो सकता है। आपको किसी अन्य प्रकार से भी दंडित किया जा सकता है। आप पर कोई गंभीर आरोप लग सकता है या आपकी किसी गलती के कारण आप पर कोई आर्थिक जुर्माना लग सकता है।

इस चरण के दौरान आप अपने दाम्पत्य जीवन में अरूचि दिखा सकते हैं। समय–समय पर घर में पूजा–पाठ, हवन आदि भी करवा सकते हैं। इस बीच आपको आर्थिक लाभ भी होता रहेगा। अनैतिक एवं अवैध कार्यों की तरफ आपका रूझान हो सकता है, जिससे घर में क्लेश हो सकता है। ऐसे कार्यों से दूर रहें। शुरू में आपको लाभ दिख सकता है, किन्तु बाद में अपनी गलती पर आपको पछतावा हो सकता है। आर्थिक एवं शारीरिक हानि के साथ–साथ समाज में भी अपमानित होना पड़ सकता है। आपके छोटे भाई–बहन भी स्वास्थ्य व आर्थिक समस्या से ग्रस्त हो सकते हैं। अपने उपर आये आर्थिक संकट को आप टालने का प्रयास करेंगे, लेकिन मन ही मन आप बहुत अशांत रह सकते हैं। आप हमेशा अपने उपर आये संकट के बारे में सोचते रह सकते हैं, जिसकी वजह से किसी प्रकार की कोई दुर्घटना हो सकती है।

इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ ना करें, विफल हो सकते हैं। आर्थिक रूप से हानि हो सकती है। इसलिए जहां तक संभव हो सके, इस बुरे समय को निकल जाने दें। आप ईश्वर पर काफी विश्वास करेंगे, लेकिन अचानक होने वाली हानि के कारण कभी–कभी विश्वास उठ सकता है। आप मानसिक कष्ट, वायु–विकार, उदरविकार आदि रोग से ग्रसितह हो सकते हैं।

द्वितिय ढ़ैय्या

10/08/1995 – 16/02/1996

गोचर राशि – कुम्भ

समयावधि :

0.0 y.6.0 m.8 d.

इस चरण में आपको अशुभ फल अधिक प्राप्त हो सकते हैं। चरण के प्रारम्भ में ही कोई बड़ी हानि या दुर्घटना हो सकती है। आपको संचार माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। ईश्वर के प्रति गहरी आस्था हो सकती है। आप अपना समय पूजा पाठ में अधिक लगा सकते हैं। तंत्र–मंत्र एवं रहस्यमयी विधाओं के प्रति ध्यान लगा सकते हैं। किसी फरेबी या ठग के चक्कर में फँसकर आर्थिक एवं सामाजिक हानि कर सकते हैं। आप फालतू चीजों में तो खर्च कर सकते हैं, लेकिन अन्य खर्चों पर अंकुश लगा सकते हैं।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपने ही किसी कर्मचारी के कारण आपको हानि हो सकती है। किसी प्रकार के झगड़े या चोरी या अग्निकाण्ड से आपको हानि हो सकती है। आपको अपने व्यवसाय का बीमा करा लेना चाहिए। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपको विकट एवं गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। अपने जिद्दी स्वभाव के कारण आपको काफी नुकसान हो सकता है। आपके अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और आपका स्थानान्तरण हो सकता है। आपको किसी अन्य प्रकार से भी दंडित किया जा सकता है। आप पर कोई गंभीर आरोप लग सकता है या आपकी किसी गलती के कारण आप पर कोई आर्थिक जुर्माना लग सकता है।

इस चरण के दौरान आप अपने दाम्पत्य जीवन में अरूचि दिखा सकते हैं। समय–समय पर घर में पूजा–पाठ, हवन आदि भी करवा सकते हैं। इस बीच आपको आर्थिक लाभ भी होता रहेगा। अनैतिक एवं अवैध कार्यों की तरफ आपका रूझान हो सकता है, जिससे घर में क्लेश हो सकता है। ऐसे कार्यों से दूर रहें। शुरू में आपको लाभ दिख सकता है, किन्तु बाद में अपनी गलती पर आपको पछतावा हो सकता है। आर्थिक एवं शारीरिक हानि के साथ–साथ समाज में भी अपमानित होना पड़ सकता है। आपके छोटे भाई–बहन भी स्वास्थ्य व आर्थिक समस्या से ग्रस्त हो सकते हैं। अपने उपर आये आर्थिक संकट को आप टालने का प्रयास करेंगे, लेकिन मन ही मन आप बहुत अशांत रह सकते हैं। आप हमेशा अपने उपर आये संकट के बारे में सोचते रह सकते हैं, जिसकी वजह से किसी प्रकार की कोई दुर्घटना हो सकती है।

इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ ना करें, विफल हो सकते हैं। आर्थिक रूप से हानि हो सकती है। इसलिए जहां तक संभव हो सके, इस बुरे समय को निकल जाने दें। आप ईश्वर पर काफी विश्वास करेंगे, लेकिन अचानक होने वाली हानि के कारण कभी–कभी विश्वास उठ सकता है। आप मानसिक कष्ट, वायु–विकार, उदरविकार आदि रोग से ग्रसितह हो सकते हैं।

तृतिय ढ़ैय्या

02/06/1995 – 10/08/1995

गोचर राशि – मीन

समयावधि :

0.0 y.2.0 m.9 d.

यह चरण आपके लिए काफी घातक हो सकता है, विशेष सावधानी बरतें। सभी के प्रति आपका व्यवहार सम्मानपूर्ण हो सकता है। आप अपने शत्रुओं के साथ भी अच्छा व्यवहार करने की कोशिश करेंगे, लेकिन वे आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे। खाने–पीने में आपकी अधिक रूचि हो सकती है। हर प्रकार का स्वादिष्ट

भोजन करना चाहेंगे, जिससे आपको उदर विकार हो सकता है। आप नये लोगों के संपक्र में आ सकते हैं एवं उनके रीति–रिवाज एवं भाषा सीखने की कोशिश कर सकते हैं। कई सम्मानित लोगों से भी संपक्र बनाने में आप सफल हो सकते हैं। आपको अपनी माता या मौसी से सहयोग एवं लाभ प्राप्त हो सकता है।

यदि आपकी कुण्डली में मंगल शुभ स्थिति में है, तो आप अपने प्रयासों से नया भवन या वाहन खरीद सकते हैं। इसके लिए आपको कर्ज भी लेना पड़ सकता है। भवन निर्माण शुरू करते समय आपको कई बाधायें आ सकती हैं। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं, तो आपको कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आप पर दोषारोपण भी हो सकता है। आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज रह सकते हैं। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो अपने व्यवसाय से संतुष्ट हो सकते हैं। अपने व्यवसाय पर आप काफी मेहनत कर सकते हैं, परन्तु अपने सहयोगियों से आपको धोखा मिल सकता है। आपके व्यवसाय में चोरी या धोखाधड़ी से हानि की संभावना है। आपको अपने व्यवसाय का बीमा करा लेना चाहिए।

इस चरण के दौरान आपको अपने दाम्पत्य जीवन में विशेष रूचि नहीं हो सकती है, जिसकी वजह से आपके घर में अक्सर क्लेश हो सकता है। आप धर्म के प्रति काफी उत्साहित रह सकते हैं। आप अपना काफी समय पूजा–पाठ एवं सामाजिक कार्यों में लगा सकते हैं। सामाजिक कार्यों में आप अपना धन भी खर्च कर सकते हैं। अपने से बड़ी आयु के लोगों से आपको सहयोग प्राप्त हो सकता है। आपके कार्यों एवं प्रयासों की सराहना होगी। आप अपने कार्यक्षेत्र में अपनी मेहनत एवं कार्य के प्रति सजगता से काफी लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

तृतिय ढ़ैय्या

16/02/1996 – 17/04/1998

गोचर राशि – मीन

समयावधि :

2.0 y.1.0 m.30 d.

यह चरण आपके लिए काफी घातक हो सकता है, विशेष सावधानी बरतें। सभी के प्रति आपका व्यवहार सम्मानपूर्ण हो सकता है। आप अपने शत्रुओं के साथ भी अच्छा व्यवहार करने की कोशिश करेंगे, लेकिन वे आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे। खाने–पीने में आपकी अधिक रूचि हो सकती है। हर प्रकार का स्वादिष्ट भोजन करना चाहेंगे, जिससे आपको उदर विकार हो सकता है। आप नये लोगों के संपक्र में आ सकते हैं एवं उनके रीति–रिवाज एवं भाषा सीखने की कोशिश कर सकते हैं। कई सम्मानित लोगों से भी संपक्र बनाने में आप सफल हो सकते हैं। आपको अपनी माता या मौसी से सहयोग एवं लाभ प्राप्त हो सकता है।

यदि आपकी कुण्डली में मंगल शुभ स्थिति में है, तो आप अपने प्रयासों से नया भवन या वाहन खरीद सकते हैं। इसके लिए आपको कर्ज भी लेना पड़ सकता है। भवन निर्माण शुरू करते समय आपको कई बाधायें आ सकती हैं। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं, तो आपको कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आप पर दोषारोपण भी हो सकता है। आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज रह सकते हैं। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो अपने व्यवसाय से संतुष्ट हो सकते हैं। अपने व्यवसाय पर आप काफी मेहनत कर सकते हैं, परन्तु अपने सहयोगियों से आपको धोखा मिल सकता है। आपके व्यवसाय में चोरी या धोखाधड़ी से हानि की संभावना है।

आपको अपने व्यवसाय का बीमा करा लेना चाहिए।

इस चरण के दौरान आपको अपने दाम्पत्य जीवन में विशेष रूचि नहीं हो सकती है, जिसकी वजह से आपके घर में अक्सर क्लेश हो सकता है। आप धर्म के प्रति काफी उत्साहित रह सकते हैं। आप अपना काफी समय पूजा–पाठ एवं सामाजिक कार्यों में लगा सकते हैं। सामाजिक कार्यों में आप अपना धन भी खर्च कर सकते हैं। अपने से बड़ी आयु के लोगों से आपको सहयोग प्राप्त हो सकता है। आपके कार्यों एवं प्रयासों की सराहना होगी। आप अपने कार्यक्षेत्र में अपनी मेहनत एवं कार्य के प्रति सजगता से काफी लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

कंटक शनि

07/06/2000 – 23/07/2002

गोचर राशि – वृष

समयावधि :

2.0 y.1.0 m.15 d.

इस चरण के दौरान आपको अशुभ फल कम प्राप्त होंगे। आपके शत्रु स्वतः समाप्त हो जाएंगे। वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। अपनी सेहत का ख्याल रखें। आपके मानसिक कष्ट में वृद्धि हो सकती है। संतान की ओर से कुछ कष्ट प्राप्त हो सकात है। अपने जीवनसाथी के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

आपके लिए इस चरण की शुरूआत ठीक नहीं हो सकती है। अचानक होने वाली हानि के कारण आप क्रोधी स्वभाव के हो सकते हैं। आप अपनी वाणी पर संयम खो सकते हैं। जीवनसाथी के माध्यम से धार्मिक सत्संग का लाभ होगा। आपके विरोधी एवं शत्रु कमजोर रहेंगे। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं, तो आप पर आर्थिक आरोप लग सकता है या आपका स्थानान्तरण हो सकता है। कहीं भी धन निवेश काफी सोच–विचार करने के बाद ही करें, तथा जहां तक संभव हो सके, किसी को उधार ना दें। आपका धन डूब सकता है। अशांत रह सकते हैं एवं अत्यधिक खर्च कर सकते हैं। अपने खर्चों पर रोक लगायें, अन्यथा परेशानी में पड़ सकते हैं।

इस चरण के दौरान आपके जीवन में कोई बड़ा परिवर्तन हो सकता है, जो वर्तमान में आपको हानि दे सकता है, परन्तु भविष्य में इससे काफी लाभ हो सकता है। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। आपके व्यवसाय में हानि हो सकती है। चरण के अन्त समय में राज्य की ओर से आपके व्यवसाय में लाभ प्राप्त हो सकता है। आपकी संतान को कष्ट हो सकता है। अपनी माता की ओर से आपका विरोध हो सकता है। यदि अदालत में संपत्ति से संबंधित कोई मुकदमा चल रहा है, तो आपको पराजय का सामना करना पड़ सकता है।

आपके निवास पर चोरी की संभावना है। यदि संभव हो तो अपने कीमती एवं महत्वपूर्ण वस्तुओं का बीमा करवा लें। यदि आप किसान हैं, तो अपनी फसल पर ध्यान दें। फसल कटने से ठीक पहले खराब होने की संभावना है। आपको ननिहाल पक्ष से अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आपकी पत्नी गर्भवती हैं, तो आपके पुत्र रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके भाई एवं मित्र धोखा दे सकते हैं, जिससे आप आर्थिक समस्या में आ सकते हैं।

कंटक शनि

08/01/2003 – 07/04/2003

गोचर राशि – वृष

समयावधि :

0.0 y.2.0 m.28 d.

इस चरण के दौरान आपको अशुभ फल कम प्राप्त होंगे। आपके शत्रु स्वतः समाप्त हो जाएंगे। वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। अपनी सेहत का ख्याल रखें। आपके मानसिक कष्ट में वृद्धि हो सकती है। संतान की ओर से कुछ कष्ट प्राप्त हो सकात है। अपने जीवनसाथी के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

आपके लिए इस चरण की शुरूआत ठीक नहीं हो सकती है। अचानक होने वाली हानि के कारण आप क्रोधी स्वभाव के हो सकते हैं। आप अपनी वाणी पर संयम खो सकते हैं। जीवनसाथी के माध्यम से धार्मिक सत्संग का लाभ होगा। आपके विरोधी एवं शत्रु कमजोर रहेंगे। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं, तो आप पर आर्थिक आरोप लग सकता है या आपका स्थानान्तरण हो सकता है। कहीं भी धन निवेश काफी सोच–विचार करने के बाद ही करें, तथा जहां तक संभव हो सके, किसी को उधार ना दें। आपका धन डूब सकता है। अशांत रह सकते हैं एवं अत्यधिक खर्च कर सकते हैं। अपने खर्चों पर रोक लगायें, अन्यथा परेशानी में पड़ सकते हैं।

इस चरण के दौरान आपके जीवन में कोई बड़ा परिवर्तन हो सकता है, जो वर्तमान में आपको हानि दे सकता है, परन्तु भविष्य में इससे काफी लाभ हो सकता है। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। आपके व्यवसाय में हानि हो सकती है। चरण के अन्त समय में राज्य की ओर से आपके व्यवसाय में लाभ प्राप्त हो सकता है। आपकी संतान को कष्ट हो सकता है। अपनी माता की ओर से आपका विरोध हो सकता है। यदि अदालत में संपत्ति से संबंधित कोई मुकदमा चल रहा है, तो आपको पराजय का सामना करना पड़ सकता है।

आपके निवास पर चोरी की संभावना है। यदि संभव हो तो अपने कीमती एवं महत्वपूर्ण वस्तुओं का बीमा करवा लें। यदि आप किसान हैं, तो अपनी फसल पर ध्यान दें। फसल कटने से ठीक पहले खराब होने की संभावना है। आपको ननिहाल पक्ष से अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आपकी पत्नी गर्भवती हैं, तो आपके पुत्र रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके भाई एवं मित्र धोखा दे सकते हैं, जिससे आप आर्थिक समस्या में आ सकते हैं।

अष्टम शनि

10/09/2009 – 15/11/2011

गोचर राशि – कन्या

समयावधि :

2.0 y.2.0 m.6 d.

इस चरण के प्रारम्भ में ही आपको कुछ ऐसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जिससे उबरने में आपको काफी समय लग सकता है। आपको आर्थिक हानि हो सकती है। परिवार एवं समाज में अपमान हो सकता है। सरकारी कार्यों में सफलता प्राप्त हो सकती है। काफी खर्चे हो सकते हैं। अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

इस चरण के दौरान आपके दुर्घटनाग्रस्त होने की संभावना है। पूरे चरण के दौरान कम से कम चार बार रक्तदान कर दुर्घटना को टाला जा सकता है। आप किसी कानूनी समस्या में फँस सकते हैं। धन संबंधी कोई भी कार्य सोच–समझकर करें। धन डूबने की संभावना है। किसी यात्रा के दौरान चोरी के माध्यम से हानि हो सकती है। भाग्य आप पर मेहरबान नहीं हो सकता है। हर कदम पर हानि हो सकती है। चरण के अन्त समय में आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है। स्वयं की अर्जित परेशानी भविष्य में काफी कष्टदायक साबित हो सकती है। संचार के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। आप किसी लम्बी दूरी की यात्रा कर सकते हैं, जिसमें शुरू में धन खर्च हो सकता है, लेकिन बाद में लाभ हो सकता है। संतान पक्ष से कोई चिन्ता हो सकती है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचा सकते हैं या आपको किसी संकट में डाल सकते हैं। जोखिम भरे कार्यों से दूर रहें।

यदि आप सराकारी नौकरी करते हैं, तो आपका स्थानान्तरण हो सकता है। अपने कार्यों में रूकावट आने से आपका मन खिन्न हो सकता है। आप मानसिक कष्ट से गुजर सकते हैं। चरण के मध्य काल में कोई विशेष मनोकामना पूरी हो सकती है। आपके विरोधी षडयंत्र कर सकते हैं, सावधान रहें। जीवनसाथी से कोई बड़ी तकरार हो सकती है। अपने क्रोध एवं वाणी पर संयम रखें, अन्यथा मुसीबत में फँस सकते हैं। यदि आपने कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ किया है, तो आर्थिक हानि के कारण व्यवसाय बंद करना पड़ सकता है। यदि आपका पुराना व्यवसाय है, तो ना कोई विशेष लाभ प्राप्त होगा और ना ही बहुत अधिक हानि। आपको अपने कर्मचारियों पर ध्यान देना चाहिए। बोझ अधिक हो सकता है। आप अदालती कार्यों में उलझ सकते हैं। आपके कार्यों में बाधा आ सकती है। चरण के अंत समय में कार्यक्षेत्र में सफलता एवं उन्नति की संभावना है। आपके परिवार में कोई मांगलिक कार्य हो सकता है। पत्राचार के माध्यम से कोई शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। सुख–सुविधा में वृद्धि होगी।

अष्टम शनि
16/05/2012 – 04/08/2012
गोचर राशि – कन्या
समयावधि :
0.0 y.2.0 m.19 d.

इस चरण के प्रारम्भ में ही आपको कुछ ऐसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जिससे उबरने में आपको काफी समय लग सकता है। आपको आर्थिक हानि हो सकती है। परिवार एवं समाज में अपमान हो सकता है। सरकारी कार्यों में सफलता प्राप्त हो सकती है। काफी खर्चे हो सकते हैं। अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

इस चरण के दौरान आपके दुर्घटनाग्रस्त होने की संभावना है। पूरे चरण के दौरान कम से कम चार बार रक्तदान कर दुर्घटना को टाला जा सकता है। आप किसी कानूनी समस्या में फँस सकते हैं। धन संबंधी कोई भी कार्य सोच–समझकर करें। धन डूबने की संभावना है। किसी यात्रा के दौरान चोरी के माध्यम से हानि हो सकती है। भाग्य आप पर मेहरबान नहीं हो सकता है। हर कदम पर हानि हो सकती है। चरण के अन्त समय में आर्थिक

स्थिति में सुधार हो सकता है। स्वयं की अर्जित परेशानी भविष्य में काफी कष्टदायक साबित हो सकती है। संचार के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। आप किसी लम्बी दूरी की यात्रा कर सकते हैं, जिसमें शुरू में धन खर्च हो सकता है, लेकिन बाद में लाभ हो सकता है। संतान पक्ष से कोई चिन्ता हो सकती है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचा सकते हैं या आपको किसी संकट में डाल सकते हैं। जोखिम भरे कार्यों से दूर रहें।

यदि आप सराकारी नौकरी करते हैं, तो आपका स्थानान्तरण हो सकता है। अपने कार्यों में रूकावट आने से आपका मन खिन्न हो सकता है। आप मानसिक कष्ट से गुजर सकते हैं। चरण के मध्य काल में कोई विशेष मनोकामना पूरी हो सकती है। आपके विरोधी षडयंत्र कर सकते हैं, सावधान रहें। जीवनसाथी से कोई बड़ी तकरार हो सकती है। अपने क्रोध एवं वाणी पर संयम रखें, अन्यथा मुसीबत में फँस सकते हैं। यदि आपने कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ किया है, तो आर्थिक हानि के कारण व्यवसाय बंद करना पड़ सकता है। यदि आपका पुराना व्यवसाय है, तो ना कोई विशेष लाभ प्राप्त होगा और ना ही बहुत अधिक हानि। आपको अपने कर्मचारियों पर ध्यान देना चाहिए। बोझ अधिक हो सकता है। आप अदालती कार्यों में उलझ सकते हैं। आपके कार्यों में बाधा आ सकती है। चरण के अंत समय में कार्यक्षेत्र में सफलता एवं उन्नति की संभावना है। आपके परिवार में कोई मांगलिक कार्य हो सकता है। पत्राचार के माध्यम से कोई शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। सुख–सुविधा में वृद्धि होगी।

शनि की सा–साढ़ेसाती या –ढ़ैय्या के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए नीचे लिखे उपायों को करें–

मंत्र–

1– महामृत्युंजय मंत्र का सवा लाख जाप (रोज 10 माल, 125 दिन) करें।

ऊँ त्रयम्बकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

2– शनि के निम्नदत्त मंत्र का 21 दिन में 23 हजार जाप करें–

ऊँ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः। ऊँ शं शनैश्चराय नमः।।

3– पौराणिक शनि मंत्र–

ऊँ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

स्तोत्र

नीचे लिखे शनि स्तोत्र का 11 बार पाठ करें या दशरथ कृत शनि स्तोत्र का पाठ करें।

कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः।।
तानि शनि–नामामि जपेदश्वत्थसन्निधौ।
शनैश्चरकृता पीड़ा न कदाचिद् भविष्यति।।

साढ़ेसाती पीड़ानाशक स्तोत्र– पिप्पलाद के अनुसार–

नमस्ते कोणसंस्थय पिंड्गलाय नमोस्तुते।
नमस्ते बभ्रु रूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च।नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।नमस्ते यमदसंज्ञाय शनैश्वर नमोस्तु ते।प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।

रत्न –

शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल या नाव के तली की कील का छल्ला बनाकर मध्यमा उंगली में धारण करना चाहिए।

व्रत –

शनि वार का व्रत रखना चाहिए एवं शनि देव की पूजा करनी चाहिए। शनिवार व्रतकथा पढ़ने से भी लाभ प्राप्त होता है। व्रत के दौरान दिन में फलाहार करें, एवं सायंकाल हनुमान जी या भौरव जी का दर्शन करना चाहिए। रात्रि में काले उड़द की खिचड़ी (काला नमक मिला सकते हैं) या उड़द की दाल का मीठा हलवा ग्रहण कर सकते हैं।

दान –

शनिदेव को प्रसन्न करने के लिए उड़द, तेल, नीलम, तिल, भैंस, लोहा एवं काला कपड़ा दान करना चाहिए।

औषधि –

हर शनिवार को सुरमा, काले तिल, सौंफ और नागरमोथा मिले हुए जल से स्नान करना चाहिए।

राशि वालों के लिए शनि की साढ़ेसाती एवं –ढ़ैय्या के सामान्य उपाय–

1– शनि स्तोत्र का जाप नियमित रूप से करें तथा पूजा–स्थल में शनियंत्र को स्थान दें।

2– आठ किलों बाजरा नीले कपड़े में बांधकर घर में किसी अंधेरे स्थान पर किसी भारी वजन से दबा कर रखें।

3– सूर्योदय के समय किसी ऐसे स्थान पर जहां धूप एवं छांव मिल रही हो, वहां सरसों की धार डालें।

4– छायादान करें तथा सोने वाले पलंग के चारों पायों में लोहे की कील ठुकवायें।

5– आठ शनिवार लगातार आठ मजदूरों को भोजन करवायें।

6– काले घोड़े की नाल का अभिमंत्रित छल्ला अवश्य धारण करें। आर्थिक स्थिति ठीक करने के लिए नीलम या उसका उपरत्न धारण करें।

7– नारियल के तेल में कपूर मिलाकर सिर में लगायें।

8– वर्ष में दो बार पीपल की जड़ में सूखे खोपरे में बूरा एवं पंचमेवा भर कर दबायें।

9– शनिवार को सुन्दरकाण्ड का पाठ या श्रवण करें।

10– शनि की होरा में जल एवं खाद्य पदार्थ ग्रहण नहीं करें।

11– पीपल पर शिवलिंग अर्पित करें।

12– हनुमान मंदिर नंगे पैर जायें।

13– श्रीमद्भागवत के नल चरित्र का पाठ करें।

शनि की साढ़ेसाती एवं –ढ़ैय्या के विशेष उपाय –

यदि आपकी कुण्डली में शनि शुभ है, तो भैरोंजी एवं शनिदेव की पूजा–अर्चना कर शनि को और बल देकर लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि शनि अशुभ या दूषित है, तो शनि के उपाय कर अशुभ फल को खत्म एवं लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि आपकी कुण्डली में साढ़ेसाती चल रही है या आप शनिकृत कष्ट भोग रहें हैं, तो नीचे लिखे उपायों को करने से आप लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

1– शनि का छाया दान करें एवं नीलम या इसका उपरत्न धारण करें।

2– शनिवार को काली गाय की सेवा करें। तिलक–बिन्दी कर उसके सींग पर कलावा बांध कर बूंदी के आठ लड्डू खिलायें एवं चरण स्पर्श करें।

3– काले कुत्ते को नियमित रूप से मीठी रोटी खिलायें।

4– यदि आपकी कुण्डली में शनि लग्न में बैठा है, तो जमीन में सुरमा गाड़ें।

5– शनिवार का व्रत रखें तथा पीपल की सेवा करें एवं मीठा जल अर्पित करें।

6– मद्यपान ना करें।

7– शनिवार को अंधेरा होने पर पीपल के वृक्ष पर हनुमान जी का स्मरण कर तिल के तेल के दीपक में सिंदूर डालकर लाल पुष्प अर्पित करें।

8– भोजन में काली मिर्च एवं काला नमक का प्रयोग अवश्य करें।

9– शनिवार को काले घोड़े के पैर की मिट्टी काले कपड़े में बांधकर ताबीज के रूप में धारण करें।

10– शनिवार को आप एक माप की आठ बोतलें लें, और हर बोतल में एक ही माप का सरसों तेल भरें। प्रत्येक में आठ साबुत उड़द के दाने एवं एक कील डालें। फिर आठों बोतलों को अपने उपर से आठ बार उसार कर बहते जल में प्रवाहित करें। यह क्रिया लगातार आठ शनिवार करें।

11– नियमित रूप से शनि चालीसा एवं उनके 108 नामों का उच्चारण करें।

12– प्रातः उठते ही बासी मुख से शनिदेव के दस नामों का उच्चारण तथा द्वाद्वशज्योतिर्लिंग के नामों का उच्चारण करें।

13– प्रत्येक शनिवार को काले कुत्ते को रोटी पर सरसों का तेल चुपड़ कर गुड़ रख कर खिलायें एवं बंन्दरों को चने खिलायें।

14– शुक्रवार को लोहे के बर्तन में आठ किलो चने भिगों दें। शनिवार को काले कपड़े में सारे चने रखें। साथ में 800 ग्राम काली उड़द और इतने ही काले तिल के साथ इतने ही जौ एवं एक लोहे की पत्ती रखें। इसकी

पोटली बनाकर ऐसे स्थान पर डालें जहां मछलियां हों। यह क्रिया लगातार आठ माह करें। शुरू में आठ माह करें, इसके बाद वर्ष में सिर्फ एक बार पर्याप्त होगा।

15– अंधेरा होने के बाद आटा मिश्रित उड़द का दीपक बनाकर उसमें दो बत्ती जो जलने पर एक ही लौ दे, सरसों के तेल में जलायें। एक दीपक पीपल एवं एक दीपक वट वृक्ष पर अर्पित करें। साथ ही गुग्गुल की धूप एवं चंदन की अगरबत्ती भी अर्पित करें। यह उपाय पहले शनिवार से शुरू करें।

16– प्रथम शनिवार को आठ मीटर काले कपड़े में 800 ग्राम की मात्रा में काली उड़द, चावल, गुड़, काली सरसों, काले तिल, जौ, आठ बड़ी कीलें तथा एक–एक सुरमा एवं इत्र की शीशी को कपड़े में बांधकर पोटली का रूप दे दें। अलग से 10 छिलके वाले बादाम लेकर किसी भी हनुमान मंदिर में जायें और पोटली एवं बादाम मंदिर में हीं कहीं रख दें। फिर स्टील की कटोरी में सिंदूर को चमेली के तेल से गीला कर प्रसाद एवं पीले फूलों के साथ प्रभु को अर्पित करें। बैठकर हनुमान चालीसा का पाठ करें, और सात बार परिक्रमा करें। तत्पश्चात पोटली मंदिर में ही छोड़ दें। दस बादाम में से आधे बादाम भी मंदिर में ही छोड़ दें और बाकी के बादाम लाकर किसी नये लाल कपड़े में बांधकर अपने धन रखने के स्थान पर रख दें। कष्टमुक्ति के साथ लाभ प्राप्त होगा।

17– आठ शनिवार लगातार किसी ब्राह्मण को उड़द की दाल की खिचड़ी खिलायें। दान में काले कपड़े में उड़द की दाल की ही खिचड़ी बांधकर आठ सिक्के के रूप में दक्षिणा दें।

18– पहले शनिवार को अपने से 19गुना अधिक काला धागा लेकर उसे एक माला का रूप दें, जो गले में पहनी जा सके। किसी भी शनि मंत्र से अभिमंत्रित कर धूप दिखायें। फिर उस माला को गले में धारण करें। तुरंत लाभ मिलेगा।

19– शनिवार को घर में पूजास्थल में बैठकर यह क्रिया करें। इस क्रिया में आठ उड़द मिश्रित दीपक बनाकर उसमें सरसों का तेल भरें। दीपक में दो बत्तियां बनाकर उन्हें एक साथ जलायें, ताकि जलने पर एक ही लौ दे। दीपक में थोड़ा सा सिन्दूर के साथ काले घोड़े की नाल का छल्ला एवं एक कील डालें। काले हकीक की माला से किसी भी शनि मंत्र का 11 माला जाप करें और प्रणाम कर उठ जायें। अगले दिन छल्ला निकालकर दायें हाथ की मध्यमा में धारण करें और दीपक किसी पीपल पर अर्पित कर दें।

20– प्रत्येक शनिवार को आप चोकर सहित तीन मोटी रोटियां अपने ही हाथ से बनायें। एक रोटी के एक ओर सरसों एवं दूसरी ओर शुद्ध घी लगायें। अन्य दो रोटियों में से एक पर घी और एक पर सरसों का तेल चुपड़कर उस पर गुड़ रखें। दोनों ओर चुपड़ी रोटी काली गाय को, सरसों के तेल वाली रोटी कुत्ते को एवं घी चुपड़ी रोटी किसी गरीब मजदूर को दे दें।

21– शमी वृक्ष या बिछुआ की जड़ को शनिपुष्य या शनिवार के श्रवण नक्षत्र में लाकर काले कपड़े में बांध कर अपनी दायीं भुजा पर बांधें। तुरन्त लाभ होगा।

22– किसी भी पहले शनिवार को आप आठ मीटर काला कपड़ा, एक जटा नारियल, काले तिल, काली उड़द, गुड़, जौ, काली सरसों, काला नमक प्रत्येक सामग्री 800 ग्राम, हवन सामग्री, आठ बड़ी टोपीदार कील, इतने ही सिक्के तथा बोतल में 800 ग्राम सरसों एवं चमेली का तेल, दो शीशी काजल तथा दो शीशी काले सुरमे लेकर कपड़े की पोटली बना दें। अपने सिर से सात बार उसार कर किसी डाकौत को दान कर दें। यह उपाय लगातार आठ माह करें। फिर वर्ष में दो बार कर सकते हैं।

23– मांस–मदिरा से दूर रहें।

24– किसी के सामने अपनी समस्याओं या कष्टों के बारे में बात ना करें।

25– घर के मुख्य द्वार की देहरी पर चाँदी का पत्तर दबायें।

26– काले वस्त्र धारण करें।

27– घर के किसी अंधेरे भाग में किसी लोहे के पात्र में सरसों का तेल भरकर उसमें ताँबे के सिक्के डालकर रखें।

28– शनिदेव की कोई भी वस्तु बिना पैसे दिये किसी से भी ना लें।

29– काले घोड़े की नाल लाकर घर के मुख्य द्वार के नीचे दबायें।

30– शनिवार को काले घोड़े की पूंछ के आठ बाल लेकर उन्हें किसी लकड़ी की डिब्बी में रखकर 43 दिन तक अपने शयनकक्ष में रखें। अंतिम दिन बाल को जलाकर उसकी राख को सरसों के तेल में मिलाकर बहते जल में प्रवाहित कर दें।

31– शुक्रवार को 800 ग्राम काले तिल पानी में भिगों दें। अगले दिन उन्हें पीस कर गुड़ के साथ मिलाकर लड्डू बनायें और काले घोड़े को खिलायें। यह उपाय आठ शनिवार करें।

32– सा–साढ़ेसाती के दौरान अपनी पैतृक संपत्ति ना बेचें। अधिक कष्ट में पड़ सकते हैं।

33– रात्रि के समय सिर्फ शनि का दान करें, किसी को शनि की वस्तु ना दें।

34– नियमित रूप से महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें, कष्टों में कमी आयेगी।

35– शनिवार को श्री भैरों मंदिर में शराब अर्पित करें, कष्टों में कमी आयेगी।

36– किसी शनिवार को वीराने स्थान में आठ शीशी सुरमें दबायें।

37– शिवलिंग पर दूध से अभिषेक करें।

38– प्रत्येक शनिवार को किसी सिद्ध हनुमान मंदिर में नारियल अर्पित करें।

39– अपने शयनकक्ष के पलंग के चारों पायों में लोहे की कील ठुकवायें।

40– अपने घर के दक्षिण एवं पश्चिम में कोई पत्थर की शिला रखें।

भृगु जन्म पत्रिका

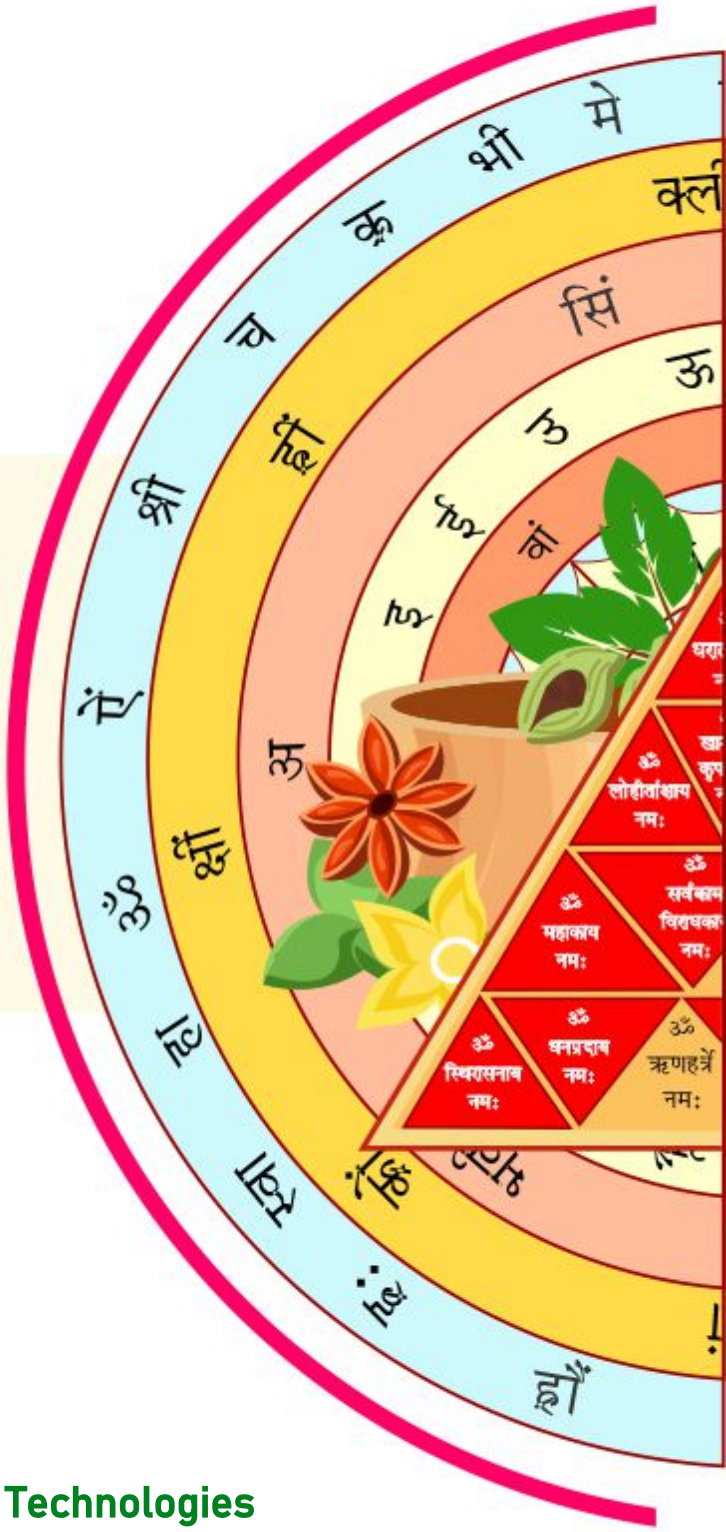

Name - Sample
Date - 10/08/1941
Time - 02:15:00
POB - New delhi (Delhi) India
Longitude - 077:12:00 E
Latitude - 028:36:00 N

Mindsutra Software Technologies
A-16, Ground Floor Uttam Nagar New Delhi - 110059
Phone: 011-49043166, 91 9818193410

© lalkitabnadi.com

क्या है कालसर्प योग ?

जब कुण्डली में सारे ग्रह राहु और केतु के अंशो के बीच में आ जाते हैं, तो कुण्डली को कालसर्प योग से ग्रसित माना जाता है। यदि एक भी ग्रह राहु और केतु के अंशो के बाहर रह जाता है, तो पूर्ण कालसर्प योग नहीं माना जाएगा। हालांकि, सारे ग्रह केतू और राहु के अंशों के बीच में आ जायें, तो भी आंशिक कालसर्प योग माना जाएगा।

कालसर्प योग का सामान्य प्रभाव–

1– किसी भी शुभ और महत्वपूर्ण कार्य को करते समय परेशानियों का सामना करना।
2– मानसिक तनाव।
3– आत्मविश्वास में कमी।
4– स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां।
5– गरीबी और धन की कमी।
6– व्यापार में घाटा और नौकरी में परेशानी।
7– उत्तेजना और बेकार की चिंताएं।
8– मित्रों और शुभचिन्तकों से मनमुटाव।
9– मित्रों और शुभचिन्तकों की तरफ से विश्वासघात।
10– मित्रों, शुभचिन्तकों और रिश्तेदारों की ओर से किसी भी तरह का सहयोग नहीं प्राप्त होना।

आपकी कुण्डली में कालसर्प योग मौजूद नहीं है।

मांगलिक दोष (कुज दोष)

मांगलिक दोष (कुज दोष) निर्धारण के नियम

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजः।
मन्गलिक दोषवान्नारी पुंसां स्त्रीविनाशिनी।।

यदि कुण्डली में मंगल लग्न से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल चंद्रमा से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल शुक्र से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

आपकी कुण्डली में मांगलिक दोष (कुज दोष)

आपकी कुण्डली में, मंगल शुक्र राशि से आठवीं राशि में स्थित है। आपकी कुण्डली में कुज दोष (या मांगलिक दोष) उपस्थित है।
आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल शुक्र–राशि से आठवें भाव में स्थित है। यह आभासी रूप से कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। लेकिन, चूंकि मंगल बृहस्पति की राशि में स्थित है, अतः यह एक अपवाद है– जैसाकि यह दोष स्वतः समाप्त हो जाता है। आपकी कुण्डली में कुज दोष तकनीकि रूप से अनुपस्थित माना जाएगा।

मांगलिक दोष (कुज दोष) का प्रभाव

मंगल दोष के प्रभाव से विवाह में देरी हो सकती है या विवाह होने में कई बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। विवाह होने के बाद वर या वधू या दोनों को शारीरिक,

मानसिक या आर्थिक रूप से कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके प्रभाव से आपसी मतभेद/विवाद हो सकते हैं, एक–दूसरे पर दोषारोपण कर सकती हैं तथा तलाक की भी नौबत आ सकती है। दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति में से किसी की या दोनों की सेहत अक्सर खराब रह सकती है या अकाल मृत्यु के भी शिकार हो सकते हैं।

मांगलिक दोष (कुज दोष) का उपाय

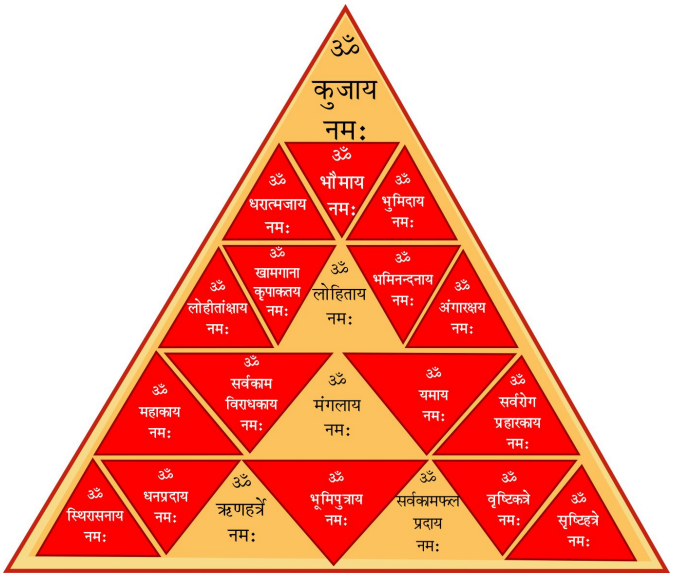

मंगल दोष को दूर करने के लिए वैदिक ज्योतिष से निम्न उपाय करें :–

मंगलवार (सूर्योदय से अगले दिन सूर्योदय तक) को उपवास करें। दिन के दौरान नमक का सेवन ना करें और यदि संभव हो, तो केवल तरल पदार्थों जैसे, चाय, कॉफी, दूध फलों का रस एवं दही आदि का ही सेवन करें। शाम के समय रोली से किसी थाली में एक त्रिकोण बनायें एवं पंचोपचार (लाल चंदन, लाल फल, धूप, दीपक एवं भोज्य पदार्थ) से पूजा करें। उसके बाद सूर्यास्त से पहले गेहूं के आटे की रोटी, घी एवं गुड़ का सेवन करें।

मंगल दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में लगातार 108 दिनों तक रोज 21 बार मंगल चंडिका स्त्रोत का पाठ करें। सुबह में पूर्वाभिमुख बैठकर पंचमुखी दीपक जलायें एवं अपने इष्ट देव तथा मंगल की पंचोपचार से पूजा करें और निम्नलिखित मंत्र का जाप करें।

रक्ष रक्ष जगन्मातर्देवि मंगलचंडिके । हारिके विपदां राशे हर्षमंगलकारिके ।।
हर्षमंगलदक्षे च हर्षमंगलदायिके । शुभे मंगलदक्षे च शुभे मंगलचंडिके ।।
मंगले मंगलार्हे च सर्वमंगलमंगले । सदा मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये ।।

मांगलिक दोष्ष और उसका उपाय

लाल किताब के अनुसार, आपकी कुण्डली में मंगल पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में नहीं बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति के अनुसार आपकी कुण्डली में मांगलिक दोष लागू नहीं हो रहा है।

आपकी कुण्डली में मांगलिक दोष नहीं है।

1. हनुमान चालीसा का पाठ करें।
2. हनुमान जी को प्रसाद चढ़ायें।
3. हनुमान जी को सिंदूर का चोला चढ़ायें।
4. गायत्री का पाठ करें।
5. दुर्गा का पाठ करें।
6. रामचरित मानस के सुन्दर काण्ड का पाठ करें।
7. लाल रूमाल पास में रखें।
8. चाँदी का छल्ला (बिना जोड़ का) पहनें।
9. तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर पहनें।
10. चाँदी के कड़े में तांबा जड़वा कर पहनें।
11. चाँदी की चूड़ी पर लाल रंग करवा कर जीवनसाथी को पहनायें।
12. बन्दर पालें, या बन्दरों को भोजन दें।
13. तन्दूर पर मीठी रोटी लगवा कर कुत्तों को दें।
14. मंदिर में मीठा भोजन बांटें।
15. चीनी बहते पानी में प्रवाहित करें।
16. शहद या सिन्दूर बहते पानी में प्रवाहित करें।
17. मिट्टी की दीवार बनवाकर बार-बार गिरायें।
18. घर में नौकर रखें।

केमुद्रुम योग

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः। (11000 बार)

दधिशंखतुशाराभं क्षीरोदोर्णवसभवम् नवम्।
भाशिनं भवत्या भाम्भोर्मुकुटभुशणम्।।

क्या है केमुद्रुम योग ?

आपकी कुण्डली में केमुद्रम योग प्रभावी नहीं है। आपको इस योग से संबंधित कोई उपाय की आवश्यकता नहीं है।

उपाय क्या करें ?

(1) रुद्राष्टक का निरन्तर जप करें।
(2) सुबह केसर और दूध का सेवन करें।
(3) पंचामृत से भगवान शिव का अभिषेक करें।
(4) चांद की रौशनी में सफेद वस्त्र पहन कर गायत्री मंत्र का जाप करें।
(5) रात को सोते समय सफेद चंदन का लेप करें।
(6) अपनी मां से और सभी मां जैसी व्यक्ति से आर्शीवाद लेते रहे।
(7) विधवा औरतो की यथासंभव सहायता करते रहे।
(8) गरीब लोगों को दूध का दान करें।

सूर्य ग्रह का उपाय

ज्योतिष शास्त्र में सूर्य ग्रह को ग्रहों का राजा माना जाता है। जीवन में मान–सम्मान, नौकरी और समृद्धिशाली जीवन जीने के लिए सूर्य देव की कृपा जरूरी होती है और उनका आशीर्वाद पाने के लिए सूर्य ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ सूर्याय नमः

Every morning, one should offer water to the Sun and chant this mantra.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः

Om hraam hreem hroum sah suryaya namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ घृणिः सूर्याय नमः

Om Ghrinih Suryaya Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ भास्कराय विद्महे महातेजाय धीमहि ।
तन्नोः सूर्यः प्रचोदयात ।।

Om Bhaskaraya Vidmahe Mahatejaya Dhimahi,
Tanno Suryah Prachodayat.

व्रत और उपवास

सूर्य के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सूर्य के गोचर, महादशा या अंतर्दशा के दौरान रविवार का व्रत (उपवास) रखना चाहिए। व्रत (उपवास) की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले रविवार से करना चाहिए। यह व्रत (उपवास) कम से कम 12 और अधिकतम 30 रविवार को रखना चाहिए। व्रत (उपवास) के दौरान खाने में गेहूँ के आटे की चपाती, गुड़, हलवा, घी का उपयोग करना चाहिए। नमक का प्रयोग बिल्कुल ना करें। खाना सूर्यास्त से पहले खाना चाहिए। यदि आप लाल कपड़ा पहन कर एवं अपने ललाट पर लाल चंदन का लेप लगाकर सूर्य के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 5 माला (540) जप करें तो व्रत (उपवास) का फल अधिक लाभदायक होगा। अंत में हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं ब्राह्मणों को यथाशक्ति अन्न, धन एवं भोजन का दान करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

सूर्य के लिए बेल की जड़ या बेंत की जड़ गुलाबी रंग के कपड़े में सिलकर रविवार या कृतिका, उत्तराफाल्गुनी अथवा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में सूर्योदय के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

आप रविवार के दिन सुबह में गेहूँ, साबुत मसूर, गुड़, तांबे की कोई वस्तु एवं लाल फूल का दान करें। आप अपने स्नान के जल में केसर या इलायची पीसकर या इसका इत्र डालें।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– खस, मधु, नागरमोथा, अमलतास, छोटी इलायची।
जड़ी– बेल मूल एवं कमल बेंत की जड़।

चन्द्रमा ग्रह का उपाय

कुंडली में चंद्र दोष होने से कलह, मानसिक विकार, माता-पिता की बीमारी, दुर्बलता, धन की कमी जैसी समस्याएं सामने आती हैं। चंद्रमा मन का कारक ग्रह होता है। कुंडली में चंद्र को मजबूत बनाने के लिए चंद्र ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ सोमाय नमः

This mantra should be chanted every Monday while sitting in front of a Shivalinga.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः

Om shraam shreem shraum sah chandramase namah.

बीज मंत्र 2

ॐ सों सोमाय नमः

Om Som Somaya Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ क्षीरपुत्राय विद्‌महे मृतात्वाय धीमहि ।
तन्नोः चंद्रः प्रचोदयात ।।

Om Ksheeraputraya Vidmahe Mritatvaya Dhimahi,
Tannam Chandrah Prachodayat.

व्रत और उपवास

चंद्रमा के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सोमवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले सोमवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 10 और अधिकतम 54 सोमवार को रखनी चाहिए। व्रत तोड़ने से पहले आपको सफेद कपड़े पहनना चाहिए एवं अपने ललाट पर सफेद चंदन का लेप लगाना चाहिए। चंद्रमा को सफेद फूल अर्पित करें और चंद्राम के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करें। अपने खाने में नमक, दही, चावल, घी एवं गुड़ का प्रयोग ना करें। अंतिम सोमवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीबों के बीच खाना वितरित करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

चंद्रमा के लिए खिरनी की जड़ को सफेद रंग के कपड़े में सिलकर सोमवार या रोहिणी, हस्त या श्रवण नक्षत्र में पूर्णिमा की रात में गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

चंद्रमा के लिए शुद्ध देशी घी से भरकर नया बर्तन, सफेद वस्त्र, गन्ना, दूध, चावल, चांदी, शंख, कपूर, छोटी इलायची, चीनी, चंदन, कांसे का बर्तन इत्यादि का दान करना चाहिए। नहाते समय नहाने के पानी में थोड़ा सा दूध या दही डालकर नहाने से चंद्रमा प्रसन्न होते हैं।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- लाल चंदन, कपूर, अगर, तगर, केसर, गोरोचन।
जड़ी - खिरनी की जड़।

मंगल ग्रह का उपाय

मंगल साहस और पराक्रम का कारक ग्रह है। कुंडली में मंगल के कमजोर होने पर उसके साहस और ऊर्जा में निरंतर कमी रहती है। मंगल को मजबूत करने के लिए मंगल ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1 **ॐ भौमाय नमः** This mantra is chanted for the planet Mars. It should be chanted on Tuesdays.	**तान्त्रिक मंत्र** **ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः** Om kraam kreem kraum sah bhaumaaya namah.
बीज मंत्र 2 **ॐ अंगारकाय नमः** Om Om Angarakaya Namah.	**गायत्री मंत्र** **ॐ अंगारकाय विद्महे वाणेशाय धीमहि ।** **तन्नोः भौम प्रचोदयात ।।** Om Angarakaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi, Tanno Bhaumah Prachodayat.

व्रत और उपवास

मंगल के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए मंगलवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले मंगलवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 मंगलवार रखनी चाहिए। अगर संभव हो तो आप पूरी जीन्दगी भी इस व्रत को रख सकते हैं। व्रत के दिन केवल गुड़ का हलवा खाना बेहतर होगा। आप अपनी शक्ति के अनुसार गरीबों के बीच भी हलवा वितरित कर सकते हैं। व्रत तोड़ने से पहले आपको लाल कपड़ा पहनना चाहिए और मंगल के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का अपने उपलब्ध समयानुसार 1, 5 या 7 माला का जप करना चाहिए। सांड़ को गुड़ खिलाना चाहिए। इस व्रत को रखने से आप ऋणमुक्त होंगे, संतान की प्राप्ति होगी एवं अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। अंतिम मंगलवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं लाल कपड़ा, तांबा, गुड़ एवं नारियल गरीबों के बीच दान करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

मंगल के लिए अनन्त मूल या नागफनी (गो जिव्हा संगमुसी नाग जिव्हा) की जड़ को लाल रंग के कपड़े में सिलकर मंगलवार या मृगशिरा, चित्रा या घनिष्ठा नक्षत्र में सूर्योदय के समय गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

लाल फूल, लाल चंदन, घी, गेहूँ, मसूर, या ताम्बे के बर्तन में सुपारी भरकर दान करने से मंगल प्रसन्न होते हैं। मंगल की प्रसन्नता के लिए स्नान करते समय जल में बेलपत्र या लाल चंदन डालकर स्नान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- सोंठ, चमेली का तेल, कुमकुम।
जड़ी- सौंफ की जड़, नाग जिव्हा, अनन्त मूल।

बुध ग्रह का उपाय

जीवन में तरक्की और प्रसिद्धि पाने के लिए कुंडली में बुध का मजबूत होना आवश्यक है। बौद्धिक नजरिए से सबसे प्रबल ग्रह होता है। कुंडली में बुध ग्रह को मजबूत करने के लिए बुध ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ बुधाय नमः

This mantra should be chanted every Wednesday. You can chant it in Lord Ganesha's temple.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

Om braam breem braum sah budhaaya namah.

बीज मंत्र 2

ॐ बुं बुधाय नमः

Om Bum Budhaya Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ सौम्यरुपाय विद्महे वाणेशाय धीमहि ।
तन्नोः बुधः प्रचोदयात ।।

Om Saumyarupaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi,
Tanno Budhah Prachodayat.

व्रत और उपवास

बुध के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए बुधवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले बुधवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 बुधवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको हरे रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बुध के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 17 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद मूंग दाल के आटे का हलवा या लड्डू या गुड़ से बनी कोई चीज गरीबों में बांटें और खुद भी खायें। व्रत के अंतिम बुधवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इस व्रत से आप शैक्षणिक क्षेत्र या व्यावसायिक मामलों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि अमावस्या के दिन व्रत रखने से बुध ग्रह अनुकूल हो जाता है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बुध के लिए विधारा की जड़ या भारंगी की जड़ (बिदायरे जड़ या वर धारा जड़) को हरे वस्त्र में सिलकर बुधवार या आश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र में सुबह के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

आपको स्नान के जल में साबुत चावल या सोने का कोई आभूषण डालकर स्नान करना चाहिए। बुध की प्रसन्नता के लिए चांदी या हाथी दांत से बनी कोई वस्तु, नीला कपड़ा, घी या मूंग दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- विधारा मूल, देवदार की जड़, सफेद सरसों।
जड़ी- भारंगी की जड़।

बृहस्पति ग्रह का उपाय

वैवाहिक जीवन से जुड़ी समस्याओं के लिए इस मंत्र का जप करना चाहिए। कुंडली में बृहस्पति के शुभ प्रभाव से धन लाभ, सुख–सुविधा, सौभाग्य, लंबी आयु आदि मिलता है। कुंडली में देवगुरु बृहस्पति की मजबूती के लिए जातकों को गुरु बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ बृहस्पतये नमः

This mantra should be chanted while sitting in front of a Shivalinga. It should be chanted every Thursday.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः

Om graam greem graum sah gurave namah.

बीज मंत्र 2

ॐ ब्रं बृहस्पतये नमः

Om Bram Brihaspataye Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ गुरुदेवाय विद्महे वाणेशाय धीमहि ।
तन्नोः गुरुः प्रचोदयात ।।

Om Gurudevaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi,
Tanno Guru Prachodayat.

व्रत और उपवास

बृहस्पति के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए गुरुवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले गुरुवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 3 साल तक प्रत्येक गुरुवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको पीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बृहस्पति के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करना चाहिए। बृहस्पति को पीले फूल अर्पित करना चाहिए। इस दिन केवल बेसन के लड्डू (गुड़ से बना) या केसरिया या पीला रंग लिए मीठा चावल गरीबों के बीच बांटना चाहिए एवं खुद भी खाना चाहिए। व्रत के अंतिम गुरुवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीब ब्राह्मणों के बीच भोजन (पीला रंग लिए खाना) बांटें। इस व्रत को करने से आप बुद्धिमान, विद्वान एवं धनवान होंगे। अगर कोई अविवाहित कन्या इस व्रत को करे तो जल्द शादी की संभावना होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बृहस्पति के लिए हल्दी की गांठ या केले की जड़ को पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या पुनर्वसु, विशाखा या पूर्व भाद्रपद नक्षत्र में शाम के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में बड़ी इलायची, पीली सरसों के दाने डालकर स्नान करने से बृहस्पति जनित दोषों का निवारण होता है। बृहस्पति की प्रसन्नता के लिए हल्दी, पीला कपड़ा, पीला अन्न, नमक, मेंहदी या नींबू का दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– हल्दी, सूखा गुलाब।
जड़ी– केले की जड़।

शुक्र ग्रह का उपाय

कुंडली में शुक्र ग्रह के मजबूत होने पर सभी तरह के ऐशो–आराम की सुविधा मिलती है और इसे मजबूत करने के लिए जातकों को शुक्र बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ शुक्राय नमः

This mantra should be chanted every Friday while sitting in front of a Shivalinga.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ द्रां द्रीं द्रौम सः शुक्राय नमः

Om draam dreem draum sah shukraaya namah.

बीज मंत्र 2

ॐ शुं शुक्राय नमः

Om Shum Shukraya Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ भृगुसुताय विद्‌महे दिव्यदेहाय धीमहि ।
तन्नोः शुक्रः प्रचोदयात ।।

Om Bhargusutaya Vidmahe Divyadehaya Dhimahi,
Tanno Shukrah Prachodayat.

व्रत और उपवास

शु क्र के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शुक्रवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शुक्रवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 31 शुक्रवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको सफेद रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शुक्र के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 21 माला का जप करना चाहिए। व्रत के दिन मीठा चावल या दूध से बना पदार्थ खुद खाना चाहिए एवं एक आंख वाले आदमी या सफेद गाय को खिलाना चाहिए। व्रत के अंतिम शुक्रवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इसके बाद चांदी, सफेद कपड़े, खीर आदि गरीबों के बीच दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से शुक्र अनुकूल होगा और आपको आर्थिक लाभ हो सकता है तथा आपका वैवाहिक जीवन खुशहाल होगा।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शुक्र ग्रह के लिए अनार, सरपोंखा या अरण्ड मूल की जड़ को सफेद कपड़े में सिलकर शुक्रवार या भरणी, पूर्व फाल्गुनी या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में छोटी इलायची, नींबू का रस अथवा इत्र मिलाकर स्नान करने से शुक्र प्रसन्न होते हैं। शुक्र के लिए बासमती चावल, घी, चांदी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, कपूर, धूप और अगरबत्ती, इत्र और रेशमी वस्त्र का यथाशक्ति दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सरपोखों, अनार की जड़, सूखे आंवले।
जड़ी– अरंडे की जड़।

शनि ग्रह का उपाय

ज्योतिष में शनि देव को कर्म फलदाता के नाम से जाना जाता है। यदि कुंडली में शनि ग्रह भारी होता है तो जिंदगी में परेशानियां बनी रहती हैं। इन परेशानियों को दूर करने के लिए शनि बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ शनैश्चराय नमः

Every Saturday, sit in front of Lord Shani and chant this mantra.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ प्रां प्रीं प्रोम सः शनै नमः

Om praam preem praum sah shanaishcharaaya namah.

बीज मंत्र 2

ॐ शं शनैश्चराय नमः

Om Sham Shanaischaraya Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ शिरोरुपाय विद्‌महे मृत्युरुपाय धीमहि ।
तन्नोः सौरिः प्रचोदयात ।।

Om Shirorupaya Vidmahe Mrityurupaya Dhimahi,
Tanno Saurih Prachodayat.

व्रत और उपवास

शनि के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 19 माला का जप करना चाहिए। उसके बाद साफ पानी, काले तिल का बीज, काला या नीला फूल, लौंग, गंगाजल, चीनी एवं दूध एक बर्तन में लेकर पूर्वाभिमुख होकर पीपल की जड़ में डालें। इस दिन केवल उड़द दाल एव तेल से बनी कोई भोज्य सामग्री खानी चाहिए एवं दान करनी चाहिए। व्रत के अंतिम दिन हवन के साथ पूर्णाहूति करें और तेल से बनी कोई चीज, काला कपड़ा, चमड़े का जूता आदि दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से आपको झगड़े एवं वाद-विवाद में सफलता प्राप्त होगी। फैक्ट्री मालिक एवं लोहे या स्टील का कारोबार करने वालों को काफी सफलता प्राप्त होगी।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शनि के लिए बिछुआ की जड़ नीले कपड़े में सिलकर शनिवार या पुष्य, अनुराधा या उत्तर भाद्रपद नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में धान का छिलका, जड़ सहित दूब अथवा काला तिल डालकर स्नान करने से शनि जनित दोषों का नाश होता है। शनि की प्रसन्नता के लिए बड़ी ईलायची, जायफल, लौंग, काला या नीला कपड़ा, मोटे अनाज, काली तिल, लोहे का सामान, गूगल और साबूत उड़द का अपनी शक्ति अनुसार दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- काला तिल, काला उड़द, बिछुआ की जड़।
जड़ी- धतुरे की जड़।

राहु ग्रह का उपाय

राहु एक छाया ग्रह है। तनाव को कम करने के लिए राहु मंत्र का जप करना चाहिए। कुंडली में यदि राहु अशुभ स्थिति में है, तो व्यक्ति को आसानी से सफलता नहीं मिलती है। राहु को मजबूत करने के लिए राहु बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ राहवे नमः

Every Saturday, chant the mantras for these planets. Chant the mantras while sitting in front of Lord Shani's idol.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः

Om bhraam bhreem bhraum sah rahave namah.

बीज मंत्र 2

ॐ रां राहुवे नमः

Om Ram Rahuve Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ शिरोरुपाय विद्‌महे अमृतेशाय धीमहि ।
तन्नोः राहुः प्रचोदयात ।।

Om Shirorupaya Vidmahe Amriteshaya Dhimahi,
Tanno Rahu Prachodayat.

व्रत और उपवास

राहु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु-केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

राहु के लिए मलय चंदन की जड़ की माला बुधवार या शनिवार या आर्द्रा, स्वाति या शतभिषा नक्षत्र में शाम 4 बजे के आस-पास अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा आदि डालकर स्नान करने से राहु जनित दोषों का निवारण होता है। राहु की प्रसन्नता के लिए ऊन का कपड़ा, जटादार पानी वाला नारियल, कम्बल एवं पेठा बांस की टोकरी में धातु का बना सर्प रखकर दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- चंदन की लकड़ी।
जड़ी- अष्टगन्ध मूल।

केतु ग्रह का उपाय

केतु एक छाया ग्रह ग्रह है, जिसका अपना कोई वास्तविक रूप नहीं है। यदि कुंडली में केतु की स्थिति कमजोर होती है तो यह जिंदगी को बदतर बना देता है। जीवन में कलह बना रहता है। ऐसे में कलह से बचने के लिए इस केतु बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ केतवे नमः

Every Saturday, chant the mantras for these planets. Chant the mantras while sitting in front of Lord Shani's idol.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ सां सीं सौं सः केतवे नमः

Om sraam sreem sraum sah ketave namah.

बीज मंत्र 2

ॐ के केतवे नमः

Om Ke Ketave Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ गदाहस्ताय विद्महे अमृतेशाय धीमहि ।
तन्नोः केतुः प्रचोदयात ।।

Om Gadahastaya Vidmahe Amriteshaya Dhimahi,
Tanno Ketu Prachodayat.

व्रत और उपवास

केतु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु-केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

केतु के लिए असगन्ध की जड़ को काले या पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या अश्विनी, मघा या मूल नक्षत्र में अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा एवं खुशबुदार इत्र आदि डालकर स्नान करें। केतु की प्रसन्नता के लिए रंग-बिरंगे कम्बल, कस्तूरी, बिस्तर, मुँह देखने का शीशा, साबुत उड़द, लाल अनार आदि को बांस की टोकरी में रखकर दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- सात अनाज (उड़द, मूंग, गेहूँ चना, जौ, चावल, कंगनी)।
जड़ी- वट वृक्ष की जड़।

Disclaimer

The calculations, future predictions, and remedies given in this Astrological Report are all based on the principles of either on Vedic Astrology, KP System, Jaimini or Lal Kitab, Numerology which are the result of consulting and engaging highly learned astrologers and astrology practitioners. This Report will prove to be highly useful for astrologers and practitioners of Astrology. We earnestly request the common users of this Report that they should not follow the Lal Kitab and or other prediction/remedies given in this Report without consulting a learned astrologer or an expert on this subject. Failing to do so might lead you to unexpected results which may or may not be favorable towards your well-being.

www.lalkitabnadi.com/MindSutra Software Technologies makes no warranty about the accuracy of any data contained herein, and the native is advised to not to take as conclusive any prediction generated for him. If you follow the advice given in this report you do so at your own risk, www.lalkitabnadi.com/ MindSutra Software Technologies or any of its associates are not responsible for the consequence of any event or action.

www.lalkitabnadi.com/MindSutra Software Technologies shall not stand liable for any damages or harm done.

All disputes are subject to New Delhi Jurisdiction only.

Wishing the very best – prosperity and happiness.